RSL

॥ ॐ श्री अलख जी ॥

असली स्वामी गोकुलदास जी महाराज कृत

श्री रामदेव जी महाराज कृत

चौबीस प्रमाण

श्री सरस्वती प्रकाशन अजमेर ☎ 2425505

॥ श्री अलखजी ॥

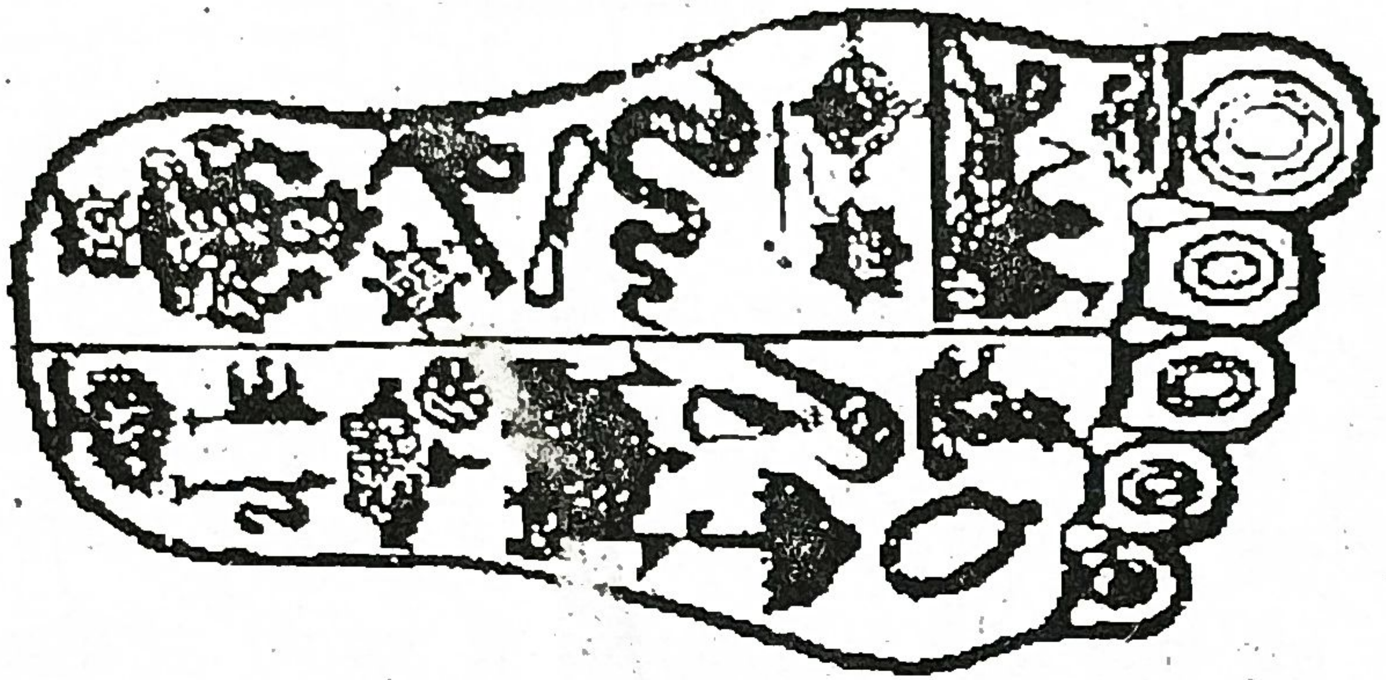

अथ श्री रा[illegible]वजी महाराज कृत

चौबीस प्रमाण

और

अन्य सन्तों के उप प्रमाण

प्रकाशक

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर ✆ 0145-2425505

संवत 2064

मूल्य: ₹ 100.00

Website : www.saraswatiprakashan.com

दो शब्द

मरू भूमि अवतार क्षत्रिय वंश कुल भूषण श्री रामेदव जी महाराज की पवित्र वाणी वाङ्मय वाणी महन्त श्री कुंजीलालजी व दयालदास जी महाराज द्वारा हस्त लिखित लगभग सौ वर्ष प्राचीन २४ प्रमाण नामक ग्रन्थ प्राप्त हुआ, किन्तु उक्त अप्रकाशित ग्रन्थ का प्रमाणिक होना संदिग्ध सा था। अतः सर्व श्री पं. रामलालजी, कालूदासजी, चमनरामजी, प्रतापजी, रूड़ारामजी, लालूरामजी, भगवानजी, आशाभारती, पद्मारामजी, रामसिंहजी, सूरजपुरीजी आदि अनेकों सन्त महात्माओं से मिलकर उनके कण्ठस्थ व हस्त लिखित २४ प्रमाणों को संग्रह कर उक्त ग्रन्थ लिखित २४ प्रमाणों से मिलान कर सम्पादित किया है । इस पवित्र प्रमाणित वाणियों को प्रकाशित करने की मेरी तीव्र इच्छा थी । इस पुनीत कार्य की पूर्ति में श्रीरामदेवजी महाराज की कृपा सदैव मेरे साथ ही है । इस पवित्र कार्य में श्री विद्यानाथ जी धर्मावत से मेरी भेंट हुई और इस सम्बन्ध में उनसे भी चर्चा की गई । संयोगवश यही २४ प्रमाण लगभग दौ सो वर्ष प्राचीन हस्त लिखित आपके घराने के ही परम सन्त श्री गुमाननाथजी, खाजूनाथजी द्वारा संग्रहित सुरक्षित आपके पास भी मिले इन प्रमाणों से भी उक्त ग्रन्थ के २४ प्रमाणों का मिलान करने पर पूर्ण निश्चय हो गया है यह २४ प्रमाण प्रमाणित है ।

श्री महाराज ने इन २४ प्रमाणों द्वारा भूले भटके मानव जीवों को उच्च कोटि की शिक्षा-दीक्षा व आत्म-ज्ञान में उपदेश दिये हैं और अपने योग बल से अतीत काल (हजारों वर्षो) के लिए अनेकों भविष्यवाणियां भी की है, जो सत्य सिद्ध हो रही है और होगी । इन प्रमाणों के नाम पर एक मत भी चल रहा है, जिसे प्रमाणी, विश्वासी, बीस नामी, महा धर्म आदि के नाम से पुकारते हैं । इन प्रमाणों के अप्रकाशित होने की वजह से कुछ स्वार्थी आचार्यों ने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए नाना प्रकार की कपोल, कल्पित, मन गढ़न्त विधियां जनता को पथ-भ्रष्ट करने के लिए बना रखी है । जिससे आम जनता इस पवित्र वाणियों की सत्यता के प्रति भ्रमित हो रही है । इनके प्रकाशन से अब उनका सब भ्रम दूर हो जायेगा और उनकी वास्तविक सत्यता को पहिचानने में उनकी मदद मिलेगी।

पाठकों की लगातार बढ़ती हुई मांग को देखते हुए शीघ्र ही इसका यह संशोधित संस्करण का प्रकाशन करना पड़ा क्योंकि पूर्व संस्करणों की हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ खत्म हो गई इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पाठकों ने इस अमूल्य संग्रह का आदर किया है और इसकी उपयोगिता को समझा है।

इस संशोधित संस्करण में भी पाठकों के लाभार्थ वही प्राचीन वाणियाँ है जो पूर्व में दी गई थी। इसमें भी दे दी गई है । इन संस्करण में पुस्तक कुछ बढ़ गई है किन्तु वाणियाँ बड़ी अमूल्य

और लाभदायक है और अब तक अप्रकाशित होने की वजह से अधिकतर श्रद्धालु भक्त प्रेमी इनसे अपरिचित थे ।

पाठकों से मेरा आग्रह पूर्वक अनुरोध है कि इस पवित्र वाणियों को गीता, रामायण आदि धर्म ग्रन्थों के सदृश्य आदर की दृष्टि से देखें ओर श्रद्धापूर्वक किसी विद्वान संत महात्माओं के मुख द्वारा पठन-पाठन व श्रवण, धूप, दीप व पाठ पूजा के साथ करें । यदि इन पर श्रद्धा और विश्वास करेंगे तो निश्चय ही उन पर श्री महाराज की अनुकम्पा होगी और इस आवागमन रूपी बन्धन से मुक्त होकर परमानन्द की प्राप्ति करेंगे ।

अन्त में मैं इन सब सन्त महात्माओं का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस पुनीत पवित्र ग्रंथ के सम्पादन, प्रकाशन आदि में सहायता प्रदान की है । जिससे कोटि-कोटि जनों का उपकार होगा और आप अक्षय यश के भागी होंगे । सेवादास ऋषि भूतपूर्व एम.एल.ए. अजमेर राज्य ने भी अपना अमूल्य समय देकर इस ग्रन्थ के प्रुफ संशोधन तथा प्रकाशन कराने में आर्थिक योग देकर प्रेस सम्बन्धी सारे कामों में योगदान दिया है । मैं उनको भी शुभ आशीर्वाद व धन्यवाद देता हूँ ।

स्वामी गोकुलदास जी

माघ पूर्णिमा सं. २०३६ — अलख स्थान डूमाड़ा (अजमेर)

तेरहवें संस्करण की भूमिका

संसार में जितने भी मत मतान्तर हुए हैं सब किसी एक सारभूत सिद्धान्त के प्रतिपादन करने वाले हुए है, उनके संस्थापकों ने सदैव मानव जाति को जीवन सम्बन्धी कुछ घनिष्ट आवश्यकताओं को सामने रखकर ही अपने मन्तव्यों का आम जनता में प्रचार किया है, कहने की आवश्यकता नहीं कि महापुरूषों ने सदैव मानव समाज की सर्वतोन्मुखी उन्नति करने एवं व्यक्तित्व आचार विचार से पवित्र संयमशील और सदाचारी रहते हुए निर्वाण पद प्राप्ति की और सदैव अग्रसर होने सम्बन्धी ऊंचे और महान् लक्ष्य को ही अपने सम्मुख रखा । हमारे देश में ऐसे भी अनेक सन्त महात्मा हुए हैं, जिन्होंने केवल स्व-आत्मोन्नति की ओर ही विशेष ध्यान दिया । मैं यहां पर उन महापुरुषों की चर्चा नहीं करना चाहता, मेरा लक्ष्य उन महान आत्मओं की कीर्ति की चर्चा करना है । जिन्होंने अपने कल्याण और मोक्ष प्राप्ति के साथ-साथ जनकल्याण को भी नहीं भुलाया । इसी का कारण है कि वर्षों और शताब्दियों के बीत जाने के पश्चात् भी उनके सद्उपदेशों और मनतव्यों से लिखी अशिक्षित और पिछड़े वर्ग के जीवों को आज भी सन्मार्ग में चलने का प्रकाश दिखलाई पड़ता है ।

ऐसे महापुरुषों में से आज के लगभग ६०० सौ वर्ष पूर्व क्षत्रिय तंवर वंश में श्री रामेदवजी महाराज मारवाड़ के ऊंड काशमीर (गाडाथल) से पोकरण ग्राम में सफल हुए। इन्होंने अपने उपदेशों से ग्रामीण और अशिक्षित जनता को बोधगम्य भाषा में अनेकों वाणियों की रचना कर साधारण व गृहस्थ जनता के लिये जमा व जागरण की परोपकारी और स्वकल्याण की विधि बतलाकर मानव कल्याण के हेतु मार्ग प्रदर्शन किया । समयानुकूल इस विधि और विधान पर चलने वालों में एक स्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात कच्छ और उत्तरी भारत में श्री रामदेवजी महाराज के मनतव्यों को मानने और उन पर चलने वालों की संख्या अनगिनत है ।

महाराज महादेवजी ने अपने जीवन काल में काव्यमयी भाषा में ही मानव कल्याण और जीवात्मा के सांसारिक बन्धनों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये अपने अनुयाइयों के लाभार्थ चौबीस प्रमाणों की रचना की। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि आज तक इस आवश्यक और महत्वपूर्ण सामग्री के प्रकाशन की ओर किसी का ध्यान नहीं गया ।

समय के फेर से इन प्रमाणों के सत्य सात्विक मर्म के प्रति लोगों में अनेक भ्रम पैदा हो गये, अनेकों आचारहीन और स्वार्थी गुरुओं ने जनता के सम्मुख इसके भावार्थ को गलत

रूप में रखना शुरू किया, जिससे इनके अवगुणों के प्रति लोगों में ग्लानी और अश्रद्धा पैदा हों। आम लोगों में यह धारणा उत्पन्न करने की कुचेष्टा पैदा की गई कि इन प्रमाणों को प्रकाशित करना और जन साधारण में प्रचलित करना महापाप है ।

इस प्रकार सर्व साधारण को अन्धेरे में रखकर अनेकों कुकर्मियों ने मन गढ़न्त विधियाँ बनाना और लोगों को सही मार्ग से गुमराह करने का जघन्य अपराध इस मत के प्रवर्तक श्री रामदेव जी महाराज के नाम पर करना आरम्भ कर दिया । सर्व साधारण की बात छोड़िये गुरु कहलवाने वाले भी इन प्रमाणों के सही आध्यामिक पहलू को समझने में असमर्थ रह कर पथ भ्रष्ट हो गये ।

इस प्रकार के अंधकार पूर्ण- वातावरण को देखकर श्री स्वामी गोकुलदासजी के अथक परिश्रम व अधवसाय के द्वारा इन प्रमाणों को संग्रहित करने का भागीरथ प्रयत्न किया । आपको इस कार्य में जितनी कठिनाईयां उठानी पड़ी वह अथकनीय है एक तो इन प्रमाणों का अप्रकाशित और इधर-उधर बिखरे हुए होना। दूसरा कौनसा प्रमाणित और कौनसा अप्रमाणित हैं, इसका पूर्ण रूप से विवेचन करना आदि अनेक बाधांए थी। ये पूरे प्रमाण लगभग दो सौ वर्ष प्राचीन हस्त लिखित स्वामी जी के पास संग्रहित थे।

फिर भी इनकी जाँच करने के लिए आपने अनेकों सन्त महात्माओं से सम्पर्क स्थापित किया । आपके परिश्रम, लगन और निष्ठा का ही परिणाम है कि आज सर्वसाधारण लोग इस दुर्लभ अप्राप्त वस्तु को पुस्तक के आकार में प्रकाशित देख रहे हैं । इनके द्वारा किया हुआ यह पवित्र प्रयास असंख्य प्राणियों को सन्मार्ग पर पुस्तक के आकार में पकाशित देख रहे हैं, इनके द्वारा किया हुआ यह पवित्र प्रयास असंख्य प्राणियों को सन्मार्ग पर लाने और महाराज भागीरथ द्वारा गंगावतरण के तुल्य व प्राणियों के लिए मुक्ति दायक सिद्ध होगा । अब तक सर्व साधारण में इस सम्बन्ध में फैली समस्त भ्रान्तियों का इस प्रकाशन से निराकरण हो जायेगा । आम लोगों को इसके सत्य और सात्विक रूप को परखने का सुअवसर मिलेगा, इसके अतिरिक्त अनेकों ढोंगी जो अपनी निहित स्वार्थों के लिये जनता को अब तक गुमराह करते रहे हैं, उनका पर्दाफाश हो जाएगा और जनता यह समझने में समर्थ होगी कि कौन व्यक्ति या गुरु सच्चा है और पाखण्डी है । इन प्रमाणों में श्री रामदेवजी महाराज ने सच्चे और झूठे गुरुओं के लक्षण, वैराग्य की महिमा प्रमाणी साधुओं के लक्षण, प्रकृति के कार्य स्वरूप और शरीर की अनित्यता पिण्ड और ब्रह्माण्ड व इन्द्रियों का विवेचन किया, माया की निःस्सारता आदि भिन्न-

भिन्न विषयों को साधारण बोल-चाल की भाषा में जिस ढंग से प्रतिपादित किया है उससे उन लोगों को जिन्हें साधारण भाषा का ज्ञान है और अध्यात्मिकवाद पर लिखे हुए ऊंचे दर्जे के साहित्य को पठन व मनन करने में असमर्थ है विशेष लाभ होगा । मेरे विचार में सुविज्ञ पाठक इस संग्रहकर्त्ता के प्रयास को सफल बनायेगें ।

मोहनलाल किलान्या
भू.पू. उप प्रधान-दलित वर्ग संघ
अजमेर राज्य (अजमेर)

विषय - सूची

प्रमाण	पृ.सं.	प्रमाण	पृ.सं.
0. अथ श्री गुरू चालीसा	15	10. भक्ति प्रमाण	38
1. गुरू प्रमाण	19	11. साखी प्रमाण	40
2. इण्ड प्रमाण	21	12. लक्ष प्रमाण	42
3. मूलारम्भ प्रमाण	24	13. नेम (निज) प्रमाण	43
4. माया प्रमाण	26	14. पद्म प्रमाण	46
5. निकलंग प्रमाण	28	15. निज धर्म (दान) प्रमाण	49
6. निजार प्रमाण	30	16. अखे (अलख) प्रमाण	51
7. बुद्ध प्रमाण	32	17. अभय प्रमाण	55
8. ज्ञान प्रमाण	34	18. आगम प्रमाण (१)	57
9. भाव प्रमाण	36	18. आगम प्रमाण (२)	60

प्रमाण	पृ.सं.	प्रमाण	पृ.सं.
19. मेहन्दी प्रमाण	63	6. भविष्य प्रमाण	100
20. मेघड़ी प्रमाण	72	7. पखवाड़ो प्रमाण	101
21. अन्न प्रमाण	77	8. सोला कला प्रमाण	104
22. योग प्रमाण	82	9. ऋषि प्रमाण	107
23. महिमा प्रमाण	84	10. मेघड़ी प्रमाण	109
24. चौबीस अवतार प्रमाण	86	11. मेघड़ी प्रमाण	110
उप प्रमाण		12. मेघड़ी प्रमाण	111
1. बाला पद्धति प्रमाण	88	13. मेघड़ी प्रमाण	112
2. बीज महिमा प्रमाण	90	14. मेघड़ी प्रमाण	113
3. बीज प्रमाण	92	15. योग प्रमाण	115
4. निज प्रमाण	95	16. कमल प्रमाण	117
5. शिक्षा प्रमाण	98	17. लछ प्रमाण	131

प्रमाण	पृ.सं.	प्रमाण	पृ.सं.
18. शिक्षा प्रमाण	133	26. नेतलदे को सपनो	162
19. लछ प्रमाण	134	27. शिक्षा प्रमाण	164
20. जेसल मालदेवजी का मेला	136	28. अलख प्रमाण	165
21. भक्ति प्रमाण	138	29. दश अवतार	167
22. महाधर्म प्रमाण	139	30. अवतार महिमा	168
23. अगम प्रमाण	140	आरती	170
24. निरंजन प्रमाण	141	आरती	171
25. मूलारम्भ प्रमाण	151	आरती	171
26. मूलारम्भ प्रमाण	159	आरती	173
26. आदि महाधर्म	161	प्रार्थना	174

ॐ

"अथ श्री गुरु चालीसा"

॥ दोहा ॥

ओम नमो गुरुदेवजी, सबका सरजन हार । व्यापक अन्तर बाहर में, पारब्रह्म करतार ॥१॥
देवन का परम देव हो, सुमिरूं बारम्बार । तुम्हारी कृपा के विना, होवे नहिं भाव पार ॥२॥
रिषी मुनि सब सन्त जन, जपे तुम्हारा जाप । आत्मज्ञान घट पायकर, निर्भय हो गये आप ॥३॥
सतगुरु चालीसा कान सुने, रिद्धि सिद्ध सुखपाय। मन वांछित कारज सरे, जन्म सफल हो जाय ॥४॥
सतंगुरु चालीसा जो पढ़े, उर गुरु ध्यान लगाय । जन्म मरण भव दुख मिटे, काल कबहु नहिं खाय ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ओम नमो गुरुदेव दयाला, भक्त जनों के हो प्रतिपाला ॥ १ ॥
पंर उपकार धरों अवतारा, डूबत जग में हंस उबारा ॥ २ ॥
तेरा दर्शन करे बड़भागी, जिनकी लगन हरी से लागी ॥ ३ ॥
नाम जहाज तेरा सुखदाई, धारे जीव पार हो जाई ॥ ४ ॥

पारब्रह्म गुरु है अविनाशी, शुद्ध स्वरुप सदा सुखराशी ॥ ५ ॥
गुरु समान दाता कोई नाहीं, राजा बादशाह आश कराही ॥ ६ ॥
गुरु सन्मुख जब जीव हो जावे, कोटि कल्प के पाप नशावे ॥ ७ ॥
जिस पर कृपा गुरु की होई, उसके कमी रहे नहिं कोई ॥ ८ ॥
जिसके घर गुरुदेव पधारे, उसी भगत का जन्म सुधारे ॥ ९ ॥
राम लखन गुरु सेवा जानी, विश्व विजयी हुए महाज्ञानी ॥ १० ॥
कृष्ण गुरु की आज्ञा धारी, स्वयं पारब्रह्म अवतारी ॥ ११ ॥
सतगुरु कृपा है अतिभारी, नारद की चौरासी टारी ॥ १२ ॥
कठिन तपस्या करि सुखदेवा, गुरु बिना नाहिं पाया भेवा ॥ १३ ॥
गुरु मिले जब जनक विदेही, आतम ज्ञान महा सुख लेही ॥ १४ ॥
व्यास वशिष्ट गुरु कृपा जानी, सकल शास्त्र के भये अति ज्ञानी ॥ १५ ॥
अनन्त रिषी मुनि अवतारा, सतगुरु चरण कमल चित धारा ॥ १६ ॥
सतगुरु नाम जो हृदय धारे, कोटि कल्प के पाप निवारे ॥ १७ ॥
सतगुरु सेवा उर में लावे, पीढ़ी चौदह स्वर्ग को जावे ॥ १८ ॥

पूरब जन्म की तपस्या जागे, गुरु सेवा में तब मन लागे ॥ १९ ॥

गुरु सेवा में सब सुख होई, जनम जनम का दरिद्र खोई ॥ २० ॥
गुरु सेवा कोई बिरला जाने, मूरख नहि यह बात पिछाने ॥ २१ ॥
सतगुरु नाम जपो दिन राती, जन्म-जन्म का है यह साथी ॥ २२ ॥
अन्न धन लक्ष्मी जो सुख चावे, गुरु सेवा में ध्यान लगावे ॥ २३ ॥
गुरु कृपा सब विघ्न विनाशी, मिट जावे तिमिर आत्म प्रकाशी ॥ २४ ॥
पूरब पुण्य उदय जब होवे, मन अपना सतगुरु में पोवें ॥ २५ ॥
गुरु सेवा में विघ्न पड़ावें, उसका कुल तो नरक में जावे ॥ २६ ॥
गुरु सेवा से बेमुख रहता, जम की मार सदा वह सहता ॥ २७ ॥
गुरु बेमुख भोगे दुःख भारी, ईश्वर से नहिं लागे कारी ॥ २८ ॥
गुरु बेमुख को नरक नहिं ठौड़, बातां करो चाहे लाख करोड़ ॥ २९ ॥
गुरु का द्रोही सबसे बुरा, उसका काम होवे नहिं पूरा ॥ ३० ॥
जो सतगुरु का लेवे नामा, वो ही पावे अचल आरामा ॥ ३१ ॥
सब ही सत नाम से तरिया, नुगरा नाम बिना ही मरिया ॥ ३२ ॥

जम का दूत नेड़ा नहिं आवे, जहां सतगुरु का नाम सुनावे ॥ ३३ ॥
जो सतगुरु की सेवा करते, डाकण भूत प्रेत सब डरते ॥ ३४ ॥
जन्तर मन्तर जादू टोना, गुरु भक्त के कुछ नहिं होना ॥ ३५ ॥
गुरु भक्त की महिमा भारी, क्या समझे नुगरा नर-नारी ॥ ३६ ॥
गुरु भक्त को सतगुरु भेटा, धर्मराय का लेखा मेटा ॥ ३७ ॥
गुरु भक्त सतलोक सिधावे, धर्मरायजी सामा आवे ॥ ३८ ॥
गुरु भक्त सबका सिरताज, उसका सब देवां पर राज ॥ ३९ ॥
गुरु चालीसा पढ़े चित लाई, जन्म-मरण बहुरि नहिं आई ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

यह सतगुरु चालीसा, पढ़े सुने चित लाय । माधवानंद आनंद करे, दुख दरिद्र मिट जाय ॥
चालीसा गुरुदेव का, पढ़े सुने चित लाय । उनके घर आणंद घणा, दुख दरिद्र मिट जाय ॥
स्वामी गोकुलदासजी, सत्चित आनन्द रूप । सेवादास गुरुदेव की, महिमा अगम अनूप ॥
श्री पूज्य साहिब दीप हरी, सतगुरु परम दयाल । माधवानंद आनंद भया, पल में किया निहाल ॥
निपल नगर में नारायण, गंगा नदी के तीर, दर्शन से दुःख दूर भया, निर्मल हुआ शरीर ॥

श्री रामदेव जी महाराज के चौबीस प्रमाण

(१) गुरु प्रमाण

टेर - सुणल्यो गुरुगम ज्ञान निहारी ।
गुरु कृपा गोविन्द गति जाणी आया भरोसा भारी ॥
ज्ञानी गुरु जी भव दुःख मेटे, अज्ञानी उलझावे ।
मंगता हो चेला ने मांगे, भूल्या औरां ने भुलावे ॥ १ ॥
गुरु बिन ज्ञान ध्यान नहीं पावे, शांसो कोण मिटावे ।
शरणे आयां री शंका मेटे, निर्भय मुक्ति पावे ॥ २ ॥
कई गुरु ऐसा आरम रच कर, ढोंग पाखण्ड चलावे ।
पहरे भेष भरम का भाँडा, यूं कांई मुक्ति पावे ॥ ३ ॥

भेदी जके भरमे नहीं कबहूं, पाखण्ड नहि वणावे ।
वेद शास्त्र परचे किया, बहुरि न पाछो आवे ॥ ४ ॥
आपो नहिं खोजे, औरां ने प्रमोदे भूल्यां ने भरमावे ।
जल डूबे जल की गहे धारा, दूणो पींदे जावे ॥ ५ ॥
पाखण्डी ने गुरु नहिं कीजे, नहचे नाव डुबोवे ।
जैसे स्वांग वहरुप्या वाजे, यूं भूल्या भेष वणावे ॥ ६ ॥
समरथ गुरु शांसों सव मेटे, निजमन हो कोई ध्यावे ।
लट भंवरा ज्यूं गति हो जावे, होय भृङ्ग उड जावे ॥ ७ ॥
घर-घर में चेला वे मूँडे, स्वारथ लोभ लगावे ।
आशा लगी आशरो बांधे, धोखे भेट धरावे ॥ ८ ॥
गुरु गोविन्द एक कर जाणो, अवतारी भी ध्यावे ।
गुरां की महिमा कहाँ तक वरणु, वेद वाणी सब गावे ॥ ९ ॥
बालीनाथ गुरु सेन बताई, निजिया धर्म रे मांई ।
अजमल सुत "रामदेव" भाषे, वड़ा वीरमदे भाई ॥ १० ॥

(२) इण्ड प्रमाण

टेर – नाथ निकलंग देव कुण है ।
पूछो जूना जोगियां ने, पूछो पूरा पण्डिता ने ।
नेम मण्डल थरपियो जब, नेम रा गुरु कौण है ।
इण्ड का स्वरूप कुण है, पृथ्वी का रूप कुण है ।
अनाद की अस्तुति कुण है, वेद की तो जात कुण है ॥ १ ॥
रणुँकार का रुप कुण है, ऊंकारी अजर कुण है ।
अजर जोगी बजर कुण हैं, सन्त की तो सार कुण है ॥ २ ॥
धर्म की तो धार कुण है, तत्व की तो तार कुण है ।
ब्रह्म को विचार कुण है, आकाश का मूल कुण है ॥ ३ ॥
पाँच तत्वाँ का नाम कुण है, पवन तत्व की तोल कुण है ।
रवि को हिंडौल कुण है, अवाची को वाच कुण है ॥ ४ ॥
परवान को सूत कुण है, बांझड़ी को पूत कुण है ।
घट मांही भूत कुण है, जोग में अवधूत कुण है ॥ ५ ॥

चले ध्रुव जी राह कुण है, बीजली को ब्याव कुण है ।
समुद्र को घेराव कुण है, शिखर चढ़े बिन पांव कुण है ॥ ६ ॥
नाथ जी री नाथ कुण है, जुगाँ पहली जात कुण है ।
सन्यासी री साख कुण है, परम पद प्रकाश कुण है ॥ ७ ॥
पाँच बेड़ी पाट कुण है, पाट का प्रमाण कुण है ।
प्रमाण को प्रेमी कुण है, हरी डाली हेम कुण है ॥ ८ ॥
साध की तो सार कुण है, ईश का उपकार कुण है ।
साखियाँरी साख कुण है, प्रेम वायक पडदे मिलसी जके मिलणी कुण है ॥ ९ ॥
अमर क्रिया कलश कुण है, कलश री करतूत कुण है ।
जोगियाँ की जुगत कुण है, जुगत माँयली मुकत कुण है ॥ १० ॥
साध ज्याँरी सुरत कुण है, सुरत मांयली नुरत कुण है ।
देवता री दृष्टि कुण हैं, दृष्टि में दीदार कुण है ॥ ११ ॥
पड़दे भेला पाँच कुण है, पाँचा को आचार कुण हैं ।
धर्म को विचार कुण हैं, सैनी संत भक्ति लावे जके सैनी कोण है ॥ १२ ॥

व्रत जग रा नेम कुण है, पड़दे बायक प्रेम कुण हैं ।
तेतीसों की साख कुण हैं, आगे साध जके करतब करिया, जके शाखा कुण है ॥ १३ ॥
पड़दे रा दश दोष कुण है, प्याला मांही पोष कुण हैं ।
अजर प्याला मोख कुण है साला बेड़ी शेष मंत्र, जके मंत्र कुण है ॥ १४ ॥
क्रोड़ तीर्थ काया में कुण है, असंग जुगां री माया कुण है ।
अटल बिरछ री छाया कुण है, अजर प्याला पाया कुण है ॥ १५ ॥
सती रो सत धर्म कुण है, अजप्पा रो मरहम कुण है ।
ऊँकारी आद कुण है, आद रो अनादि कुण है ॥ १६ ॥
साध ज्यांरी रीत कुण है, प्रजा री प्रतीत कुण है ।
अखे धर्म ले पाट मिलसी, जके मिलणी कोण है ॥ १७ ॥
पाट रा प्रमाण पूरा, बांचसी कोई सन्त शूरा ।
अजमाल नंदन समझ छाणी बोलिया अवतार बाणी, गुरुगम से निर्वाण है ॥ १८ ॥

(३) मूलारम्भ प्रमाण

टेर - साधो भाई मूल भेद विचारा ।
एको ब्रह्म दोय होय दरस्या, रचिया सकल पसारा ।
चैतन्य समान विशेष होय ईश्वर, किया जीव विस्तारा ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, पांच तत्व गुण सारा ॥ १ ॥
रजोगुण - ब्रह्मा, सतोगुण विष्णु, तमोगुण शिव ऊंकारा ।
दशों इन्द्रियां रजोगुण क्रिया, सतोगुण देव अपारा ॥ २ ॥
तमोगुण विषय पांच तत्व कर, चौदह लोक पसारा ।
सब में ईश्वर एक कर जाणो, चली शक्ति की धारा ॥ ३ ॥
पहली पंथ चलायो शिव शक्ति, महा धर्म विस्तारा ।
ईश्वर नेम दियो शिव शक्ति, आप निकलंगी न्यारा ॥ ४ ॥
चारों बाणी चारों खाणीं, थिर चर जीव रचाया ।
अन्तर्यामी आप अखण्डी, रचा उसी को छाया ॥ ५ ॥

जमी असमान सूर अरु चन्दा, समुन्दर सात रचाया ।
नो सौ नन्दी नवलख तारा, अनन्त प्रकाश कराया ॥ ६ ॥
अरबद नरवर कल्पे बहुता, सहस्त्र युग रचाया ।
चार चौकड़ी पहर रचाया, युग आरम्भ यूँ गाया ॥ ७ ॥
सतयुग, त्रेता, द्वापर थरप्या, चौथा कलियुग राया ।
ऋषि मुनि साख या बांधी, ईश्वर अखे रहाया ॥ ८ ॥
सात द्वीप नो खण्ड बणाया, अवतार चौबीस विचारी ।
जल पर धरण चहूं दिश राची, ग्रह गौचर विस्तारी ॥ ९ ॥
अनन्त रचना कही न जावे, रचना न्यारी न्यारी ।
कहे ''रामदेव'' रचना देखो, किया अनन्त नर नारी ॥ १० ॥

(४) माया प्रमाण

टेर - देखो माया पद ने हेटो ।
ईश्वर अचल विराट कहीजे, भली विधि साखी भेटो ।
जमी असमान आदि ले देखो, रवि राशि उडगण माया ।
नो सौ नन्दी नवासी नाला, सात समुन्दर थाया ॥ १ ॥
चौदह तबक इक्कीसों ब्रह्मण्ड, आवत जावत माया ।
बोल वचन सबही में आवे, जग व्यवहारी माया ॥ २ ॥
बोले, मौन, खावे, पीवे, माया, सब ही क्षर में आया ।
बैठा, गमन, सोवे अरु जागे, यह सब देखी माया ॥ ३ ॥
पुत्र, परिवार, कुटुम अरु नारी, मोह का बन्ध लगाया ।
स्वार्थ ध्यावे अर्थ भुलावे, कर्म वासना पाया ॥ ४ ॥
पांचों तत्व और गुण तीनों, तत्व चौबिसों थाया ।
इनका प्रेरक सही कर सोधो, त्यागो त्रिगुण माया ॥ ५ ॥

उत्पत्ति खपत धरे अवतारा, कर्म को फाँस बंधाया ।
चेतन होकर चौकस करल्यो, तजो पदारथ माया ॥ ६ ॥
राज-तेज थिर नांही रहवे, सब परला में आया ।
यां से वैराग राखे को साधु, परसे सारी माया ॥ ७ ॥
जगत करम कर देखो कोई, दूणा सङ्कट पाया ।
अन्त समय रोय रीतो जावे, ऐसी दुष्टन माया ॥ ८ ॥
पर प्रतीत होय नर बरते, अज्ञानी गम नहिं जाणे ।
ऐसी जाण बंधे नहिं बन्धन, कोइयक गति पिछाणे ॥ ९ ॥
घर तंवरा रे जामो पायो, कुल में कंवर कहाया ।
अजमल सुत "रामदेव" भाषे, मेटी त्रिगुण माया ॥ १० ॥

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अंजमेर © 0145-2425505

(५) निकलंग प्रमाण

टेर - भायां नाम महाधर्म झेलो ।
निकलंग नाथ निजारी दरशे, नाम महाधर्म भेला ।
ऐसी रीति सही कर समझे, पाछे करे गुरु चेला ॥ १ ॥
सृष्टि रचाय दाता धर्म हलायो, नेम्या तीनों देवा ।
बंधिया धर्म हुआ विस्तारा, फल सचियारा लेवा ॥ २ ॥
तन मन दीन्हा अभय पद लीन्हा, जद मुक्ति पद पाया ।
दशों दोण कलश का काटिया, निकलंग मांही समाया ॥ ३ ॥
असंग जुगां से धर्म चल आयो, पड़दे दोष दश टाल्या ।
सूरज चन्द शशि घर मांहि, इस विधि विरद समाल्या ॥ ४ ॥
पाँच शब्द की कर अस्तुति, पाछे भक्ति लाया ।
पाँच शब्द बिना सांशे पड़सी, यों चौरासी पाया ॥ ५ ॥

ग्यारा भक्ति गम कर देखो, मूल एक में आया ।
महाधर्म की मंजिल जा पूग्या, अन्त एक में माया ॥ ६ ॥
नो सिमरण निश्चय कर देखो, दुरमत दूर हटाया ।
झेल्या धर्म कर्म सब कटिया, एक निरंजन पाया ॥ ७ ॥
जोग कर्म जुगती कर देखो, सभी एक में समाया ।
दुविधा मेट सेन जब लीन्ही, गुरु गम धर्म हलाया ॥ ८ ॥
अनन्त साख आगे संग उधरिया, बोल चौरासी टाल्या ।
ऐसी जुगत जाणे कोई साधू, सोही महाधर्म पाल्या ॥ ९ ॥
अड़सठ तीरथ ऊपर देखो, तन मन धन जब देवे ।
बिना दियां कहो कैसे सिद्ध है, और कूड़ी बातां कहवे ॥ १० ॥
बाजे साध करणी बिना कूड़ा, वह मुक्ति नहीं पावे ।
कहे "रामदेव" सुणो भाई साधों, आप श्री मुख गावे ॥ ११ ॥

(६) निजार प्रमाण

टेर - निजार धर्म झेल कर देखो, साध अनेकों तरिया है ।
कुबद मेट कलू में कोई ध्यावे, पूर्ण पाप पर हरिया है ।
निजार ज्ञान ने गम कर देखो, पी प्याला मतवाला है ।
निजिया धर्म झेले कोई शूरा, सज गई संत की माला है ॥ १ ॥
थापे नहिं कलश कलू में मति हीणा, छाने-छाने पाप कमावे है ।
जीवत दुख अनेकों भोगे, मुवा नारकी पावे है ॥ २ ॥
बिना साखी तो सांशे पड़िया, दोय मिल दोष कमावे है ।
ऐसा साध बिना पत वाला, जुग जुग परले जावे है ॥ ३ ॥
आदू धर्म खोटा खेवणिया, अध बिच नाव डुबोवे है ।
कूंड़ा गुरु कैसे फल पावे, सिमरथ क्यो नहिं ध्यावे है ॥ ४ ॥
पूरा गुरु मिलिया सो पार उतरिया, महा अमीरस झरिया है ।
साँची बाणी सेन बैण मिलिया, यो परमारथ करिया है ॥ ५ ॥

जोड़ा बेड़ी जुगत कर जोड़े, वह साधु जन पूरा है ।
पायल पक्की भाव सूं मिलिया, अलगा रिया सो अधूरा है ॥ ६ ॥
कच्ची पायल कामी कर लेवे, व्यभिचारी बुद्ध हीणा है ।
पहली जाय पंथ में पूगा, अपना बन्धन कीना है ॥ ७ ॥
क्रिया जाणे कमाई जद पावे तेतीस में मिलिया है ।
शिव में शक्ति, शक्ति में शिव है, मिल अमृत प्याला कीया है ॥ ८ ॥
पूरा सन्त कोई पार उतरसी, घणा कलू में करम कमावे है ।
असली राह रीत नहिं जाणे, उल्टा भ्रम उलझावे है ॥ ९ ॥
देखा देखी धर्म कोई खेवे, मन से पीर कहावे है ।
कहे ''रामदेव'' सुणो भाई साधो, यूं मुक्ति नहीं पावे है ॥ १० ॥

(७) बुद्ध प्रमाण

टेक - हिलमिल हालो भाइड़ां रीत आगली, कठिण पंथ खांडा री धार है।
दुर्बल साध कलू रा कूड़ा, कलजुग बीत्यां करे सम्हार ॥
चूको मती राह गांव गम हालो, लेखो लेवेलो म्हारो सृजनहार।
निकलंग री पेड़यां रे मांही, गहरी पड़ेली गुरजां री मार ॥ १ ॥
चार जुगां री एक चौकड़ी अंसग चौकड़ी रा पुल प्रकाश ।
पुल बिना पाट किसी विधि थरप्यो, निकलंग करतो सदा निकास ॥ २ ॥
पहलो भजन सुन्न में होता, ऋषि ऋषियाणी प्रकट थाय ।
तीनों देवां ने बावो नेम झिलाया, प्रकट कला देवां रे मांय ॥ ३ ॥
मूँहगा वचन कलू में करिया सुंहगा, स्वार्थ साटे नर करे व्योपार।
कागा पलट हंस कद होसी, ज्यांसे निज अमृत पियो नहिं जाय ॥ ४ ॥
कपटी रोल करे कलियुग में, भूल्या फिरे घणा बैछाल ।
ताता तेल कड़ावां आवटे, कपट्यां ने रालसी कड़ावां रे मायं ॥ ५ ॥

पोखर प्यालो पाट बिलाड़े, पड़दा तणसी नो दस लाख ।
कूड़ा सांचा रो धणी करे पारख्या, दल में बणसी मातंग कोटवाल ॥ ६ ॥
झेलो नेव हो जावो दल भेला, बिना नेम नहिं उतरो पार ।
भक्ति साथ विषय कीन्हीं जग में, वां सन्ता ने देवेला टाल ॥ ७ ॥
बीसेली प्होर घड़ी दिन लारलो, साद सती की करेलो सम्हार।
चालत चाल सबलां की पकड़े जती सती ने लेवेलो उबार ॥ ८ ॥
पांचों दौड़ करे रस भोगे, मतवाली मगन हुयो महाराज ।
शिव शक्ति ने बाबो नेम झिलाया, सत्त धर्म की बांधी पाज ॥ ९ ॥
शीश उतार धरो गुरु आगे, बचना तणो राखो विश्वास ।
अजमल सुत "रामदेव" बोले बुद्ध प्रमाण लखे अवतार ॥ १० ॥

(८) ज्ञान प्रमाण

टेर - सुणज्यो ज्ञान गोष्ठी री बातां ।
आरम और अनेकों करल्यो, उल्टी आवे घातां ।

बन्धा पाले बन्धन में आवे, निर्बधनं होय रहणा ।
सिम्रथ हुयां दोष नहिं कोई, निर्भय रोपे थाणा ॥ १ ॥
नीति अनीति सही कर जाणे, माया ब्रह्म पिछाणे ।
दृष्टि मुष्टि दोनों से न्यारा, इस विधि अनभे आणे ॥ २ ॥
जीव ईश्वर ब्रह्म और माया, याने समझो भाया ।
ऐसी जाण जुगत से जाणे, कौन ब्रह्म कौन माया ॥ ३ ॥
मन में मन्त्र तन्त्र की सिद्धी, ज्ञान हुया कुछ नांई ।
दोनों भक्ति दल में रहवे, और करतब कहो कांई ॥ ४ ॥
निर्बन्धन सोहि निरंजन पावे, निर्बन्ध होय रहणा ।
एको जाण दुतिया कर दूरी, अनभो अन्दर लेणा ॥ ५ ॥

मेटो भेद अभेद कर लेणा, दुरमति दूर हटाया ।
रीति और अनेक कर देखो, सब है त्रिगुण माया ॥ ६ ॥
नाम रूप सब माया कहिये, धर्म पाप कहो कांई ।
ऐसी भूल पड़ी निज मांही, सिमरथ गुरु समझाई ॥ ७ ॥
करतब मिट्यां कमाई पावे, तीर्थ व्रत नहीं जाई ।
भजियां भ्रम कर्म सब कटिया, भेट्या सब घट सांई ॥ ८ ॥
ज्ञानी सिमरथ गुरु कर लीजे, अधूरां ने गम नांई ।
बंधिया आप औरां ने बाँधे, पूरां गुरां मुक्ति पाई ॥ ९ ॥
भक्ति धर्म ज्ञान कर्म उपासना, तीजा पद तक मांई ।
अभय ज्ञान चौथे पद पावे, ''रामदेव'' ! सिद्ध गाई ॥ १० ॥

(९) भाव प्रमाण

टेर - देखो भाव भक्ति री बातां ।
भाव विचारो भूल निवारो, मेटो दिल री भ्रातां ॥
अपना भाव जाणो तुम जैसा, दुतिया दूर हटाओ ।
अपना भाव सफल कर मानो, सत गुरु वचन निभाओ ॥ १ ॥
धारण धर्म सही कर लीज्यो, कपटी दूर रखावो ।
भक्ति भाव भूल मत जाज्यो, जब थे मुक्ति पावो ॥ २ ॥
अपना भाव से चैतन्य दरशे, एड़ा भाव लगावो ।
अपने भाव से माया दरशे, जैसा मन फल पावो ॥ ३ ॥
अपने भाव से बन्धन दरशे, गुण गोविन्द रा गावो ।
अपने भाव से मुक्ति दरशे, साँची सुरत लगावो ॥ ४ ॥
अपने भाव से गुरु और चेला, सेवा नमण करावो ।
मन में सदा शान्ति राखो, जंद मुक्ति पर पावो ॥ ५ ॥

अपने भाव से मुक्ति कहीजे, पंच क्लेश मिटावो ।
तन मन धन सतगुराँ रे अर्पण, सत संगत में जावो ॥ ६ ॥
अपना भाव से सब ने प्यारों, ममता मार रहावो ।
गुरु की सेवा निज मन कीजे, तीनों ताप मिटावो ॥ ७ ॥
अपना भाव से जड़ चैतन में, चैतन चौकस करावो ।
तीर्थ व्रत भाव से भेटो, जन्म मरण नहिं आवो ॥ ८ ॥
अपना भाव से ज्ञान ध्यान सब, हृदय प्रीत लगाओ ।
अपनो धर्म अखे कर जाणो, निज मन हो गुण गावो ॥ ९ ॥
समस्त चतुर्दश साल सात में, श्री मुख आप जगायो ।
भणे "रामदेव" चैत सुद पांचे, अजमल घर मैं आयो ॥ १० ॥

(१०) भक्ति प्रमाण

टेर - साधो कोई संगत शरणे आवे ।
तन मन वचन तीनों से सेवा, गुण गोविन्द रा गावे ॥
भक्ति करे ज्यांरा भव दुख भागे, जो कोई करतब जाणे ।
नवधा भक्ति निरंजन दरशे, पाँचों परचे आणे ॥ १ ॥
भक्ति करे भेद नहिं जाणे, वो कांई पद ने पावे ।
देखा देखी सब कोई साजे सवारथ सूत लगावे ॥ २ ॥
भक्ति करे ब्रह्मा मांही मिलिया, वो चोथे पद पावे ।
गुरुगम ज्ञान ध्यान जप करणी, अपनी अनुभव पावे ॥ ३ ॥
खण पाँचों परचे कर लेणा, छठो निरंजन ध्यावे ।
काल क्रोध एकानी कर देवे, भक्ति पूरण पद पावे ॥ ४ ॥
पर सेवा सन्तों की भक्ति, जिन पग शीश निवावे ।
कर सिमरण माला कोई फेरे, निवण डंडोत करावे ॥ ५ ॥

दर्शन जावे देव उपासी, दीपक धूप चढ़ावे ।
ऐसी रीति जाणे कोई साधू, भव जल से तिर जावे ॥ ६ ॥
आ कोई रीति गुरां जी से दावे, गुरु बिना वृथा जावे ।
मन रे मते कहो कौन सिद्ध है, मूरख मूल ठगावे ॥ ७ ॥
भगवत गति भक्ति से पावे, यम नियम निभावे ।
धुर लग जुपे धणी यूँ ध्यावे, जग शंका नहिं ल्यावे ॥ ८ ॥
समझे सैन बैन में पूरा, जग बन्धन नहिं आवे ।
सन्त समागम निज जाय कीजे, सर्व बन्धन कट जावे ॥ ९ ॥
काश्मीर में द्वारका से आया, अजमल भक्ति भारी ।
भणत "रामदेव" शरणे रीज्यो, भक्ति कठिन करारी ॥ १० ॥

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर ✆ 0145-2425505

(११) साखी प्रमाण

टेर - विषय रचाय साखी रहे शामिल व्यष्टि भरमज भूल्या ।
समष्टि समझ सांसों नांहि व्यापे, सो प्रपंच है ऊला ।

भक्ति कियाँ भरम सब भागे, जो कोई भेदज पावे ।
एकादश भक्ति है भाई कर्तव्य कौन बतावे ॥ १ ॥
भूल्या जके भेद नहिं पावे, मन से साध कहाले ।
इन्द्रिया पांचों लख आपो हिंन खोजे, भूल्या भेद नहीं पावे ॥ २ ॥
पांचों खण परचे पढ़ लीजे, छठो चैतन पावे ।
सप्त धातु रो बण्यो पींजरो, सातों सुरत मिलावे ॥ ३ ॥
पूछो गुरु ने गोविन्द गति पावे, साखी शामिल रहावे ।
ऐसी जाण गुरां से जाणो, जब चौथे पद पावे ॥ ४ ॥
निःबन्धन सोही निरंजन पावे, निर्बन्धन होय रहणा ।
एको जाण दुतिया कर दूरी, अनभो अन्दर लेणा ॥ ५ ॥

गावे सुलट आप रहे उल्टा, सांची सैन नहीं पावे ।
देखा देखी करे गत दूरा, भूल्या जग भरमावे ॥ ६ ॥
बिना ज्ञान तो गम नहिं पावे, झुक झुक शीश निवावे ।
ज्ञान गुणी नहिं करे गुमानी, मन का पता चलावे ॥ ७ ॥
गीता शास्त्र गम कर देखो, वेद वेदान्त जपावे ।
पूँजी बिना नहिं होत पसारा, वृथा जन्म गमावे ॥ ८ ॥
समझे श्वास उश्वासा मांही, अजपा जाप जपावे ।
सोहं तार हजूरी हाजिर, सभी एक में पावे ॥ ९ ॥
ऐसी रीति कोई बिरला जाणे, पूर्व अंकुर उगावे ।
कहे "रामदेव" जल्दी चेतो, प्राणी निकल जावे ॥ १० ॥

(१२) लक्ष प्रमाण

टेर - हिलमिल रहो रीत से चालो, कठिन पंथ खांडा री धार ।
सांचा जके जुगां जुग सांचा कर सुमिरन भव उतरो पार ॥
पहले भजन सुन्न में होता, अलख निरंजन पूजा थाय ।
तीनों देव नेमिया शक्ति, प्रकट हुयो देवां रे मायं ॥ १ ॥
ता पीछे ऋषि संत सेविया, सिद्ध चौरासी लिया बधाय ।
ता पीछे जगत में जाण्या, ऋषि ऋषियाणी मिल प्रकट थाय ॥ २ ॥
महंगा शब्द किया ले सुंहगा, स्वारथ सौदे करे व्यवहार ।
बुगला चाल हंसा की चाले, अमृत मथे बणावे आक ॥ ३ ॥
झीणी चाल चले गत देखे, मन लालच रूलयारां मांय ।
मांयला रो मैल करे नहीं दूरी, बिना रहणी क्यों बाजे साध ॥ ४ ॥
पांचों दौड़ करे रस भोगे, मगन हुयो मनवो महाराज ।
भूल्यो जाय गाँव गम चूको, लेखो लेवेला सृजनहार ॥ ५ ॥

पाँचों विषय ने वश कर राखे, सुरता बंधी शब्द रे तार ।
तज अभिमान मेल दे दूरा, वो बाजे परमाणी सार ॥ ६ ॥
अरपे प्राण होवे नहि पाछा, पर मालाँ का तजे स्वाद ।
समझ विचार भजन गति हाले, वो बाजे विश्वासी साध ॥ ७ ॥
साधू जके चाले नहिं चूके, गुरु वचन रहे काचे तार ।
अजमल सुत ''रामदेव'' भाषे लक्ष प्रमाण लखे अवतार ॥ ८ ॥

(१३) नेम प्रमाण (निज प्रमाण)

टेर - दुर्बल साध कलू में पूरा
ज्याँरी कलियुग जाताँ करुं सम्हाल
भुल्या जके किसी विधि मिलसी, आद गुराँ का न ले उपकार।
सीखे शब्द वस्तु नहिं खोजे, वाँ नुगराँ ने देसी टार ॥ १ ॥
सीखे शब्द भेद नहिं पावे, तन मन दरशे दोय निजार ।
आतम बिना असल नहिं माने, ऊंधे मार्ग बहे संसार ॥ २ ॥

सूझे साच अन्दर रहे उल्टा, बायक धर्म बिना व्योपार ।
भेटे धर्म राम नहिं माने, विषयां तणा करे व्यवहार ॥ ३ ॥
पुल बिना पाट किसी विधि पूरे, रहणी कलश धर्म उपकार।
पांच शब्द बिना पड़दो बांधे, माने नहिं असल अवतार ॥ ४ ॥
साधु जके शब्द गति हाले, समझ गुरु की पूजे सार ।
करणी बिना रहे नर काचो, नेम बिना दीसे निर्धार ॥ ५ ॥
बैठो साध भेष कर पूजो, कांई पूजे आंधी संसार ।
बुगला काग करे कचरोलो, बाचा हीण बहवे बेकार ॥ ६ ॥
बैठो जोगी अलख कर जाणे, सूझे नहीं शब्द री सार ।
निकलंग री पेड़यां दुख पासी, गुप्त पड़े गुरजां री मार ॥ ७ ॥
गुप्त रीयो तीनों जुग पहली, प्रगट भयो कलू अवतार ।
ओगण करे असल नहिं माने, साध कलू सूँ देस्यूं टाल ॥ ८ ॥
एक बूँद को अमर पियालो, दूजो है क़लियुग रो काल ।
गेलम गेल, भरम कर भूल्या, वां नुंगरां ने देस्यू टाल ॥ ९ ॥

दोय पुरुषां सूं सुर नर सोधा, दोय पुरूषां सू जती अवतार।
अजर अमर म्हारो दुर्बल पूजो, अमर दान झेले सचियार ॥ १० ॥
पड़दे धर्म अलख री पूजा, शिव नगरी पूगा सचियार ।
पेड़ी पांच धर्म तुले आगे, अलख धर्म है अपरम्पार ॥ ११ ॥
आद अलख रा अथंग पियाला, नेम धर्म री बांधी पाल ।
चौदह लोक असंख जुग ऊपर, निकलंग प्यालो अखे निजार ॥ १२ ॥
''रामा कंवर'' लखे निज नामा, शिवजी शब्द करे उपकार।
बारह क्रोड़ कदे नहिं बिसरूं, असंख जुगां रा म्हारी लार ॥ १३ ॥

(१४) पद्म प्रमाण

टेर – अवतार रामा लखो नामा, साध सार साम्हले ।
अमर बीज जो झेल्यो, जके भूल्या क्यों फिरे ॥
आ विध जाणसी कोई संत सांचा, ब्रह्म बाचा देवता दर्शन करे।
एक तुल असमान तोले, जके, जम के क्यों डरे ॥ १ ॥
कठिन क्रिया क्रूर मारग, अजर जरणा कुण जरे ।
मरजीवा सन्त जन्म पायो, चोट घण की वे सहे ॥ २ ॥
हाथ सजीवण लियां डोले, जके जम से क्यों डरे ।
अमर बीजक हाथ लाज्ञा, जके भूल्या क्यों फिरे ॥ ३ ॥
धरण कुआ असमान बाड़ी, पावन पुल पाणी चढ़ें ।
अमर फल असमान पाक्यो, जके विध बिरला करे ॥ ४ ॥
एरण वात धरण जाई, सुमेरु बांका पुत्र है ।
इन्द्र को आशीष दीन्हीं भाण शशि हरि शाख है ॥ ५ ॥

पांव पियालां शीश आमर, जके जोगी जुग घड़े ।
पवन पाणी पुत्र ब्याका, तीन गुण सेवा करे ॥ ६ ॥
पाँच तत्व प्रकाश उपर, त्रिवेणी पूजा चढ़े ।
अखे जोगी अमर आसण, अलख रे मेले मिले ॥ ७ ॥
जके बोवे जके उगे, जके गुरु प्रमाण है ।
ज्यांरी बांधी सृष्टि हाले, जके सधर दिवाण है ॥ ८ ॥
बिना पाणी पुरुष खेले, धरण पहली धार है ।
लोक चौदह जके घड़िया जके ही अवतार है ॥ ९ ॥
ओहं सोहं ब्रह्म साजे, रणुंकार आधार है ।
नाम तो अलेख वाँका, आद जात अनाद है ॥ १० ॥
सहस्त्र इन्द्र भाण शशि अरु, ब्रह्मा विष्णु सार है ।
सुर नर देव पाट पूज्या, वहाँ आपो आप है ॥ ११ ॥
वेद विरला ज्ञान गीता, ध्यान तपस्या सार है ।
तेज तुरिया बणज करिया, नित धर्म अधिकार है ॥ १२ ॥

सहस्त्र करणी क्रोड़ क्रिया, एक अक्षर पार है ।
पार में प्रमाण खोजो, सोही सन्त री सार है ॥ १३ ॥
पांच देवा पाट बैठा, निज धर्म अधिकार है ।
छटो निकलंग कर ठिकाणो, बिना सत्य बेकार है ॥ १४ ॥
सुर लोक ऊपर सैंस जोजन, परमला के पार है ।
उरस उपर पुरुष खेले, चौदह लोक विस्तार है ॥ १५ ॥
शोध शब्दां तोल बोधां, जपे अजपा जाप है ।
प्रमाणी नर पूगसी ज्यारां, असंग जुगां से राज है ॥ १६ ॥
महा पद्म प्रमाण माया, सहस्त्र पेड़ी ऊपरे ।
बोलिया रजमाल नन्दन, कोई साध ने सोझी पड़े ॥ १७ ॥

(१७) निज धर्म प्रमाण (दान प्रमाण)

टेर - तोई राणी निज धर्म अधिकार है ।
भाइड़ां से भाव राखो गुराँ से प्रतीत, बोल्या रामदेव अवतार है ॥
पृथ्वी क्रोड़ पचास दीजे, दान कनक सुमेरु दीजे ।
चिन्तामणि कल्पवृक्ष आपो, पारष कामधे समापो ॥ १ ॥
लाख हीरा लाख माणक, पन्ना क्रोड़ पचास है ।
गया जाकर दान आपो, तो भी निजिया धर्म अधिकार है ॥ २ ॥
लाख घोड़ा लाख हस्ती, गाडर अरब पचास है ।
लाख फल जग दान आपो, तो भी निजिया धर्म अधिकार है ॥ ३ ॥
क्रोड़ कुंजर कनक भरिया गऊ क्रोड़ पचास है ।
क्रोड़ मण गऊ घास आपो, तो भी निजिया धर्म अधिकार है ॥ ४ ॥
सांड गऊ गज दान दासी, रुपया लाख अठार है ।
जाय पुष्कर दान आपो, तो भी निजिया धर्म अधिकार है ॥ ५ ॥

क्रोड़ कन्या धर्म परणावो, देवो दान अपार है ।
पृथ्वी की परिक्रमा देवो, तो भी निज धर्म अधिकार है ॥ ६ ॥
करे यज्ञ अश्वमेघ कोटि, गँग तट निज धर्म सार है ।
विप्र क्रोड़ अट्ठासी जिमावे, तो भी निज धर्म अधिकार है ॥ ७ ॥
हेम कुल में वास दे, नित दान गऊ लख चार है ।
रत्न चौदह दान दे, तो भी निज धर्म अधिकार है ॥ ८ ॥
नित जाय गंगा सांपड़े, धाम बद्री केदार है ।
कुम्भ बारह साँपड़े, तो भी निज धर्म अधिकार है ॥ ९ ॥
चार जुग तक सेवा साझे देवे शीश जे सार है ।
एक मन विश्वास राखे, तो भी निज धर्म अधिकार है ॥ १० ॥
रण क्षेत्र में प्राण होमे, काशी क्रोत ले धार हैं ।
गँगा सागर छाप ले, तो भी निज धर्म अधिकार है ॥ ११ ॥
सहस्त्र धारा इन्द्र बरसे, अखण्ड अमृत धार हैं ।
टण धर्म ने बासक झेल्या, धरण सह्यो भार हैं ॥ १२ ॥

जुगाँ पहले अमर जोगी, परमला के पार है ।
आसरा अलील राणी, पूज्या धर्म निजार है ॥ १३ ॥
शंकर के घर अटल भक्ति, इन्द्र नेम आधार है ।
ब्रह्मा विष्णु लक्ष्मी सावित्री, ध्यायां धर्म निजार है ॥ १४ ॥
भेद विरला ज्ञान गीता, ध्यान तपस्या सार है ।
तेज तुरिया बणज करिया वे सादु सचियार है ॥ १५ ॥
हर्ष मन सत धर्म बणजो, सोई तेतीसों की लार है ।
सो नर पूगसी प्रमाण बोल्या, 'रामदेव' कंवार है ॥ १६ ॥

(१६) अखे प्रमाण (अलख) प्रमाण

टेर - अब तुम साम्हलो जुग सन्त सारा, अलख रा प्रमाण न्यारा ।
चार जुग से राय पूछो, अलख गुरू रा पांव पूजो,
पूजियां पारख पड़े, राजा रामदे सांची भणे ।

छोड़ क्रिया करम लागा, आखिर मारग आखड़ें ।
जाणत ही अजाणा, होग्या, निरद आँधा वे फिरे ॥ १ ॥

करतूत काचा, बिकल बाचा कैसी करणी ऊबरे ।
पार का प्रमाण पूछे, आप घट ताला जुड़े ॥ २ ॥
साध सती भरे काँकण, भ्राँत मिल चोरी करे ।
चार जुमाँ रा नेम लीधा, कालर भक्ति क्यों करे ॥ ३ ॥
मन मैला जाय पहलाँ, लोभ रा लूँदा भरे ।
अलख सेनी नहीं माने, स्वाद रा सौदा करे ॥ ४ ॥
एक भक्ति अलख लेखे, दूसरी कमसल करे ।
काग बगुला कर्म माँड्या, अलख बाड़ी ऊजड़े ॥ ५ ॥
हंस बगुला बैठ भेला, चुगण तो मोती चुगे ।
सेंस धारा गुप्त गङ्गा, जके प्रकट क्यों करे ॥ ६ ॥
एक बुध है सन्त की, दूसरी दोजख परे ।
तीसरी हरि नाम प्याले, करतूत क्रिया जद सरे ॥ ७ ॥
नेम बिना जो सन्त बाजे, ज्यांरा धृक जमार है ।
प्याले मिलकर भ्राँत राखे, ज्याँरी भक्ति ख्वार है ॥ ८ ॥

षट नाथ, दर्शन पाट बैठा, और तपस्या सार है ।
निजिया धर्म झेलिया, जद पाया अधिकार है ॥ ९ ॥
चोसठ कला में खेल्या तो भी, बिना सत्त बेकार है ।
साधु जके भजन खोजो, ध्यावे धर्म निजार है ॥ १० ॥
साध शब्दाँ तोतलां, जपे हरि रा जाप है ।
प्रमाणी सन्त पूगसी ज्याँरा, असंख्य जुगां से राज है ॥ ११ ॥
सात सायर नो नदियां, एक प्याले आ भरे ।
सेंस कलियां चम्पो फूल्यो, अलख रे पूजा चढ़े ॥ १२ ॥
आप देवे आप लेवे, ख्याल जूवा को करे ।
भेष भय ने त्याग दीन्हों, साध सन्त विलास करे ॥ १३ ॥
साध रा समाव भारी, मरण पहली वे मरे ।
जीवता बैकुण्ठ न्हाले, सरगां पहली सत करे ॥ १४ ॥
रतन मंहगा मोल रा, अलख रे लेखे करे ।
पांचां सातां नौवाँ बारां, तेतीसां में वे मिले ॥ १५ ॥

कलू नेजा नूर बरते, मेघां महिमा बटे ।
भरिया, कांकण फेर भरसी, भेष में अमृत बटे ॥ १६ ॥
पाट पूजे पिछम रा, असमान री आश करे ।
साध तो अथाग थागे, अजीब मोती वे चुगे ॥ १७ ॥
दान दुर्बल वस्तु निर्मल, अजर जरणा कुण जरे ।
अजरा जर ईमान राखे, क्रोड़ कारज जद सरे ॥ १८ ॥
दोय पुरुषां देव पूज्या, दोय से अवतार है ।
एक पूजो साध निर्मल, अलख रो आधार है ॥ १९ ॥
साध रे घर अटल भक्ति, इन्द्र रे घर नित बटे ।
शक्ति शंकर, ब्रह्मा विष्णु निजार री आशा करे ॥ २० ॥
एक सत री बून्द जाणो दूसरी दोजख पड़े ।
तीसरी जल मेल प्याले, करतूत करणी सब हरे ॥ २१ ॥
प्रमाण गाया, अलग रा अवतार पूजा सत करे ।
बोलिया अजमाल नन्दन, साध ने सोझी पड़े ॥ २२ ॥

(१७) अभय प्रमाण

टेर – अभय हुआ सो भय नहिं राखे, मोह ममता सब मारी है ।
बहन भाई ज्यों निर्मल रहता, वह साधु अधिकारी है ।

निर्भय हुआ निजिया धर्म झेल्या, चौथा पथं रे मांई है ।
बंधन मोक्ष इसी विधि सीधा, फिर आई न जाई है ॥ १ ॥
कपटी सन्त कमाई रा काचा, पड़े चौरासी मांई है ।
उलझ्या आप औरां ने उलझावे, स्वार्थ अपने तांई है ॥ २ ॥
गुरु बचन से धर्म चलावे, बचन पिछाणे नांही है ।
कण झेल्या निश्चय पद पाया, निर्भय नाव हलाई है ॥ ३ ॥
कूड़ा जके दोनों पर नारी, लालच कर्म कमाई है ।
धोखा देवे धन हर लेवे, डूबत थाह न पाई है ॥ ४ ॥
आदू रीत असल सोही करता, दुरमत दूर हटाई है ।
पूरे पाट पिछम गति रीति, जोत जगी पिंड मांई है ॥ ५ ॥

बाला पद्धति जुदी मत जाणो, है शामिल इण मांई है ।
त्रेता शामिल कलियुग दो कीन्हा, बिरला निभेला भाई है ॥ ६ ॥
ऋषि मुनी धर्म धड़े करिया, सत की करी कमाई है ।
भेला भणजे भरम रा भांडा, ले भागे नार पराई है ॥ ७ ॥
सन्तां री रीति सुणो अब साधु, अभ्यागत पुजवाई है ।
भूल्या जीव बड़ी कर माने, दावो मुक्ति रो नांई है ॥ ८ ॥
ध्यावो धर्म ब्रह्म कर भेला, आतम अनभे पाई है ।
अपना स्वरूप सही कर लीज्यो, फिर अवसर नहिं आई है ॥ ९ ॥
वेद वेदान्त सही कर समझो, धर्म भूल मत जाई है ।
अजमल सुत ''रामदेव'' भाषै, आतम मिल्यो देह मांई है ॥ १० ॥

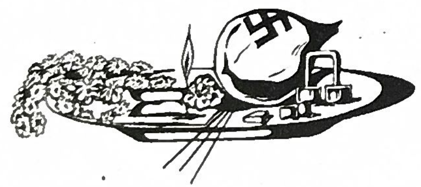

(१८) आगम प्रमाण

टेर – निगाह उण दिन री करो, ऐसा मंडेला मंडाण भाई ।
श्वेत घोड़े श्याम चढ़सी, आप लेसी मलाण ।
इण विधि आवे निकलंग राण भाई ।

नव लख तारा मलसिया, किया शशि अरु भाण ।
सात सायर मेरू पर्वत, नदी नवासी जाण ॥ १ ॥
धवल रे शिर धरा थामी, बासक उनके पाण ।
बिन थम्बे असमान थाम्यो, सो ही सधर दिवाण ॥ २ ॥
नो क्रोड़ तों कुँजर घुरे, धूके धर असमान ।
ऐसी धारां ईन्द्र बरसे, भरसी नीर निवाण ॥ ३ ॥
षट् रस अन्न उपाविया, जरा उद्बुद्ध खान ।
अठारा भार वनास्पती फूल फल निर्माण ॥ ४ ॥

आप कंवर नाग नाथ्यो, थाग्यो जल प्रमाण ।
गूजर रे घर आनन्द अति है, ऊखल बंधियो आण ॥ ५ ॥
सात सायर मेण माथियो, कियो मेरु मथाण ।
बासक राजा नेतो पाल्यो, रतन चौदह माण ॥ ६ ॥
जती लछमण बाण सांध्यो, मारियो मेघ बाण ।
विभीषण को लंक दीन्हो, मन्दोदरी शिर हाण ॥ ७ ॥
बीज थावर पूज पड़वा, तीज लेसी मलाण ।
पांचू पाँडू कर्ण आसी धूजसी पाषाण ॥ ८ ॥
पांचा सूं प्रहलाद आसी, सातां हरिचन्द राण ।
नोवाँ सूं जेठल आवसी, बारां बल प्रमाण ॥ ९ ॥
नौ पदम बिवाण आसी, हस्ती क्रोड़ पचास ।
तेतीस क्रोड़ रथ आवसी, पैदल का न प्रमाण ॥ १० ॥
आलम रा दल आवसी, छिपे गिरदां भाण ।
सती शूरा लड़े सन्मुख, कालिंगा शिर हाण ॥ ११ ॥

हनुमान बायक झेलसी फिरसी नव खण्ड आण ।
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम सेंस दल कुरसाण ॥ १२ ॥
सिद्ध चौरासी क्रोड़ अट्ठासी, आवसी नव नाथ ।
अगम निगम जङ्गम जोगी, श्याम रे दल साथ ॥ १३ ॥
कोप सायब रा दुष्ट दलसी, त्यारसी भक्त जाण ।
काड़ तिलक पाट बैठे, फिरे नव खण्ड आण ॥ १४ ॥
श्वेत घोड़ा श्वेत गुरजां, श्वेत ही पलाण ।
सायब रा दल सही होसी, कलू रा दल हाण ॥ १५ ॥
चित्तौड़ चंवरी दिल्ली डेरा, बाजसी दूर ताण ।
हिन्दू तुरक एक प्याले, बाबो भांगसी भ्रांत ॥ १६ ॥
इला अम्बर पलटसी, पलटे शशि अरु भाण ।
बोलिया सिद्ध "रामदेव", आगम रा अहनाण ॥ १७ ॥

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-
श्री सरस्वती प्रकाशन सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

(२) आगम प्रमाण

टेर - घरर घरर शंख बाजसी, तुरिया तंग पड़ेला ।
आगम भाषे राजा रामदे, जुग चौथा में व्हेला ॥

पिछम दिशा सूं दल ऊमड़े, आलम आप आवेला ।
धोला नेजा हरि रे फरहरे, गिरदां भाण छिपेला ॥ १ ॥
कड़ा कपटी लोभी लालची, गुरू जी ज्याँने पकड़ दलेला ।
सांचा सन्त पन्थ में पूगसी, गुरुजी जाय भेटेला ॥ २ ॥
गेहूँ चणा दल में आवसी, गिणवां नाज बिकेला ।
एक नर लारे नो नारी रहवसी, टक्का में नारी बिकेला ॥ ३ ॥
गंगा जमुना में बालू रेत उड़ेली, समुद्रां कुवा ऊंडा खूदेला ।
नीर दरयावां निठ जावसी, टांके नीर तुलेला ॥ ४ ॥
धर्म कर्म भुले जावसी, सब मनमानी करेला ।
पहले बड़ाबड़ ब्राह्मणा, पीछे बणिया ने पकड़ेला ॥ ५ ॥

पाछे जुगत बिहूंणा जोगिया, पाछे कामड़ ने जकड़ेला ।
गहरा-गहरा शंख बाजसी, सींगी नाद बाजेला ॥ ६ ॥
शीश कालिंग रो काटसी, बाबो दड़ियां रमेला ।
घणा बाजसी पवन बायरा, पर्वत पाषाण उड़ेला ॥ ७ ॥
रुई ज्यूं पर्वत उड़ेला, गिरी मेरू कांपेला ।
सवा लाख मण लोहा गालसी, जयाँरी घाणी बणेला ॥ ८ ॥
हस्ती ऐरावत जूपसी, बासक जोत खिंचेला ।
घोर घोर नर जागसी, ज्याँरा तेल पड़ेला ॥ ९ ॥
सेंस किरण सूरज ऊगसी, धरणी तांबा बरण होवेला ।
तेल कड़ावाँ ऊकले, ऐसा नीर तपेला ॥ १० ॥
पाँच लाख दिवला जूपसी, ज्याँ में तेल भरेला ।
दीपक मशालाँ रे चानणे, सायब तुररा टाँकेला ॥ ११ ॥
दिल्ली डेरा देवसी, चित्तौड़ चंवरी मंडेला ।
श्वेत घोड़ों हीसलो, सायब मेघड़ी परणेला ॥ १२ ॥

सन्त जन जान्या आवसी, आबू तोरण भांदेला ।
जाजम ढालेला पाँचू पांडवा, घणा ऊछब होवेला ॥ १३ ॥
गंगा जमना उलट चालसी, समुन्दर नीर भरेला ।
सायब परणे मेघड़ी, जिण दिन जुग पलटेला ॥ १४ ॥
कलजुग में सतजुग आवसी, पहरा पाप रा पलटेला ।
सांचा संत दल में आवसी ऋषिजन साख भरेला ॥ १५ ॥
बड़ले बागल सुदे मुख बैठे कोयल सफेद होवेला ।
नागर बेल फल लागसी, पीपल रे फूल आवेला ॥ १६ ॥
सहस्त्र निजारी सांचा श्यामजी, बैठ हाजरी लेवेला ।
आगम भाषी राजा 'रामदेव', जुग, चौथा में होवेला ॥ १७ ॥

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-

श्री सरस्वती प्रकाशन

सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर ✆ 0145-2425505

(१९) मंहदी प्रमाण

टेर - ओम् गुरु बोले आगम बाणी, जो वो विचारो खरी निशाणी।
शाह निजार सुमिरो मंहदी काय, कलियुग पहरे भूल मति जाय।
गवरी पुत्र सत सिमिरुं गनेश, शारद माता नाम धरेश ।
तत्व सार अखण्ड गुरु ध्याय, मैं लागू नारायण पाय ॥ १ ॥
अखण्ड अनघड़ घड़िया घड़ाय, ईसर गवरा आरम रचाय ।
इण्ड फोड़ नो खण्ड बणाय, सुमिरो स्वामी त्रिगुण राय ॥ २ ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल रचाया, चौदह लोक ले छत्र ठहराया ।
चन्द्र सूर दो दीप जोपाया, धरया अवतार पार नहीं पाया ॥ ३ ॥
नमो निरंजन जुग-जुग क्रिया, ईसर गवरां दो मुख धरिया ।
सतगुरु शरणें पाली क्रिया, नो अवतार आप ही धरिया ॥ ४ ॥
नोवां ने छेक अब दसवों आवे, पाप पुण्य सत्य असत्य दिखावे।
श्वेत हंस आलम श्वेत ही धेजा, श्वेत ही देवल फरुके नेजा ॥ ५ ॥

प्रकट होय सरोवर छाया, मानो वचन अब निकलंग आया ।
नर निकलंग इसी विधि आसी ॥ ६ ॥
कालिंगड़ो मार मत असत्य दिखासी, सन्मुख रहो गुरु मुख भाया, सत्य स्वामी अवतारी आया ।
वेद अर्थ गुण कोई बरणसी, ब्रह्मा के मुख वेद उचरसी ॥ ७ ॥
हनुमत हाक कटक दल चढ़सी, निशाण फरुके नाद धुन घुरसी।
सत्रा लाख दल में नेजा हलसी, पाटण अविचल थाणा करसी ॥ ८ ॥
यो अवतार प्रकट हो आसी, रैन दिवस सम भाण प्रकासी ।
कलंकी उठ बाबो निकलंग थासी, यों कर कायम प्रकट आसी ॥ ९ ॥
नारायण नर ऐसा बुलासी, जुगन जुगन रा सन्त कहासी ।
ध्रुव, प्रह्लाद, हरिचन्द आसी, अपनी-अपनी राह सुणासी ॥ १० ॥
कंवर कुन्ता का पांचू आसी, महा बलवन्ता सब कहलासी।
कर्ण, दुर्वासा, भद्रा, मेवासी, अहमद के शिर छत्र धरासी ॥ ११ ॥
कच्छ देश धर्म पुत्र प्रकटसी, नो कोटि जेठल दल चढ़सी।
छत्तीस लाख खड़ग कर धरसी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ १२ ॥

माता लोचन अनन्त परिवारा, पिता लभ राजा बचन अधिकारा।
काश्मीर राजा नगर पुकारा, निज घर जेठल ले अवतारा ॥ १३ ॥
नगर उजीणो सहदेव आसी, लाख छत्तीस चक्र धर चढ़सी।
जोगण युद्ध अगाड़ी होसी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ १४ ॥
नो क्रोड़ ले हनुमत चढ़सी, अड़तालीस लाख राव राणा आसी।
गुप्त प्रकट तुरंगां चलसी, सहदेव नगर उजीणी से चढ़सी ॥ १५ ॥
उच्च नगर से अर्जुन आसी, लाख छत्तीस धनुर्धर चढ़सी ।
नदी नाला समुद्र अड़सी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ १६ ॥
उदियापुर तरुवर छत्तर धरसी, प्रगटे पूत बाणावली आसी ।
अणपट नाम अर्जुन को धरसी, अर्जुन अवतार संग्राम चढ़सी ॥ १७ ॥
भीम महा भड़ अवतारा, नगरकोट अविचल सरदारा ।
लाख छत्तीस गदाधर चढ़सी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ १८ ॥
नगर कोट नहीं जाट कहासी, मुखबन्द हाक कवि गुण गासी।
जिनके घरां भड़ भींवजी आसी जत सत न्याव आप ही करासी ॥ १९ ॥

नगर बीजापुर नुकलो आसी, लाख छत्तीस कुतक धर चढ़सी ।
चौड़े आय फूतला पड़सी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ २० ॥
काना कुण्डल केश बिराजे, नकुल महाभड़ अवतार छाजे ।
धिन्न धिन्न कछिहार कहासी, अरबाँ फौज नकुल ले आसी ॥ २१ ॥
नगर दिल्ली में अविचल धामा, माता कुन्ती ले विश्रामा ।
छप्पन क्रोड़ चामुण्डा चढसी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ २२ ॥
हीर चीर माणकां भरसी, आठों पहर रतन झड़ मंडसी ।
चौथा ब्याह में कुन्तां पधारे, स्वर्णा कुन्ता अर्ज गुजारे ॥ २३ ॥
गिरी सुमेर द्रोपद अवतारा, उठे पंचोली करे निस्तारा ।
मारु मझ देश के मांही, सांची बात झूंठ कहूं नांही ॥ २४ ॥

दोहा

धरण पते ज्यूं कहलड़ी, जीव रहे किण ठौर ।
सतगुरु शरणे ऊबरे, साहब शिर के मोड़ ॥ २५ ॥
सत को करण्यो ताणसी, अपना जीव ऊबारे ।
नुगरा सुमरा जांचसी, सतगुरू वांने तारे ॥ २६ ॥
चक्र चलावे चाक ज्यूं, बिरला ही बचन्ता ।
कृष्ण करां डकेलसी, बचसी बलवन्ता ॥ २७ ॥
दूणा तीणा लेवसी बंध्या माल फिराणा ।
इतरा ऊजड़ होवसी, धणी अनड़ निवाणा ॥ २८ ॥
डागल ऊपर तोड़णो, जम ने खूणे घलाणा ।
रुकमण पूजे मन रली, गुरु का पांव पुजाणा ॥ २९ ॥
सतगुरु सतकर पूजल्यो, सत ही सत का लेणा ।
राज रिषां घर होवसी, ये है वचन निभाणा ॥ ३० ॥

गायन

इतरा दल पाण्डवां का चढ़सी, भीमसेन गदा हाथां गड़सी।
अनन्त बलन्ता कर्ण आवसी धन्य धन्य कुंतां हुकम चलासी ॥ ३१ ॥
लाखों बाणाबली भुज फहरासी, अनन्त क्रोड़ सन्यासी चढ़सी।
शेष नाग पियालां सलवलसी, बासक के शिर छत्र धरसी ॥ ३२ ॥
सतयुग, त्रेत, द्वापर, कलियुग आसी, राजा बली सत न्याय चुकासी।
बावन पद्म सन्त भेला होसी, तेतीसों मिल जमो जगासी ॥ ३३ ॥
लाख निव्वासी पैगम्बर चढ़सी, पीर अवलिया शामिल होसी।
हिन्दू तुरक सब एक कहासी, यों करके कायम राजा आसी ॥ ३४ ॥
जत्यां सत्यां ले बेग बुलासी, गुप्त मर्दा ने भी बैठा करसी।
मेघां के घर मांडो रचसी, चौथा ब्याह में आपही परणसी ॥ ३५ ॥
पद्मा दीप से द्वीप चढ़सी, जम्बू द्वीप में भेला होसी ।
अनंत हाथियां का दल यूं चढ़सी, बठे मर्द सब माला फेरसी ॥ ३६ ॥

चित्त चतुर गुण रणतूर बजसी, नोबत नाद घड़ावल घुरसी।
झालर शंख और धजा फहरसी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ ३७ ॥
पश्चिम से दल आलम का चढ़सी, बाजा बजे तुरी अड़वड़सी।
वां बाजाँ को पार नहीं पासी, थावर बार ने प्रकट होसी ॥ ३८ ॥
रुप धरे ज्यांको पार नहिं पासी, अब से ही कोई कीर्ति करसी।
एक प्रकट गुप्त दूजी धरसी, रण संग्राम मेलो मुल्तान मंडसी ॥ ३९ ॥
सत्य असत्य जांच बाँकी करसी, सवा गज लाद धरती पर चढ़सी।
कटक चढ़न्ता खेह यों उडसी, रोवण धोवण धुंधुकार होसी ॥ ४० ॥
आगला कीच पाछला पाणी, वाँका दल को अन्त नहिं जाणी।
सत्य की वस्तु झिलमिले झाले, माथे टोप ज्यांके मुकुट विशाले ॥ ४१ ॥
गंग सूरज ज्यूँ ताणेला बांण, मारे कालिंगा ने मचसी घमसाण।
वेद उपवेद ब्यासजी पढ़सी, जदां तो आण निकलंगजी री फिरसी ॥ ४२ ॥
ब्राह्मण, बणियां, क्षत्री, मुल्ला एकण थाल जीमसी भेल्ला।
परणे मेघड़ी बाँधे पल्ला, मोक मुक्त फल पासी भल्ला ॥ ४३ ॥

बार शनिश्चर सतगुरु थपसी, नोऊं ग्रह ले चंवरी मंडसी ।
मेंहदी कायम धणी रो नाम धरासी, जदां मेघां के घर परणवा आसी ॥ ४४ ॥
चन्दू डालां नाम धरासी, मेघां के घर मेघड़ी कहासी ।
समस, फुंवारा मातवजी आसी, खीवण धारू पांचा संग ल्यासी ॥ ४५ ॥
देव मद्दा रामदास आसी, हरचन्द हजूरदास संग में ल्यासी ।
मांडे मेल रिष न्याय चुकासी, मेघां के घर मांढो रचसी ॥ ४६ ॥
काला केश पचमता होसी, सूरज कर्ण छेद कर आसी ।
चाँद सूरज दोय दीप जुपासी, इन्द्र पवन जल वायु लासी ॥ ४७ ॥
पांच सात नो बारह आसी, नारद व्यास हरजी गुण गासी ।
रूपां माल, तोलां-जेठल आसी, राणो कुम्भो सुलखादे जासी ॥ ४८ ॥
बिहारीदास, बगसीराम आसी, नगजी ब्राह्मण पन्थ चलासी।
भाटी उगमसी, लिखमाजी आसी, घर रिषियां के माँढो रचासी ॥ ४९ ॥
सिद्ध साधक सब हिलमिल आसी, हरि अवतार मनुष्य को धरसी।
काया नगर जेता निरंजनः पाटण क्रोड़ बसे भव भंजन ॥ ५० ॥

धजबंधी निरंजन विस्तारा, दशों राग रागणी सारा ।
हीरां का प्रकाश अपारा, कूड़ा कपट्यां ने मारे करारा ॥ ५१ ॥
चार लाख मोड़ बंध्या चाले, चार लाख शिर छत्र समाले।
नेनी नगरी काया नगरसी, उठे गंगधर जोधा ध्यान धरसी ॥ ५२ ॥
कूड़ा कामड़ा भोपा भरड़ा, ब्राह्मण बनियां ने ही जासी तरड़ा।
बारह पंथ और दर्शन छहूं, लेखा होसी साँची कहूं ॥ ५३ ॥
देवां का भोग पुजारी खावे, वंश समेत जड़ा मूल से जावे।
दीन्हो दान घरां में राखे, जिनकी वस्तु किस विधि पाके ॥ ५४ ॥
नो लख तारा आमर हाले, ग्यारहवीं कला आलम राजा चाले।
कायम गुरु कहग्या आगम बाणी, जोवो विचारों खरी निशाणी ॥ ५५ ॥
कलियुग पहरे भूल मत जावो, शाह निजार मेंहदी कायम ध्यावो।
मेंहदी परवाण 'रामदेव' भाषा, पंडित देवायत पूँजलदें साखा ॥ ५६ ॥

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-
श्री सरस्वती प्रकाशन सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर

(२०) मेघड़ी प्रमाण

टेर - उठो मेघड़ी बर ने ओलखो,
ओलखो बरने भ्रान्त मत लाय, बांधो मोड़ समावो सेवा ।
आसन छोड़ चला अविनाशी, सती जाचण ने जग में जाय ।
महर हुई सारे जग फिरिया, सती नजर कोई नहीं आय ॥ १ ॥
बड़ा बड़ा धरती पर शूरा, धरती अम्बर किस विध थाय ।
बिन थम्बे आसमान रचाया, सत का थम्भा दिया लगाय ॥ २ ॥
दशों दिशा मैं फिरकर आया, कन्या कंवरी मिली न दान ।
आय मेघां घर अलख जगायो, मेघां घर पायो सम्मान ॥ ३ ॥
रिषियां अर्ज करे अन्नदाता, थारे अंग पीड़ा अधिकाय ।
वैध बुलाकर पीड़ा कटावुँ, पीछे लेवो दान मन चाय ॥ ४ ॥
पीड़ा नहीं वैद्य रे सारे, दर्द लग्यो है अनन्त अपार ।
पड़सी प्राण तोरण रे सहारे, थारी कन्या परणावो बार ॥ ५ ॥

दीखत का थे दीखो ब्राह्मण, गला में बंधियां जनेऊ तार ।
चारों वर्ण एक कर पूजो, म्हारी कन्या परणावुं बार ॥ ६ ॥
कहवे ब्राह्मण सुनो रिष राजा, मोसे भ्रांति करी नहिं जाय ।
कन्या दान सती नर देवो, तीन लोक में फिरियो आय ॥ ७ ॥
सबसे नीचो प्राण हमारो, मेघ सरीसों कुल मिल जाय ।
माणक दान मतो कर वक्षो, प्राण मुक्त म्हारो हो जाय ॥ ८ ॥
तन में त्याग उपाई तुलसी, पान फूल प्रकट करवाय ।
संकल्प लियो तुलसी रा पाना, चांद सूरज री साख भराय ॥ ९ ॥
कहे रिष राजा सुनो घर रानी, मन में सोच विचारीजे ।
कन्या दान ब्राह्मण ने दीन्हों, किस विध ब्याव रचाइजे ॥ १० ॥
कबनी कहे पिता सुन माता, बात कांई बतलाइजे ।
थारा म्हारा कारज सारे, मन में सोच मत लाइजे ॥ ११ ॥
माता कहे सुनो सुता कबनी, सोच समझ विचारीजे ।
दोनों पाट बराबर मिलिया, थां सूं टले तो टालीजे ॥ १२ ॥

74 कहे बाई कबनी सुन माता कंवरी, धन्य म्हारो भाग्य सराइजे।
सन्त सुधारण जन्म धारियो, आद और अंत सुधारीजे ॥ १३ ॥
ले सिंहासन नर नारी हालिया, बिरकट बात समाइजे ।
राद लोही रा रेला चाले, देखत करुणा आइजे ॥ १४ ॥
छटक्या बरण धरण जाय टिकिया, बलवन्त बोझ समाइजे ।
एक पांव सती चूड़ी घर, चरण पियांला थाइजे ॥ १५ ॥
दूजो पांव जूंजाले जेतगढ़, मझगढ़ स्थान बताइजे ।
रणूँकार रिषियो रटने से, अलख नाम धराइजे ॥ १६ ॥
खून राद का चरण धोवतां, फूल वासना आइजे ।
सत्त धर्म जोड़ा से जूप्या, धर असमान ठहराइजे ॥ १७ ॥
धीमे हालो हल्को नहिं लागे, उनमुन ध्यान लगाइजे ।
भगवत शिर विष्णु री सेवा, जुगत मुकत फल पाइजे ॥ १८ ॥
लाय सिंहासन आंगण धरियो, ब्रह्मा वेद बंचाइजे ।
हाथां पगां रे कांकण डोरा, अंग पीठी लपटाइजे ॥ १९ ॥

75
भूल्यो वेद भूल्यो विषरावल, ओ कांई आराम थाईजे ।
अग्नि बाण ले धरती सूती, परणे सो मर जाईजे ॥ २० ॥
धरण गिगन होता नहिं उण दिन, मुहरत कौन रचाईजे ।
चारों वेद सती ने सूंप्या जाय पियाला थाईजे ॥ २१ ॥
चारों वेद इन्द्रासन सूंप्या, रहा इन्द्रासन मांड़जे ।
चारों वेद ब्रह्मा ने दीन्हा, प्रकट आय रचाइजे ॥ २२ ॥
नहीं अभ्यागत नहीं भिखारी, कुटुम्ब निवत बुलाईजे ।
बड़ा बड़ा योद्धा आवेला जान में, जानियां जान बणाईजे ॥ २३ ॥
चार दिना री आज्ञा देवों, कुटुम्ब ने निवत बुलाईजे ।
चारों दिशा रा आवे जान में, जान तणी ओलखाईजे ॥ २४ ॥
गनपति रिध सिध मंगल गावे, कुबेर भंडार भराईजे ।
तेतीसों में हो अगवाणी, आप जान में आईजे ॥ २५ ॥
पाँच क्रोड़ प्रह्लाद आवे, रतनादे मंगल गाईजे ।
सात क्रोड़ से हरिचन्द्र आवे, तारां दे मंगल गाईजे ॥ २६ ॥

नो क्रोड़ से पांडु आवे, द्रोपदी कुन्ती मंगल गाईज ।
बारह क्रोड़ से बलीचन्द्र आवे, सजावत मंगल गाईजे ॥ २७ ॥
अनन्त क्रोड़ शिव शंकर आवे, सींगी नाद घुराईजे ।
जीवत समाधी लीन्ही सो आवे, वो बड जान्या कहाईजे ॥ २८ ॥
बचूण नगर में पारो उठावे, नयो नगर बसाईजे ।
मान सरोवर ताल पाल पर, डेरा तम्बू तणाईजे ॥ २९ ॥
दोवड तेवड़ बाजार मंडेला, सुध कर सड़क बंधाईजे ।
बिन बैलों से गाड़ी आवे, जान समान भराईजे ॥ ३० ॥
इसड़ी कलयुग चौथे बरते, आलम मेघड़ी परणीजे ।
बंदर मुख, घोड़ा मुख, छाजल कन्ना, जानियां जान बुलाईजे ॥ ३१ ॥
कोरा कागज परा छपेला, इष्टामी नोट मंगाईजे ।
चित्तौड़ चंवरी दिल्ली डेरा, आवू तोरण भानीजे ॥ ३२ ॥
बीलाड़ा में फैरा फिरसी, कायम मेघड़ी परणीजे ।
मेघ रिषां घर मांडो रचसी, सती घर सन्त पधारीजे ॥ ३३ ॥

चार दिवस को लियो आसरो, चार जुग बिताईजे ।
हाथां पगां रे कांकण डोरा, तेल चढ़ी नहीं रहाईजे ॥ ३४ ॥
बरस पच्चानवें चैत चानणी, ताजे तोरण भानीजे ।
कबनी ध्यान धरे धणियारो, संतां भेला म्हालीजे ॥ ३५ ॥
निकलंग पाठ रिषा घर थरपे, सुरनर जान पधारीजे ।
बड़ा बड़ा पणधारी आवे, मांढे मेल बणाईजे ॥ ३६ ॥
मेघड़ी परवाण नर सुणे सुणावे, जन्म सफल हो जाईजे ।
अजमल सुत रामदेव भाषे, युग चौथा में आईजे ॥ ३७ ॥

(२१) अन्न प्रमाण

टेर – भांगो भ्रान्त भाव ने पालो, भजन बिना दिन अहलो जाय।
अन्न देव की कहूं बारता, सुणजो साधो कान लगाय ।
प्रजा रो देव बिनायक सिमरूं, मदद करो मोटी मम्माय ।
सिवरूं श्याम मुक्ति रो दाता, ध्यान धरे ज्याने ज्ञान बताय ॥ १ ॥

दर्शन आय देवता ऊभा, करता रे मन आया न दाय ।
हम आया प्रभु आसण बोलो, अन्न से मिलिया अङ्ग लगाय ॥ २ ॥
सुर तेतीस रीस कर बोल्या, दिल में कीन्हीं क्रोध अपार ।
सब ही देव एक कर मानों, ऐसी निगाह धरो करतार ॥ ३ ॥
गुण अरु ज्ञान रची है रचना, आदि-अनादि श्रीपति राव ।
इण विध अन्न अधिकेरा मानो, सब रावों में कहिये राव ॥ ४ ॥
पड़ियो चुगल हलचल कर लाग्यो, कारी लागे नहिं क्रोड़ उपाय।
पड़िया वाद विवाद विकारा, बिन आदर बैठ्यो नहिं जाय ॥ ५ ॥
करियो सोच मना में माधो, आप बड़ा अन्न श्रीपति राय ।
अन्न देव दर्शन मत आवो, दिन दश दूर बसो थे जाय ॥ ६ ॥
चलिया देव सती घर आया, राहु केतु उठ लाग्या पाय ।
सांची कहो सुरों रा नायक, आया हो म्हारे मन भाय ॥ ७ ॥
सुर तेतीस करी म्हारी निन्दा, देव सभा में आया न दाय ।
गुप्त करो पातालां मांही, जल का जीव देखण नहिं पाय ॥ ८ ॥

आप परम गुरु माँगण आसी, अन्न देव मांगेला आय ।
जोर कियाँ जावण नहीं देस्यां, ऐसा कौल करो सुर राय ॥ ९ ॥
आप परम गुरू कीनी आज्ञा, सती सुनो थे बचन समाय ।
क्रोड़ वचन तुम्हारा पालूँ, आप कहो जहां बैठूं जाय ॥ १० ॥
धरती रेल बेल एक बोई, सत नीर सींचियो माँय ।
पसरी बेल अमृत फल लागा, अर्ध जोजन में रही है छाय ॥ ११ ॥
तूंबो कोर बोर बन्द दीन्हो, अन्न देव बैठाया मायं ।
सत री कार दीनी सतवन्ती, सप्त पियाला धरिया जाय ॥ १२ ॥
जोत बिना सुरनर बिलखावे, सोरम बिना आवे नहीं दाय ।
अन्न देव ने बेगा ल्यावो, अन्न देव बिना काया जाय ॥ १३ ॥
जल का जीव रचा जग जाचण, नदियां शोध समुन्द्रां मांय।
नीर तीर सारे फिर आया, अन्नजी हेर्या कठे नहिं पाय ॥ १४ ॥
आप परम गुरु कीन्हा पखेरु, गगन मंडल में पहुंचा जाय।
गगन मण्डल सारे फिर आया, अन्न को पतो कठे नहीं पाय ॥ १५ ॥

करता नाथ उपाई, कीड़ी, पग नेवर हरि बांधी जाय ।
थल भीतर सारे फिर आई, अन्न देव री खबर्‌या लाय ॥ १६ ॥
कीड़ी शोध बोध ले आई, तन में दीन्ही गांठ घुलाय ।
अन्न देव सती घर देख्या, वहां पर होरिया आनन्द उच्छाय ॥ १७ ॥
चढ़िया श्याम सकल ले साथे, नोबत नगारा धजा फर्राय ।
सतगुरु पहुंचा सती द्वारे, डेरा दिया पोलियां मांय ॥ १८ ॥
एड़ी सती सुहागण नारी, कुम्भ कलश शिर पर ठहराय ।
सात सखी मिल मंगल गावे, सतगुरुजी ने लिया बधाय ॥ १९ ॥
सती कहे श्याम सुन लीज्यो, कर जोड़े पृथ्वी रा राय ।
भाँति भाँतिं रा भोजन बताऊं, ऐसी सलाह देवो मन भाय ॥ २० ॥
कहवे श्याम सुनो सतवन्ती, मैं हूं पृथ्वी रच करतार ।
भोजन थारे जब म्हे जीमाँ, अन्न देवण रो करो करार ॥ २१ ॥
आया राज नाज मैं देस्यूं, देस्यूं, तोल और मोल बिकाय ।
लिखिया दाम सवाया लेस्यूं, और कहो तो आवे न दाय ॥ २२ ॥

अन्न देव दर्शन ले आओ, मन में सती मती घबराय ।
चाँद सूरज जामिन ले ले, ऋषि मुनि जन साख भराय ॥ २३ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, सब ही देव मिल जीमण आय।
भांति भांति रा भोजन हाजिर, रुच रुच जीमो श्रीपति राय ॥ २४ ॥
कहवे श्याम सती सुन लीज्यो, थोड़ी आगी उरेरी आय ।
चंगा चीर कांचली दीन्हो, आप परम गुरु मन हरषाय ॥ २५ ॥
सजिया काज नाज ले आया, घर देवाँ रे आनन्द उछाय ।
अन्न परबाण सांम्हलो साधो, गंगा में दीन्ही ज्यूं दूजती गाय ॥ २६ ॥
गुरां रा ज्ञान ध्यान कर सुणज्यो, आया सन्तां रे लागो पाय।
अजमल सुत 'रामदेव' भाषे, अन्न परवाण सुणो चित्त लाय ॥ २७ ॥

(२२) योग प्रमाण

टेर - देखो भाई जो जुगत सुखदाई ।
जोग बिना बिजोग ही होता, यह अनुभव उपजाई ।
अष्ट अंग जोग करे जप क्रिया, आसण चौरासी माई ।
पद्म आसन धर प्राण चढ़ाया, सुरता सिमरण तांई ॥ १ ॥
छः समाधि समझे सतगुरु से, दोय समाधि फंल पाई ।
संकल्प विकल्प पुरुषार्थ जाणो, निर्विकल्प निर्भय थाई ॥ २ ॥
षट् कर्म योग का जाणो, नेतो धोती बस्ति जगाई ।
त्राटक गज कर्म न्योली जाणो, सुरती समझ घर पाई ॥ ३ ॥
दशों पवना परचे कर लेणा, दश बाजा शिखर में पाई ।
दशवें द्वार झिलमिल ज्योति, देवा दरस्या मांई ॥ ४ ॥
पूगा धाम प्राप्त कर देखो, गुरू गम से गति पाई ।
मिलिया जोग बिजोग मिटाया, त्रैविधि ताप मिटाई ॥ ५ ॥

मिलिया पीव मगन भई प्यारी, आया भरोसा भारी ।
सुषमण सैनी जाय निरखिया, मिली पिया से प्यारी ॥ ६ ॥
दशवें द्वार फोड़ डण्ड मेरू, अगली भोम हमारी ।
उल्टा पवन संग लो प्यारी दरश्या देव अपारी ॥ ७ ॥
सहस्त्र कंवल दल सन्मुख दरशे, रीझा राजवण प्यारी ।
अनहद नाद अनेकों बाजे, नहीं पीव से न्यारी ॥ ८ ॥
अजपा जाप अमर घर पायो, सैन गुरां से गम पाई ।
आठों याम एक रस देखो, अब कुछ धोखा नाई ॥ ९ ॥
ऐसो देश कोई बिरला जाने, और बांधे करम का भारा ।
कहे 'रामदेव' सुनो भाई साधो, दिल ही देश हमारा ॥ १० ॥

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-
श्री सरस्वती प्रकाशन
सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर ✆ 0145-2425505

(२३) महिंमा प्रमाण

टेर - सुणज्यो, महिमा कह दरसावूं ।
संत समागम पर उपकारी, बिड़द सन्ताँ गांवु ।

सन्त माल रूपांदे राणी, जेसल तोलाँ तरिया ।
स्वारथ्यो खाती रूपावत नारी, ज्यांका कारज सरिया ॥ १ ॥

पण्डित देवायत पूंजलदे नारी, पदमा भेला रमिया ।
धारू मेघ मेवो मांगलियो, निज मन प्याला पीया ॥ २ ॥

खींवण मेघ और सायर डाली, शामिल जम्मा जगाया ।
ऐसी भक्ति शामिल कीन्ही, आप अखे घर आया ॥ ३ ॥

सूरो देवड़ो सोडा सांवत, रमिया धर्म रे माँई ।
आदू रीत सही कर जाणी, जुगाँ जुगाँ का भाई ॥ ४ ॥

महाजन मलियो साध सधीरो, तोला ने सैन बताई ।
जेसल चोरी धाड़ा करतो, समझ पलक में आई ॥ ५ ॥

पदमा शक्ति पदारथ जोया, ऊगमसी ओदर आया ।
कांकण बांध कर्म सब काट्या, रतन पदारथ पाया ॥ ६ ॥

हरबू सांखलो हरदम हाजिर, गाँव बांगटी माँई ।
दूजी देह म्हारी ही जाणो, हां माही जाया भाई ॥ ७ ॥

पाबू राठौड़ पन्थ में सीधा, महिमा सन्ता री देखो ।
शामिल होय सन्त सब मिलिया, मेटो भव दुख भेखो ॥ ८ ॥

धरमो अरु कालू कीर संग रमिया, मृग मूंदड़ी पाई ।
लाखो देख मंजीरा धारी, धरिया शिला रे माँई ॥ ९ ॥

आगे सन्त अनेकों तिरिया, महिमा कही न जाई ।
कहो 'रामदेव' महिमा देखो मिलिया हमारे मांई ॥ १० ॥

(२४) चौबीस अवतार प्रमाण

टेर - सुणज्यो, अवतारां री बातां ।
चौबीस अवतार धरया धणी आगे, कलजुग निकलंग दाता ।
बराह १ अवतार धार कर लाया, दैत्य हिरणाक्षप मारा ।
नृसिंह २ अवतार आप ले आया, भक्त प्रहलाद उबारा ॥ १ ॥
परशुराम ३ अरु रामचन्द्रजी ४, काज ऋषियों का सार्‌या ।
रावण मार विभिषण थरप्यो, शिवरी अहिल्या तार्‌या ॥ २ ॥
पृथु ५ अवतार हंस ६ दामोदर ७, निज अंश आप उपाया ।
रचना रीत सभी कर प्रकट, जग व्यवहार चलाया ॥ ३ ॥
कृष्ण ८ अवतार अरु बुद्ध ९ अवतार धर, दैत्य कंस को मारा।
मच्छ १० रूप अवतार धार कर, शंखासुर को मारा ॥ ४ ॥
वेदव्यासजी ११ होय आपने, पुराण अठारा चलाया ।
भागवत और महाभारत रच, धनंजय आप दरसाया ॥ ५ ॥

कच्छ १२ अवतार धर समुन्दर मथिया, मोहिनी १३ रूपधर लीन्हा।
नारद १४ स्वयम्भू १५ मनु रुप धर, सो मनवन्तर चीन्हा ॥ ६ ॥
ऋषभ १६ देव योगेश्वर दाता, धर्म मर्यादा बंधाया ।
धारण करो धरणी रूप ध्यावो, ज्योति स्वरूपी आया ॥ ७ ॥
धनवन्तरी १७ अवतार होय हयग्रीव १८ जुग अवतार देह धारी।
वेद कतेब सब प्रकट कीन्हा, सुणज्यो ज्ञान नर नारी ॥ ८ ॥
बलि के काज बावन १९ अवतार ले, सन्तां दर्शन पाया ।
वाँरी मर्यादा सारे देखो, बली पाताल पठाया ॥ ९ ॥
बद्रीनारायण २० रुप धार कर, निकलंग २१ आवे चाया ।
दत्तात्रेय २२ कपिल २३ अवतारा, लेख शास्त्र में गाया ॥ १० ॥
सनकादिक २४ अवतार धारकर, मेटी-त्रिगुण माया ।
चौबीस अवतार सांभलो साधो, आप 'रामदेव' गाया ॥ ११ ॥

श्री रामदेव जी तथा अन्य सन्तों के उप प्रमाण

(१) बाला पद्धति प्रमाण

टेर - साधो भाई ज्योति स्वरूपी हूज्यो ।
कूड़ा कपटी लोभी लालची, ब्यां सूं अलगा रीज्यो ।
पच्यासी मन्त्र से धर्म हलायो, रीत क्रिया सब कीज्यो ।
भ्रांति मेट भाव में मिलणा पग धोय पायल लीज्यो ॥ १ ॥
महाधर्म ओछो मत जाणो, ऐसी सैन लख लीज्यो ।
सतयुग, त्रेता, द्वापर भेला, कलियुग मत भूलज्यो ॥ २ ॥
ज्योति जगावे जनम नहीं पावे, दुरमत दूरी लीज्यो ।
शक्ति दरवार जुड़े सब संगत, अजर अमीरस पीज्यो ॥ ३ ॥

भेटो ब्रह्म धणी ने ध्यावो, जात पांत मत कीज्यो ।
कलश करत् से क्रिया करज्यो, जद थे यूं मोलीज्यो ॥ ४ ॥
शिव शक्ति मिल धर्म चलायो, नोऊं नाथ भी मिलज्यो ।
सिद्ध चौरासी मिले अवतारा, इण विधि भक्ति कीज्यो ॥ ५ ॥
तेतीस क्रोड़ देवी देवता, सब की सार मिलाज्यो ।
जोत कलश जुगती कर थरपो, मिलता कांई लाजो ॥ ६ ॥
नर नारी मिल पूजा साझो, जैसे हाजरी दीज्यो ।
जन्म जन्म का फन्दा कटसी, जो जन पन्थ मिलीज्यो ॥ ७ ॥
नुगरा नर परतीर यो पावे, वाँ ने भेद मत दीज्यो ।
मीठा बोले मन हर लेवे, जगत जाल जाणीज्यो ॥ ८ ॥
इष्ट उपासी और सुखरासी, सर्व काज सिद्ध कीज्यो ।
आदि शक्ति का अजर पियाला पीकर निर्मल व्हीज्यो ॥ ९ ॥
पांच शंख का अजर पियाला, जीवन मुक्ति कर लीज्यो ।
अजमल सुत 'रामदेव' भाषै, शक्ति शरणो लीज्यो ॥ १० ॥

(२) बीज महिमा प्रमाण

टेर - कहे रामा पीर बीज री महिमा, निजिया धर्म पालो अधिकार
ध्यावो बीज भलो भगवत ने, सकल कला में खेले सृजनहार।

गवरी पुत्र गणेश ने सुमिरूं, विद्या री सांचो दातार ।
सुध बुध वाणी थारा साधां ने, आपो विद्या देवो बांह पसार ॥ १ ॥
सोला तिथि हिन्दू सब पूजे, मुसलमान तारीखां बार ।
दोनों दीन एक दिन पूजे, नया चांद दर्शन दीदार ॥ २ ॥
सतयुग दाग बतावो दाता त्रेता युग और द्वापर सार ।
चारों दाग देवसी दाखे, चारों जुगां रा सुनो विचार ॥ ३ ॥
सतयुग दाग पवन रा जाणो, अग्नि त्रेता दाग बताय ।
द्वापर जल रा दाग कहीजे, कलियुग सब मिट्टी मिल जाय ॥ ४ ॥
सतयुग व्रत बताओ दाता, त्रेता युग द्वापर का सार ।
चारों व्रत देवसी दाखे, चारों जुगां रा सुनो विचार ॥ ५ ॥

सतयुग व्रत अमावस आपे, त्रेता में पूनम री सार ।
द्वापर व्रत ग्यारस रो कहिये, कलियुग बीज थावर तत्सार ॥ ६ ॥
पन्थ में बैठे पछें पछतावे, बिना खबर नर खेंचे भार ।
भूल भरम में फिरे भटकता, वा नुगरां ने नरक द्वार ॥ ७ ॥
गायत्री ग्रन्थ गङ्गा में नहाया, सुणियां पाप उतरसी भार ।
कटसी पाप क्रिया राखे सांची, सुगरा पहुंचे स्वर्ग द्वार ॥ ८ ॥
उदक्या दान धरां में राखे, लाय लगावे बन में जाय ।
कूड़ा कपटी लोभी लालची, कांणा खोड़ा सायबो कराय ॥ ९ ॥
चन्द्रावल बीज चौबीसां जैसी, अमर फल लागे एकण बार।
सतगुरु भेद भव सागर तारे, ब्रह्मा बांचे वेद विचार ॥ १० ॥
दसवे निकलंग देव दरसिया, बीज थावर रो रुड़ो बार ।
बीज महिमा 'देवसी' भाषे, पर उपकारी उतरे पार ॥ ११ ॥

(३) बीज प्रमाण

टेर - कहे भाटी हरजी सुणो गुरुदेवा, जन्मों जन्म करूं चरणां री सेवा।
पीरजी न कोई बात आप रे छाने, वा तो कहवो धणी हरजी रे काने।
हरजी, राम नाम साधां मुख सोहवे, नाम लियां भाटी निस्तारा होवे।

कहे भाटी हरजी सुणो गुरु दाता, असंग जुगां री सुणावो बातां।
जोग धर्म री रीत कुण जाणी, वा तो कहवो सांची सहनाणी ॥ १ ॥
हरजी पैदा किया परम गुरु थाने, शक्ति उपाय दिया हर क्या ने ।
शिव शक्ति मिल मण्ड रचाया, पाछे जीवा जूण उपाया ॥ २ ॥
पीरजी धूप कलश री बताओ बैला, बठे होवेला कुण कुण भेला।
नेम धर्म कुण ल्याया पूजा, आप बिना देव कुण दूजा ॥ ३ ॥
हरजी आधी रैन कलश री बेला, बठे होवेला जीवां रा धणी भेला।
भाटी पूजो पाट धरण रे माँई, शिव शक्ति मिल सेन लखाई ॥ ४ ॥

पीरजी जलरी जोत कलश थपाता, जलरा जामण कहो गुरु दाता।
हरजी जल ही थामण जल ही देवा, जल थामण ने नमण करेवा ॥ ५ ॥
सब ही रचना रची इण माथे, दीखती वस्तु मांडू नहीं खाते।
चराचरी जल बीज रहाई, बीजो अर्थ बतावूँ काँई ॥ ६ ॥
पीरजी केता पावन बहे धर धारा, केता पावन बहे सुख सारा।
निज पावन ओलखावो न्यारा, वांरा भेद बताओ सारा ॥ ७ ॥
हरजी पच्यासी पावन बहे धर धारा, निज पावत ओलखाऊं न्यारा।
श्वासा बहे सुषमणां सोही, ओहं सोहं निज पावन ओही ॥ ८ ॥
पीरजी परणा परणी सकल में होवे, आपकी मेल पराई ल्याई।
बा थाने पूंछूँ परणीजेक नांही, सांची कहो म्हारा जूना गुसांई ॥ ९ ॥
हरजी छूटे बचन मकड़ी सा जाला, मोह माया फंसझा जंजाला।
आपरी मेले पराई ल्यावे, पड़दो दे साखा बतलावे ॥ १० ॥
पीरजी आशा करे अन्न री सारा, कुण है अन्न रो पूरण हारा।
कुण पूरेलो अन्न री आशा, पीरजी बचन सुणावो सांचा ॥ ११ ॥

हरजी बरसेला इन्द्र भीजेला सारा, निपजेली धरती उपजे अन्न प्यारा।
मूंग चांवल जौ गेहूं जुवारा, मौंठ बाजरा निपजे सारा ॥ १२ ॥
धिन धिन है गायत्री रा जाया, खांदो देकर अन्न निपजाया।
पाल्यो पिण्ड पराई काया, धरम धोरी ये नेम निभाया ॥ १३ ॥
पीरजी ओ संसार खंडन कब होला, आभी कहोजी गिरधर लाला।
बधियो परिवार सृष्टि भारी, नो खण्ड पृथ्वी न्यारी न्यारी ॥ १४ ॥
हरजी सांवत सरीसा अगन चालसी, बरसे धूप पत्थर पिघलासी।
जिण दिन पृथ्वी परले होवेला, ध्रुव के तारे नीर चढ़ेला ॥ १५ ॥
पीरजी साद संत थारा भजन करेला, वे परला में कियां बचेला।
उण दिन कठे छिपेला सारा, उण दिन री कहो सृजन हारा ॥ १६ ॥
हरजी ध्रुव लग नीर करे कमठाणा, कील माकड़ी बीच रहेला दाणा।
वा तो बात उणी रे सारे, आपका मुख में सन्त उबारे ॥ १७ ॥
पीरजी कुण दिन पाट बैठे धणी राजा, कुण दिन बाजे छत्तीसों बाजा।
कुण दिन जान चढ़े घमसाणा, सो भी कहवो दिल्ली पति राणा ॥ १८ ॥

कंवारी कन्या रा सुणावो बाचा, कदे अदेल स्वामीजी पाछा।
हरजी चार दिहाड़ा जुग कहज्ञा सांई, चौथा में परणेला आई ॥ १९ ॥
तिथि पूनम काती मास भरणी, सम्यो शीतकाल मेघड़ी परणी।
सुर नर मुनि जान में आवे, मेघां रे घर मंगल गावे ॥ २० ॥
पीरजी आप मिल्या म्हाने धणी मोटा, जुगन जुगन रा भाग्या टोटा।
शरणें आया बहुत सुख पाया, सत री संगत गरीबी में न्हाया ॥ २१ ॥
अजमल सुत ''रामदेव'' भाषे, बीज प्रमाण सत शाखा राखे।
हरि शरणे भाटी 'हरजी' बोले, उत्तर प्रश्न हिरदे तोले ॥ २२ ॥

(४) निज प्रमाण

टेर - सुणज्यो बात असंगत जुग पहली की, कलजुग बीत्यां करूं सम्हाल।
दुर्बल साध बचन रा पूरा ।
चार जुगां की एक चौकड़ी, सहस्त्र चौकड़ी पुल परकाश ।
ऐसा ऐसा कई जुग बीत्या, उण दिनां का सुणो विचार ॥ १ ॥

धरणी गिगन पवन जल अगर्नी, इण्ड फोड़ थरप्यो आकाश।
थरप्यो थार गिगन दीनी गंवली, आद अमावस कीनो प्रकाश ॥ २ ॥
ईश्वर जीव प्रकृति भेला, ऋषि मुनि समाया मांय ।
इन्छा मन्छा कुदरत फैली, लख चौरासी दिया बणाय ॥ ३ ॥
स्वयम्भु मनु आप हो होता, अलख पुरुष निरंजन राय ।
तीनूं देव आदिया शक्ति, प्रकट पंथ देवां के मांय ॥ ४ ॥
नरहर गुरु के थपी थरपनां जरणी पुत्र पूरिया पाट ।
प्यालो कर परमेश्वर पूज्या, सोझी पड़ी ज्यांने पुल प्रकाश ॥ ५ ॥
अलख नाम अखण्ड अविनाशी, तीनूं देवां के दीना माथे हाय।
लछमी विष्णु सावित्री, ब्रह्मा, पारवती जी शंकर नाथ ॥ ६ ॥
सतजुग में प्रहलाद रतनादे, भेरंग विषय की लाग्या लार ।
सत सरियादे ने नेम झिलाया, पांच क्रोड़ प्रहलाद की लार ॥ ७ ॥
सतजुग लारे त्रैता जुग थरप्यो, भेरंग रिष का पुत्र ऊंकार ।
गाछा विलोचन्द नेम झिलाया, सात क्रोड़ हरिचन्द की लार ॥ ८ ॥

नरहर गुरु का पुत्र दुर्वासा, सब धर्म की बांधी धार ।
सत कुन्तां ने नेम झिलाया, नो क्रोड़ पांडवां की लार ॥ ९ ॥
पाक्यो खेत ऊपजी आशा, जुगां जुगां रिष पर उपकार ।
अत्री रिष जी नेम झिलाया, बारा करोड़ बलिचन्द री लार ॥ १० ॥
पुल बिनां पाट किस विध पूरे, रहणी करणी मन ललकार।
निजिया धरम कूकर ज्यूं झेले, वैश्या तणां करे व्यवहार ॥ ११ ॥
दसल्या करम कर्‌या मिल चौड़े, दुरमत दुविधा दोकण धार।
कर कर निन्दा पड़े नारगी, नारगी गुप्त पड़े गुरजां री मार ॥ १२ ॥
दसली बिगत काड दी बारे, कूकर जूण जपे व्योपार ।
भजन प्रमाणे सोजी नहीं राखे, निकलंग सार ने दीनी निकाल ॥ १३ ॥
पाँच सात नो बारह भेला, पोहकर प्यालो बीलाड़े पाट ।
मातंग रिष जी पाट बैठसी, हनुमत होसी गढ का कोटवाल ॥ १४ ॥
बावन पदम सन्त भेला होसी, पड़दा बंधेला चवदासो नो लाख।
भजन प्रमाणे चालसी भाइड़ा, उण दिन सतगुरु भरसी साख ॥ १५ ॥

रिषां को राज भूले मती दाता, जुगां जुगां से लाग्या लार।
बीती पहर घड़ी दिन लारां, सतवाद्यां ने लीज्यो त्यार ॥ १६ ॥
चालो रीत राह मत भूलो, भूलो मती भरम्यां की लार ।
बीत जावे पहर घड़ी दिन लारां, सतवाद्या ने लेस्यूं त्यार ॥ १७ ॥
वाणी अर्थ साम्हलो सारा, तन मन को सांचो व्यौपार ।
अजमल सुत 'रामदेव' भाषे निज प्रमाण लखे अवतार ॥ १८ ॥

(७) शिक्षा प्रमाण

टेर - ज्ञान ध्यान रा जोय दिवला, हरी भजन रा जोय दिवला ।
जुग जागो रे भाईड़ा ।

आप सुवारथ सब कोई राचे परमारथ कुण राचे वो बावजी।
परमा रो राचबो, बुध झीणा रे बीरा ॥ १ ॥

हाथ मांही दिवलो धोला दोफारां नहीं सूझे वो बाबाजी ।
थारा हिया में अंधेरो क्यांऊं सूझे रे बीरा ॥ २ ॥
पाड़ोसी की नार ने थे बहन बराबर जाणो वो बाबा जी ।
बहन बराबर जाणतां अमरापुर न्हालो रे बीरा ॥ ३ ॥
पाड़ोसी की नार तो आ बैठ झरोकां झांके वो बाबा जी ।
काजलिया की रेखा क्यांने निरखें रे बीरा ॥ ४ ॥
आसोजां की बून्दड़ल्याँ तो जाय समुन्द्रां बेठी वो बाबा जी ।
वां सीपां में अजीब मोती निपजे रे बीरा ॥ ५ ॥
भांगड़ल्यां पियोड़ा भांदू भेद किसी विध जाणे वो बाबाजी ।
मदिरा रा पीयोड़ा मति हीणा रे बीरा ॥ ६ ॥
तंवराँ का टीकायत सिद्ध "रामदेव" बोल्या वो बाबाजी ।
मुखड़े आयो अमृत क्यां ने ढोले रे बीरा ॥ ७ ॥

(६) भविष्य प्रमाण

टेर - भगतां रो तारण आवसी, सन्ता रो तारण आवसी ।
आप आलम आवसी गूंथ ल्याये मालण फूल कांकण सेवरा।
सही आलम आवसी ।

अगम रा दल आण बैठा, पिछम रा दल आवसी ।
श्वेत घुड़ले श्याम आसी, बाघ अम्बर छावसी ॥ १ ॥
पांचां से प्रहलाद आसी, सातां हरिचन्द आवसी ।
नोवां राजा जैठल आसी, बारह बलिचन्द राव जी ॥ २ ॥
दिल्ली दिखण एक होला, होला, एकुंकार जी ।
हिन्दु तुरकां एक प्याले, उठेली सब भ्रांत जी ॥ ३ ॥
चित्तौड़ चंवरी दिल्ली डेरा, उजीणो बाजार जी ।
हड़मत झंडा रोपिया जद, होवेली जै जै कार जी ॥ ४ ॥

तेतीस बांधवे जिन घरां, चार छः अमराव जी ।
तख्त बैठा ले ला मुजरा, इण्डोली रा राव जी ॥ ५ ॥
"गोरख जोगी" ज्ञान गरवा क्रोड़ भेष बुलावसी ।
प्रेम रे घर पांव धरसी, सींगी नाद बजावसी ॥ ६ ॥

(७) पखवाड़ो प्रमाण

टेर - पिया पखवाड़ों बीतो, कहे सतगुरु समझाय भजन बिना जासी रीतो।
दोय पखां एक मास, पिया पखवाड़ो बीतो ।

ज्ञान अमावस ऊपजे, दे चित्त को चेताय ।
ग्रन्थ भण्डारा ज्ञान रा, सतगुरु दिया बताय ॥ १ ॥
पड़वा प्याला प्रेम रा, पीवे सुरत कलाल ।
राम नाम जपबो करो, कबहुं न झांपे काल ॥ २ ॥
बीजक बारह पहर की, भजन करो भरपूर ।
उण दिन मिलबो है नहीं, पाक बिना पिव दूर ॥ ३ ॥

तीजक तीनों लोक में होय रहा उजियास ।
बासक सिमरे पाताल में, ध्रुव सिमरे आकाश ॥ ४ ॥
चौथम चारों देश में, व्याप रीयो जुग मांय ।
जगत मृगलो ही रियो, फन्द में पड़ियो आय ॥ ५ ॥
पांचम पांचू तत्व को, घड़यो पूतलो राम ।
उबरेला इण पिण्ड में, राखेला निज धाम ॥ ६ ॥
छट छटकी आकाश से, पड़ी धरण पर आय ।
हुक्म हुआ सत श्याम रा, लेखा लिया लखाय ॥ ७ ॥
सातम सातूं सायरां, उलट चढ़े ज्यूँ नीर ।
त्रिवेणी रा घाट पे, हंस चुगे निज हीर ॥ ८ ॥
आठम आठूं पहरां रा, न्यारा न्यारा भाव ।
आगम से फल ऊतरे, पच्छिम ने फल खाव ॥ ९ ॥
नौमी निरंजन पूजल्यो, निरधार्यां आधार ।
सतगुरु बिन पावे नहीं, भजन तणो ब्योपार ॥ १० ॥

दशमी दश अवतार है, न्यारा न्यारा नांव ।
एक जीव की क्या पड़ी, भज्यां तिरे सब गांव ॥ ११ ॥
ग्यारस राखो गाढ़ से, प्रत्यक्ष झाँपे काल ।
व्रत करे भूखाँ मरे, जीव पड़े जंजाल ॥ १२ ॥
बारस शुद्ध बुद्ध बावड़े भोजन भाव प्रीत ।
कुबध गई बुद्ध उपजी, आ सतगुरु की रीत ॥ १३ ॥
तेरस तारण तिरण है, सुनो सभी चित्त लाय ।
त्रिवेणी रा घाट पे, नैण रिया झलकाय ॥ १४ ॥
चवदस चेतो जीवड़ा, लेवो पीव पिछाण ।
सुरत विलूमी भजन में, छोड़ी कुल री काण ॥ १५ ॥
पूनम पूरण ब्रह्म है, निरधार्याँ आधार ।
लगो निसरणी नाम की, अमरापुर चढ़ पार ॥ १६ ॥
पन्द्रह तिथो सिमरण करो, मिटसी लाल जंजाल ।
'गोरख' जोगी बोलिया, मूल पकड़ तज डाल ॥ १७ ॥

(८) सोला कला प्रमाण

टेर - पड़वा पुरुष रमे इक पूरा, वहां मन लागा मेरा है ।
जहां से आया वहीं समाया, बहूरन लूंगा फेरा है ।
मात तात कुटुम्ब नहीं होता, नहीं गुरु नहीं चेला है ।
उण दिन जोगी जीव पीव से, अन्दर आप अकेला है ॥ १ ॥
आद अमावश आरम थाया, सुन्न में सूरज ऊगा है ।
रवि घर चन्द चन्द घर सूरज आ गम जाणे गूंगा है ॥ २ ॥
पड़वा पीर पैगम्बर सीधा, ज्ञान गिगन मुख लीधा है ।
सुन में शहर शहर घर बस्ती, यूं परमार्थ सीधा है ॥ ३ ॥
बीज सबूरी दुविधा दूरी, सींच्या मूल सवाया है ।
फलिया पेड अमर लागा, अटल वृक्ष की छाया है ॥ ४ ॥
तीज समाया बहुरि न आया, तीन लोक पद पाया है ।
गंगा यमुना बहे सरस्वती, त्रिवेणी तट न्हाया है ॥ ५ ॥

चोथम चंचल ने छल कीना, तन मन दीपक जोया है ।
जागी जोत गिगन में दरश्या, बीज धीज कर पोया है ॥ ६ ॥
पांचम पांच पठाया सूवा, प्राण पींजरे मूवा है ।
मूवां पछे बोलने लागा, ब्रह्म स्वरूपी हुआ है ॥ ७ ॥
छट में छट उतारी छाया, किशन कुंवारी काया है ।
धेनु ब्याई बछड़ो ल्याई, बिना दूध घी खाया है ॥ ८ ॥
सातम सात रिषेश्वर सांचा, आतम पद प्रकाशा है ।
रत्न पकाया बहुरि न आया सत्त शब्द में बासा है ॥ ९ ॥
आठम अटल आत्मा जागी, जाँण बताई पागी है ।
हंसा मान सरोवर न्हावे, अनुभव डोरी लागी है ॥ १० ॥
नौमी नाथ निरंजन छाया, नाम लिया टकसाला है ।
नागण एक टकोरे जोगे, घट-घट गोरख बाला है ॥ ११ ॥
दशवें देव द्वारे आया, रिद्धि सिद्धि दर्शन पाया है ।
राजा राज करे नगरी में, महरम रूप मठ छाया है ॥ १२ ॥

ग्यारस आदि है अधिकारी, एकोंकार मनाया है ।
काचे धागे सब जग पोया, कईयक भ्रम भुलाया है ॥ १३ ॥
बारस बारां भीतर ओ ही, तन मन दीपक जोई है ।
बारा बीज विचारे सोही, वोही अमर नर होई है ॥ १४ ॥
तेरस तार बजाया तूरा, नाद रिया भरपूरा है ।
जोगी जके जुगां जुग जीवे, ज्ञानी हाल हजूरा है ॥ १५ ॥
चवदस चेतन हो मन मेरा, सुरत नुरत का मेला है ।
पार लग्यां पद पूरा पावे, नाम महाधर्म भेला है ॥ १६ ॥
पूनम पारब्रह्म ने ध्यावो, पूनम पूरा ऊगा है ।
सोला कला सम्पूर्ण सेवा, आदि अनादि पूगा है ॥ १७ ॥
एक विचारे दूजी टाले, तीजी त्रिगुण माया है ।
एक वचन में पूरा जाणे, वही हमारी काया है ॥ १८ ॥
ध्यान धरे सो धर्ता कहिये, कर्म करे सो कर्त्ता है ।
गुरु विजयसिंह 'धेनो' गावे, ब्रह्म स्वरूपी रमता है ॥ १९ ॥

(९) ऋषि प्रमाण

सत विश्वास सदा रिष सीधा, जुगां जुगां रिष अगवाण हुया।
अमर जोत रिषां घर मांही, सत ही सत, वाँके नासत नांही ।
पहली म्हारो साहबो सृष्टि उपाई, सात सायर आठों मुल्तान ।
सत की तणी मेघरिष झेली, कन्या कंवारी दीनी दान ॥ १ ॥
सतयुग में प्रहलाद सरियादे, भेरंग रिख की लाग्या लार ।
मेघरिष सत शब्द झिलायो, पांच करोड़ प्रहलाद की लार ॥ २ ॥
राजा हरिशचन्द्र रानी तारांदे, बिलोचन्दजी गुरु निवाज ।
रिष ऊंकारजी शब्द झिलाया, सात करोड़ का सरिया काज ॥ ३ ॥
नरहर गुरु का पुत्र दुर्वासा, कुंतां पांडु लाग्या लार ।
सत का शब्द दिया रिष राजा, नौ करोड़ ले उतरया पार ॥ ४ ॥

गुरु तीतर रिष राजा बलीचन्द, चित मन बुध कीन्हा विस्तार।
जुगां जुगां रिष सत शब्द झिलायो, बारह करोड़ उतरग्या पार ॥ ५ ॥
राजा अजेसिंह ताल खुदायो, नीर नहीं निकल्यो एक धार ।
महाचन्द रिष काया होमी, धू लग नीर भरे पणिहार ॥ ६ ॥
रणसी आगे खींवण रिष सीधा, परच्यो दियो दिल्ली के मांय।
सत का करोत लिया शिर ऊपर, दूध फूल निकल्या देह मांय ॥ ७ ॥
श्री रामदेव आगे डालाबाई सीधा, गुफा खुदी धणियां हितकार।
दे परच्यो पड़दो बाई लीनो, पाछे रामदेवजी पूग्या सत अवतार ॥ ८ ॥
मालदे रूपां आगे धारू रिष सीधा, जमलो जगे धारू के द्वार।
सातूं जीव जमा में सामल, सब परवाना से उतर्या पार ॥ ९ ॥
कुम्हलगढ़ राणो कुम्भोजी होता रिष नाराण पांचा की लाग्या लार।
जमा जगाय धणिया ने ध्याया, सत रिष भक्ति उतर्या पार ॥ १० ॥
गुरु खींवण जस गावे माली 'लिखमो' रुजमो देख्यो रिषाँ के माय।
पड़दे भक्ति पकाई म्हारा दाता, खूब फली वा निष्फल नांय ॥ ११ ॥

(१०) मेघड़ी प्रमाण

टेर - म्हारा अलेख राजा, परणे तो बेगा आजा ।
घोड़ा री घूमर आजा देय नगारो आजा, बनड़ा राय बनी का राजा।
ऊभी म्हारा सायबा, सरवरिया री पैली तीर ।
ऐन सरोदे, ऐन सरोदे वो, बनड़ी बाट जोवे वो ॥ १ ॥
कहग्यो म्हारो सायबो, दिनड़ा री दोय र चार ।
जुग चोथोड़ो, चोथो जुग तो वो, कायमा बीत्यो जावे वो ॥ २ ॥
मेलूँ सायबा, हनुमान्यो कोटवाल ।
कांकण बांधी, आ डोरे बांधी वो, बनड़ी बाट जोवे वो ॥ ३ ॥
लिख द्यूँ सायबा, कागदिया दोयर चार ।
भणियो होवे तो, पडियोढ़ो होवे तो वो, कागद बांच लीजे वो ॥ ४ ॥
करल्यूं सायबा, धोलोडा भंगवा भेष ।
जोगण होवूँला वैरागण होकर वो, सब जग हेर ल्यूंला वो ॥ ५ ॥

बोले सायबा, मालाजी री घर नार ।
जुग जुग मेलो, भो भो मेलों वो, गरवा देव रो है वो ॥ ६ ॥

(११) मेघड़ी प्रमाण

टेर - कह्यो मेघड़ी रो सांची मानो, कोल किया हरी आसी ।
कहर गया म्हाने आलम राजा, नहचे निकलंग आसी ।
चार दिनां रो सायबो लेख लिखायो, ज्योने घणा दिहाड़ा थासी।
मात पिता रिषिया मातंगी, कोल किया हर आसी ॥ १ ॥
सिंह वाहन ले चढ़े हिंगलाज, डगमग डेरुं हलासी ।
चौसट जोगण बावन भैरुं, हाथां खपर भरसी ॥ २ ॥
छाजल कन्ना आवे इकटंङ्गा, घोड़ मुखां ने बुलासी ।
चार जुगां रा चारुं राजा, ये दल चहुं दिस का आसी ॥ ३ ॥
गदा चक्र ले चढ़े गुसांई बाबो, नुगरां रा शीश उड़ासी ।
गोरख नाद बजासी दल में, हाथां में खड़ग समासी ॥ ४ ॥

अगम पिछम रा बाजे बायरा, जल पाषाण उड़ासी ।
हेवरां हीस होवे दल मांयने, गिरदां भाण छिप जासी ॥ ५ ॥
गनपत स्वामी सूंड हिलावे, हड़वंत हाक मचासी ।
राजा बासक शीश हिलावे, जब धरा आमर थर्रासी ॥ ६ ॥
हर आसी हरियाले तोरण, रंग री रीत चुकासी ।
सुन्दर खाती अगम भाषिया, जुग चौथा में होसी ॥ ७ ॥

(१२) मेघड़ी प्रमाण

टेर - घर रिषियां के सही मांडवे, तख्त विराजे बाबो रहो रहमान।
घर मेघां के हरिया, तोरण अमर बधावा ।
गौरी थारा पुत्र गनेश ने मनाऊं, सुर तेतीसाँ होई अगवाण ।
रिद्ध सिद्ध द्यो म्हांने देवी शारदा, जूना धणियां का करां बखाण ॥ १ ॥

पावन सरीसा चढ़े पाखरिया जुगां सरीसा चारूं परमाण ।
शिव शक्ति का पुत्र लाडला ब्रह्मा बांचेला वेद पुराण ॥ २ ॥
पांच पुत्र माता कुन्तां का, चढ़सी उत्तर खंड पूर्व मुलतान ।
पच्छिम दिशा से दल चढेला, अगम दिशा में माचे घमसान ॥ ३ ॥
सिंह चढ़ी हिंगलाज पधारे, चाले चक्र अपूठा बाण ।
गुप्त चक्र मारे नुगरां ने, हुकम धणी का मंड़े मंडाण ॥ ४ ॥
गोरख नाथ गूदड़ी वालो, खडंग समावे हाथ दुधार ।
गदा चक्र ले चढें गुसांई बाबो, हड़मत जोधा करे ललकार ॥ ५ ॥
मोड़ बांध बाबो परणे मेघड़ी, जान चढ़ेला हिन्दू पठाण ।
दादो 'रणसी' अगम भाषिया, जुग चौथा में सही परवाण ॥ ६ ॥

(१३) मेघड़ी प्रमाण

टेर - बनड़ा भली भांति से आजा, हाथ्याँ रे हौंदे आजा ।
घोड़ा री घूमर आजा, तू देय नगारो आजा, बनड़ा रामकंवर महाराजा ॥

हिवड़े हेत कर सिमरूं रामदेव, परसूं, आलम राजा ।
बड़ा बड़ी हिंगलाज ने सिमरूं, बाजे अनहद बाजा ॥ १ ॥
पांचां से प्रहलाद ने ल्याज्यों, सातां हरिचन्द राजा ।
नोवां से जेठल ने ल्याज्यो, बारा बिलोचन्द राजा ॥ २ ॥
घर रिषियाँ के कन्या कंवारी, माणक चोक पुराजा ।
जोड़ तोड़ रा जान्या ल्याज्यो, नुगरां ने मार हटाजा ॥ ३ ॥
चित्तोड़ चँवरी राचसी, गाढ़ा खंभ रूपेला ।
दिल्ली में डेरा देवसी, निकलंग बींद बणेला ॥ ४ ॥
कलजुग देख डरो मत रामा, दो पग दीज्यो आगा ।
"हरीराम" ओलिया गावे, भाग बनी का जागा ॥ ५ ॥

(१४) मेघड़ी प्रमाण

ॐ गुरुजी सुरत लगाय परमगुरु ध्याया, परा पश्यंती लगन लखाया ॥ १ ॥
उनकी रचना अपरम्पारा, ब्रह्मा शक्ति का सब विस्तारा ॥ २ ॥

सत त्रेता द्वा कलिजुगलीज्यो जाण, सतरा लाख अट्ठाइसहजार सतयुग प्रमाण ॥३॥
कच्छ मच्छ बाराह नृसिंह रूप धारा, अपना भक्त प्रहलाद उबारा ॥४॥
दुष्ट हरणाकुश आप खपाया, निकलंग आपका पार न पाया ॥५॥
परशु बामन राम बन आया, दुष्ट रावण को आप खपाया ॥६॥
बारा लाख छियानवें हजार वर्ष त्रेता थपाया, निकलंग आपका पारनपाया ॥७॥
बुद्ध भगवान, कृष्ण हो आया, कंश बकासुर शिशुपाल हटाया ॥८॥
आठ लाख चौसठ हजार वर्ष द्वापुर थाया, निकलंग आपका पार न पाया ॥९॥
निकलंग आप कलंग नहिं लागे, दुष्ट कालिंगो दूरो भागे ॥१०॥
चार लाख बत्तीस हजार वर्ष कलयुग थाया, निकलंग आपका पार न पाया ॥११॥
आपके भगतां का बिड़द बंधाया, इतरी कर अजमल घर आया ॥१२॥
माली लिखमसी सतगुरु पाया, 'बगसो खाती' शीश नमाया ॥१३॥
मेघवाल भक्तां की बातां परणे मेघड़ी कलयुग जातां ॥१४॥
ऐसा दान दिया देव ने, रखी वचन की शाखा ॥१५॥
निकलंग आप आज मेघां घर, वचन भक्त का राखा ॥१६॥

राखो धीज बचन की रिषियां, आपहि बचन निभावो ।
मेघां घर आ परणो मेघड़ी, अमर भाव रखाओ ॥१७॥
सत्रा सतयुग में बीत्या नो लख, उण दिन मेघ घर आया ।
उपर पूरी कोढ रोग में, रिष घर अलख जगाया ॥१८॥
कन्या दान मांगियो दाता, मातव मेघ कहाया ।
कबनी बाटां जावे कायमा, सत का वचन निभाया ॥१९॥
माघ महीनो शुक्ल पक्ष में, छट तिथि कहिये बुधवार ।
मेघां के घर संकल्प झेल्यो, बचन दियो निकलंग अवतार ॥२०॥
'खाती बगसो' अर्ज दाखवे, माली लिखमसी सतगुरु धार ।
मेघड़ी प्रमाण मेघां घर आवो, कन्यादान है पर उपकार ॥२१॥

(१७) योग प्रमाण

टेर – प्रमाण पूगा जके पाया, आप में ही आप दिखाया ।
नैति नैति निगम गाया, ध्याया सधर दिवाण हो ।

घाट अवघट बाट बेगम, काट करम कपाट खोले ।
ज्यांकी सधर सुरता नहीं डोले, जके सन्त सुजाण हो ॥ १ ॥
पन्थ पग बिन, चलत मग बिन, जीभ लग बिन वचन बोले।
ज्यांरा मनां ममता पड़ी झोले, कुटम बांध्या ताण हो ॥ २ ॥
जीभ उलट जब उलट धारा, गेन मकड़ी झीणी तारा ।
ई में जाय सन्त सचियार प्यारा, बाजे अनहद निसाण हो ॥ ३ ॥
नहीं शिखर नहीं गगन धरणी, गांव बिन कहां जाय करणी ।
जोत जागी तिमिर हरणी, पिछम ऊगा भाण हो ॥ ४ ॥
मेरु शिखर ऊबके गङ्गा, अलंग धारा अमी तरंगा ।
अधर झारी झलके, अंगा, गुटक गुरु गम जाण हो ॥ ५ ॥
उलट नाभी धुन्न भेला, जाय कीन्या ब्रह्मा मेला ।
अरस परस करत केला, अनन्त मौजां माण हो ॥ ६ ॥
अन्तबीणी जोत जागी, शब्द मिलिया पवन पागी ।
अगम से गई सुरत आगी, करी ज्यांने ओलखाण हो ॥ ७ ॥

अखे मंडल अलख नूरा, जहां मन लागा संत शूरा ।
बाजिया अनहद तूरा परम, पुरुष पिछाण हो ॥ ८ ॥
सूर शशि मिल सुषम लागा, यांका भेदी ज्यांका भरम भागा।
'आशा भारती' भाग जागा, भेटिया महराण हो ॥ ९ ॥

(१८) कमल प्रमाण

भज मन गणपत देव मनाय भाई ।
मूल महल मन हर बसे ॥ टेर ॥
मूल घर आधार चक्कर, कंवर दल है चार जी ।
लाल वर्ण प्रकाश पंकज, शक्ति रिद्ध-सिद्ध लार जी ॥
गोमती में न्हाय तीरथ, जपो बीज ही चार जी ।
पदम आसण मूसा वाहन, रत्न द्वादश हार जी ॥
चारण सुखद सरोज शीतल, सेविया आधार जी ।
बाम सुंड प्रचंड बाहु, एक दन्त उदार जी ॥

गणनाथ गरवा ज्ञान सागर, जोग ध्यान सुधार जी ।
बुद्धि विद्या दायक संत सहायक गणनाथ नायक सार जी।
रंग लाल गातहि धूम लोचन, श्वेत षट अलंकार जी।
नव निधि ऋद्धि अष्ट सिद्धि, बुद्धि बड़ दातार जी।
कर पाश अंकुश चक्र आयुध, नाग नव गुण तार जी।
दृढ़ बांध बंध मूल अपान, देख गज दीदार जी ।
जहां जाप ६०० चढ़े पूजा, गणेश रे दरबार जी ।१ ।

अब स्वाधिष्ठान धर ध्यान भाई ।
वहां लिंग मूल घर हेरिये हो ।
लिंग षट दल कमल है, पीत वर्ण प्रकाश जी ।
जहां सती सावित्री गायत्री, रहे निश दिन लार जी ।
भुज चार जिण मुख चार चहुंदिश, वेद चार उचाव जी ।
जहां बीज षट ता मांही प्रगट्यो, कमल दल विस्तार जी।

जहां तीरथ पुष्कर न्हाय निर्भय, जा मिले एक सार जी ।
कर निगम आयुध हंस वाहन, जगत कर्त्ता जाण जी।
षट् सहस्त्र अजपा जाप पूजा, चढ़े नित परवाण जी । २ ।

लीज्यो कुण्डलिनि शक्ति जगाय भाई ।
कटि घर कुण्डली चक्र है हो ।
कुण्डली कटि उर्धनङ्ग फण, अगन स्वासा जाण जी।
जहां शक्ति ज्वाला अष्ट गुण जिन, अगन देव प्रमाण जी।
दे अर्ध बंध त्राहुट आंटा, (३ ॥) सर्पणी आकार जी।
जिन डोढ़ बालिश्त शरीर कोमल, श्वेत रंग विस्तार जी।
रही वृषण गुदा अध बीच योनि, त्रिदल कमल उदास जी।
रंग अरुण दल बिच श्याम मणिका, रहे उनके पास जी।
जहां होम यज्ञ धुनि वेद सुन सुन रहे उनके पास जी।
जिन माया बीज ही जाय जगाओ जाय दशवें द्वार जी । ३ ।

गणनाथ गरवा ज्ञान सागर, जोग ध्यान सुधार जी ।
बुद्धि विद्या दायक संत सहायक गणनाथ नायक सार जी।
रंग लाल गातहि धूम लोचन, श्वेत षट अलंकार जी।
नव निधि ऋद्धि अष्ट सिद्धि, बुद्धि बड़ दातार जी।
कर पाश अंकुश चक्र आयुध, नाग नव गुण तार जी।
दृढ़ बांध बंध मूल अपान, देख गज दीदार जी ।
जहां जाप ६०० चढ़े पूजा, गणेश रे दरबार जी ।१ ।

अब स्वाधिष्ठान धर ध्यान भाई ।
वहां लिंग मूल घर हेरिये हो ।
लिंग षट दल कमल है, पीत वर्ण प्रकाश जी ।
जहां सती सावित्री गायत्री, रहे निश दिन लार जी ।
भुज चार जिण मुख चार चहुंदिश, वेद चार उचाव जी ।
जहां बीज षट ता मांही प्रगट्यो, कमल दल विस्तार जी।

जहां तीरथ पुष्कर न्हाय निर्भय, जा मिले एक सार जी ।
कर निगम आयुध हंस वाहन, जगत कर्त्ता जाण जी।
षट् सहस्त्र अजपा जाप पूजा, चढ़े नित परवाण जी । २ ।

लीज्यो कुण्डलिनि शक्ति जगाय भाई ।
कटि घर कुण्डली चक्र है हो ।
कुण्डली कटि उर्धनङ्ग फण, अगन स्वासा जाण जी।
जहां शक्ति ज्वाला अष्ट गुण जिन, अगन देव प्रमाण जी।
दे अर्ध बंध त्राहुट आंटा, (३ ॥) सर्पणी आकार जी।
जिन डोढ़ बालिश्त शरीर कोमल, श्वेत रंग विस्तार जी।
रही वृषण गुदा अध बीच योनि, त्रिदल कमल उदास जी।
रंग अरुण दल बिच श्याम मणिका, रहे उनके पास जी।
जहां होम यज्ञ धुनि वेद सुन सुन रहे उनके पास जी।
जिन माया बीज ही जाय जगाओ जाय दशवें द्वार जी । ३ ।

भज मन नाभि कमल हरि हेर भाई ।
माणिकपुर चक्र नाभि बसे है ॥
माणिकपुर नाभि कमल दशदल, नील वर्ण प्रकाश जी।
जहां देव विष्णु सतोगुणी नित, शक्ति लक्ष्मी पास जी ॥
कर खड़ग खांडा बाण अंकुश, शंख चक्र ही धार जी।
गहि गदा पद्म अनूप आयुध, अष्ट भुजा उदार जी ॥
दश बीज धीज तीरथ गिलका, सांपड़ो महराण जी ।
षट सहस्त्र अजपा जाप पूजा, विश्नु पद परवाण जी ॥ ४ ॥
भज मन गुप्त चक्र धर ध्यान भाई ।
जिसमें उर्ध अर्ध हेरियो हो ॥
अर्ध उर्ध सूं कमल बिच एक गुप्त कमल अनाम जी ।
चन्द्र ज्योति अष्ट दल पर, मन करे विश्राम जी ॥
दल रक्त श्याम श्वेत पीला नीला कपिला धूम जी ।
मन होय भंवर उण कमल दल पर, रह्यो निशदिन लूम जी ॥

मन देव जहां पर वरत शक्ति, चंचल गुण उण संग जी।
मल कली २ विश्राम नहीं जठे, राखिये बहु जंग जी ॥
मन श्वेत दल पर बैठ धारे, दया धीरज धर्म जी ।
मन लाल दल पर बैठ निद्रा, मद आलस्य कर्म जी ॥
मन श्याम दल पर आय कर होय, कामी क्रोधी जास जी ।
मन नील दल पर आय जद ही होय, माया भिन्न उदास जी ॥
मन कपिल दल पर करत विनोद, करत केलि शिशु हास जी।
मन पीत दल पर आय चिन्ता, हुई उछाट उदास जी ॥
अलंकार इच्छा भोग भूषण, मैं तू द्वितीया जाण जी ।
मन गौर दल पर आन कीन्हा, धर्म धीरज आण जी ।
दस संधि बिच मन वास ले, पित्त कफ वायु त्रास जी॥
मन मध्यम कोष सुचेत होवे, गुण ज्ञान ध्यान प्रकाश जी।
दल श्वेत पूर्व रक्त अग्नि, दक्षिण श्याम सुजाण जी ॥
दल नील नेत्रत्तय कपिल पश्चिम, वायव्य पीत प्रमाण जी।

दल उत्तर दिशा रंग पीत गोरो, जाण ज्यो ईशान जी ।
बीच कंवल कोष में श्याम् रंग, संग बसे मन जब आन जी।
जब धरे योगी ध्यान उनमुन, रहे आठों याम जी ।
मन लागे एक हि ठोर त्यागे, कली-कली विश्राम जी।
खुल कमल दल बांवे उर्ध दिश, हुई अनुभव अनन्त विचार जी ।
घर सुषुमन मिल सूर शशि लग, अमी झरे एक तार जी।
रवि चन्द्र उड्‌गण अनन्त ज्योति, असंख्य बीज उजास जी।
घुरे नाद अनहद आप देवहि, नारायण तिहि पास जी ॥ ५ ॥

भज मन अनहद चक्र धर ध्यान भाई ॥
चक्र अनहद कमल द्वादश, श्वेत वर्ण सुरंग जी ।
रुद्र संग अर्धङ्ग उमा, अखण्ड बांवे अङ्ग जी ।
शिव देव संग पिनाक आयुध, भालचन्द्र सुजाण जी ।
चढ़ धवल वाहन वर्ण द्वादश, बीज है प्रमाण जी ।
मणि कणिका कुंड न्हाये, घट क्षेत्र काशी धार जी ।
षट सहस्त्र अजपा, जो चढ़े, महेश के दरबार जी । ६ ।

चाली दोय कंठ कमल से बाट भाई ।
एक तो बंक एक सूधी बहे हो ।
बंक मेरु दंड दिश सुधी, जावे दशक द्वार जी ।
दल षोडस कमल विशुद्ध चक्र धूम्र वर्ण विचार जी ।
निज जीव देव अविद्धा शक्ति, षोडस बीज प्रमाण जी।
शुद्ध आदि अन्त आकार आवे, लीज्यो तंत पिछाण जी।
नील कंठ सुकुंड तीरथ, वाणी पशन्ती जांण जी ।
चढ़े एक सहस्त्र अजपा पूजा, षोडस पदम् प्रमाण जी । ७ ।

भज मन त्रिवेणी तत सार भाई ।
जहां अग्नि चक्र भृकुटी बसे हो ।
चक्र अग्नि कमल दोय दल, हीर वर्ण प्रकाश जी ।
जहां देव वासु ज्ञान शक्ति, त्रिवेणी तट वास जी ।
जहां गंगा जमुना सरस्वती, तीनों बह उलटी धार जी ॥
गहि सुषम धारा मीन मारग, विषम बेहद बाट जी ।

जहां नुरत नेणा सुरत निरखे, विस्फुलितां ऊद्योत जी ।
एक तेज मांही विश्व दरसे, अनन्त अपरम जोत जी ॥
बहु बीज चमके जोत झिल मिल, दीप माल संजोय जी।
जहां अनन्त शक्ति अरु सूर उडगण, उदय अनुभव होय जी॥
दोय बीज प्रकाश तीरथ, सांपड़े सचियार जी ।
सहस्त्र अजपा जाप पूजा, हंस रे दरबार जी । ८ ।

भज मन चन्द्रमा रो चक्र है लिलाट भाई ।
सुषम सूर शशि मिले, कमल दल बत्तीस जी ।
रंग मोती हल दल कमल दल, बीज एक गणेश जी ।
चन्द्र देवा अमर शक्ति, कला षोडस जाण जी ।
शिव शक्ति मेला द्वादश, आपों आप है भाण जी ।
जहां मानसरोवर अमी जल भर, पीवे नव सचियार जी।
सहस्त्र अजपा जाप पूजा, हंस रे दरबार जी । ९ ।

भज मन मूर्धनी भवन मझार भाई ।
जहां ब्रह्मा का आराधन चक्र है ॥
मूर्धनी दल सहस्त्र फूल्यो, कमल रंग हजार जी ।
कली कली रो रंग न्यारो, सहस्त्र अजपा जाप जी ॥
परम हंस देव विज्ञान शक्ति, जोग जुगत झीणी जोय जी।
जहां दश सहस्त्र इक्कीस पूजा, जाप सम्पूर्ण होय जी ।
नहीं तहां कोई जाप अजपा, मकड़ी तार आधार जी ।
उर्ध धारा मीन मारग जाय कोई सचियार जी । १० ।

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-
श्री सरस्वती प्रकाशन
सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर ✆ 0145-2425505

भज मन तालवे चक्र चढ़ जाय भाई ।
जब तालवे भजन ताला खुले है ।
जल चौसठ हल भल ताल चक्र, कमल वर्ण उद्योत जी।
जहां सोहं देव सिद्धान्त शक्ति, जिह्वा बिन जब होत जी।
जहां परा वाणी सोहं, सोहं सोहं हंसो जाप जी ।
जहां आप मांही अजपा दरशे, सोहं सोहं आप जी । ११ ।

卐

भज मन ब्रह्म चक्र धर ध्यान भाई ।
जहां गिगन गरजे अमीरस सर भरे है ।
जहां गिगन मंडल परा पाटन, अर्ध ऊर्ध श्वास जी ।
जहां दल अठोत्तर कमल भल हल, अनन्त भाण प्रकाश जी।
दश नाद अनहद बजे बहुविधि, साज सुरत से देख जी ।

जहां अखंड प्रकाश उहां मांही, सप्त भवन समाय जी।
प्रथम भवन में भंवर भणके, दूजे शंख सुनाय जी ।
तीजे भवन में मृदंग बाजे, ताल चौथे थाय जी ।
सुण पांचवे घर नाद घण्टा, छटे बीण बजाय जी ।
महराण गर्गे देव दुन्दुभी, मुरली मधुर सुणाय जी ।
उर्ध मुख सरवर अमी भरिया, फूल रहि बनराय जी ।
जहां करत भंवर गुंजार बन बन, अनन्त राग सुहाय जी।
कर नुरत नेवर सुरत निरखे, अंग बिना बहुरूप जी ।
जहां अनन्त रत्न उद्योत झग मग, अजब खेल अनूप जी।
जहां अनन्त जोत प्रकाश रवि, शशि, दीप माल अनेक जी ।
जहां असंख्य उड़गण दीप चहुंदिश, भलके बीज विशेष जी।
बादल बिना ही दामण चमके, अमी झरे एक तार जी।
जहां करत पग बिन नृत्य नारी, घूघरा झणकार जी ।

जहां नागण ऊपर अखे मंडप, जाय बिरला कोय जी ।
जहां जनम मरण न काल झाँपे, अमर जोगी होय जी । १२ ।

भजन मन साखा मंडप मंझार भाई ।
गुल हल चक्र जांमे बसे है ॥

गुल हाल कमल असंख दल, जियां भेद बिरला पाय जी ।
उण मूल दसवें उत्तर दिश, पिछम फूल्यो जाय जी ॥
ईक्कीसवें ब्रह्माण्ड ऊपर, फूल्यो जाय अभंग जी ।
जहां अभय शिव बहे जलहर, अखंड धारा गंग जी ॥
जहां अधर धारा अमी बरसे, मेरु शिखर मंझार जी ।
जहां अलंग धारा झरे अमृत, गगन सर एक सार जी ॥
जहां परम सुन्न विदेह शक्ति, अचरज देव अपार जी ।
आप स्वरूप ऊपर अधर आसण, अलख अखंड अखंड अनूप जी ॥

जहां अजर अमर अरूप अविगत, अधर तख्त हजूर जी ।
घाट अवघट बाट विहंगम, जाय बिरला शूर जी ॥
जहां धजा भंगवी फरहरे, अगम जोत प्रकाश जी ।
जहां बिन शशि अरु सूर उडगण, अनन्त कोटि उजास जी । १३ ।

भज मन परम सुन्न के पार भाई ।
जहां अगम अगोचर गम नहीं है ॥

जहाँ आगम भोम अनूप आसण, विषम बेहद बाट जी ।
नहिं शिखर सागर गगन धरणी, उलट अवघट घाट जी ॥
नहिं पिछम पूरब उत्तर दक्षिण, अर्ध उर्ध नहिं होय जी ।
नहिं ईशान वायव्य अग्नि नेत्रृत्य, बरणिये किम सोय जी ।
जहां नहीं जोत अजोत दर्शे, नहिं निकट नहिं दूर जी ॥
नहीं सेव्रक सेवा और देवा, आपो आप हजूर जी ।

नहिं सूक्ष्म स्थूल अमूल मूला, नहिं आदि नहिं अन्त जी।
नहिं जरा मरण वहां काल झांपे, जहां जाय कोई संत जी ।
जहां कठिण राह अथाह थाहण, क्रोडां में कोय होय जी।
गत गगन पंछी मीन मारग, उलट पहुंचे सोय जी ।
जहां पंथ पग बिन बाट बिहंगम, गांव बिन गम होय जी।
यह उलट धारा मीन पारा, तार मकड़ी होय जी ।
मन पवन और सूरत नुरता, थक्या गगन मंझार जी ।
जहां सूक्ष्म वृत्ति पपील हो, जावे भेटिया दीदार जी ।
जहां जाय सो फिर नहीं आवे, पावे पद निर्वाण जी ।
तेज पुंज सुं हंस गति लहे, कला षोडस भाण जी ।
जहाँ परम पुरुष प्रकाश पुरण, क्या करूं बाखाण जी।
जिनकी एक रोम उजास शोभा, अनन्त शशि अरु भाण जी।
रत्न दीप नक्षत्र दामण, असंख्य जोत अपार जी ।
जहाँ अनन्त कोटि चन्द्र सूरज, अर्ध नक्षत्र विस्तार जी।

संत आगे अनन्त सीधा, क्रोड़ां जुग तक जाण जी ।
अब कलू कर्मी कठण बेड़ी, पूगसी परवाण जी ॥
धन्य 'उदय भारती' गुरुदेव स्वामी, अन्तर्यामी, आप जी।
जिण भेटिया भय दूर हुआ, मिटी त्रिगुण ताप जी ।
गुरु चरण लागा तिमिर भागा, पिछम उगा भाण जी ।
पद कहवे 'आसा भारती', कर जोड़ कमल प्रमाण जी । १४ ।

(१७) लछ प्रमाण

टेर - वीरा म्हारा साधां रा लछ एवा, ज्यांरी कीज्यो शुद्ध मन सेवा।
नैण और बैण शान्ति अति शीतल, चित नित निमण करेवा । १ ।
लख चौरासी जीव दया ज्यांसे, कबहु न बैर करेवा ।
तन मन की सब चोर्‌यां त्यागे, निज गुण ध्यान धरेवा । २ ।

शुद्ध हिरदा, बुद्धि चित्त निर्मल, दुतिया भाव मिटेवा ।
अहंकार रजो, तमो त्यागे, सतोगुण सुरत संजेवा । ३ ।
काम क्रोध मद लोभ मोह तजे, राग द्वेष न करेवा ।
परधन पर निन्दा परिहारो तुम आतम बिरवत लेवा । ४ ।
शील संतोष क्षमा सुखदायक, धीरज धर्म धरेवा ।
मन, बच, काय पांव सतगुरु के, ये सब भेट धरेवा । ५ ।
तन, मन, धन, दारा सुत, दासी, जिन गज बाज घरेवा ।
तन मन, वचन करे सन्तन की, भाव भक्ति निज सेवा । ६ ।
पंछी गिगन गेव गति नित्य प्रति, थिर नहीं बांधे थिरेवा ।
ओदर निमित्त आवे अवनी पर, अर्ध मुख जाय चरेवा । ७ ।
जो जन संगत करे उन्हीं की, नीचा होय ऊंचेवा ।
ज्यों जल नीचा गली गली का, गंग मिल होवे गंग जेवा । ८ ।
कूड़ा, कपटी दुरमति दोषी, याने दूरा करेवा ।
'आशा भारती' मोह बलिहारी बे संत सदा सचेवा । ९ ।

(१८) शिक्षा प्रमाण

टेर – हो जावो साध सुधर जावे काया ।
म्हारा धणियां रो मारग झीणो वो रावल माल ।
माला! ऊंडा ऊंडा नीर अथंग जल ऊंडा ।
तेरुड़ा से थाग कोनी आवे । १ । वो.
माला! दिल मांही कपट कमर मांही छुरियां।
कहना का साध कहावे । २ । वो.
माला! घर मांही आंबो थारे घर में आमलों।
पर घर चूँखण क्यों जावे । ३ । वो.
माला! पसर बेंलड़ी के नाना फल लागे ।
ज्यांने खायां ही मर जावे । ४ । वो.
माला! भाईड़ा री नार आंगणिये ऊभी ।
जीने माता कह बतलावो । ५ । वो.

माला! घर की खांड करकरी लागे ।
चोरी को गुड़ मीठो । ६ । वो.
माला! बिगड़ी नारि को संग नहिं करणो ।
कुसंग लाछण लागे । ७ । वो.
माला! ऊसर खेत बीज नहिं बोणा ।
बीज गांठ को जावे । ८ । वो.
दोय कर जोड़ 'रूपां' राणी बोल्या ।
सत अमरापुर पाया । ९ । वो.

(१९) लछ प्रमाण

टेर - इण मारग गरवा देव हालिया, ओलख वचन अमरापुर जाय॥
कण बिन कूकस पावन संग उड़िया, हीरा मोती महंगा बिकाय।
गाडर जाय गाडा से अड़िया, जूड़ा रो भार सह्यो नहिं जाय । १ ।

हंसा री होड करे नर कागा, उडिया उडिया ब्यांके लारे जाय।
समदां री लहर देखतां ही डरिया, निज मोती व्यांसे चुग्या न जाय । २ ।
करड़ो रूप करे बरसा ले, सीयालो बांसे सह्यो न जाय ।
करणी हीणा क्यों साध कहावे, ज्यांसे गुरां का नेम झेल्या नहिं जाय । ३ ।
समदां की होड करे नाडूल्या, सावण भरे पछे सूका जाय ।
ऐसा नुगरां की भक्ति कांई है, ज्यांसे गुरु गम ज्ञान समायो नहिं जाय । ४ ।
ऊंडा २ नीर अथंग जल ऊंडा तेरूडां से भी तिरयो नहिं जाय।
सांचा जके जुगां जुग सांचा, गुरु जी उतारे पेले पार । ५ ।
चौड़े बणज करे छीलरिया, ओछी पूंछी निठ निठ जाय ।
सत की नाव समुन्द्रां चाले, माल पदार्थ भरिया मांय । ६ ।
ऊंचा ऊंचा महल अजब धर ऊंचा, ओ मारग अमरापुर जाय।
'राजू' भणे रजम से झीणा, सांचा सतवादी पूगेला जाय । ७ ।

(२०) जेसल मालदेवी जी का मेला

टेर - आज रो समैयो म्हारा गुरां पीरां रो धणिया रे मेले आसी ।
अरज करां छां अजमल रा कंवर ने, जेसल माल मेला में मिल जासी ॥

गढ़ मेवा से माल पधार्‍या, कच्छ से जेसल आसी ।
रूपां तोला ज्यांके संग पधारे, चारू मारग में मिल जासी । १ ।
चारू संत मिल्या मारग में, हरष हरष हरषासी ।
गद् गद् वाणी ज्यारे बोले कंठ में, प्रेम तणा झड़ लासी । २ ।
धरण दलीबा ढाल जुगत से, सत की जाजम बिछासी ।
मोती चूर मिठाई बांटे, अमल तासलां गलासी । ३ ।
जेसल मालदे जी अमल आरोगे, नीर तोलां भर ल्यासी ।
भाव कुवा को खारो पाणी, कड़वा नीम कहासी । ४ ।
जाय कुवा पर राणी अलख आरोध्या, सुणज्यो श्याम अविनाशी ।
जुग जुग से थारा चरणां री दासी, मती कराज्यो म्हारी हांसी । ५ ।

उमग्या कुवा अथंग जल भरिया, तोलां के सांची आसी ।
लेय हथेली राणी नीर चाखियो, ज्यां में स्वाद अमी को आसी । ६ ।
जेसल जी तो हंस हंस पीवे, मालदे जी पीके उदासी ।
तोलां की भक्ति सायब लग पहुंची, थारी होवेली रूपां हाँसी । ७ ।
हाथ जोड़ रूपांदे बोल्या, मैं हूं आपरी दासी ।
सांची झूँठी म्हारो सायबो जाणे, म्हारी प्रतिज्ञा अलख निभासी । ८ ।
सूकी लकड़ी रोपी पथर पर, धणी म्हारो हरी करासी ।
घेर घुमेर ज्यांकी हो गई पीपली, ज्यारे हरी हरी तीती आसी । ९ ।
परच्या देख माला पैथरिया, कनक कलश थरपासी ।
हरी शरणे 'हरजी भाटी' बोल्या, म्हारा बना रो बिड़द बंधासी । १० ।

(२१) भक्ति प्रमाण

टेर - लग रही प्यास राम रस पीया, वे भगवान भला भजिया ।
जाग्या भाग नाम ने जाण्या, वे जिवड़ा परवाण हुआ ।
गोपीचन्द भरथरी भजिया, तज्या राज निर्वाण हुआ । १ ।
पापी पिता ऊपन्या पारष, पुत्र हुआ, प्रहलाद जस्या ।
राख्यो बैर शहर सारा से, सन्त मिल्या जद कंवल हंस्या । २ ।
मान गुमान मेट कर मीरा, हरि कारण परवर तज्या ।
विष का प्याला लिया हाथ में, निजपत राखी ज्यांरी राम लज्या । ३ ।
साधां री संगत में रमी रूपादे, शिव मारग श्रृंगार सज्या ।
काढ़ खड़ग भड़ माल कोपिया, थाली में बाग अजब सज्या । ४ ।
भाव भक्ति कबीर जी कमाई, निरगुण तीर शरीर लग्या ।
आया संतां ने तन मन सूंप्या, देही बिच दिवला अखण्ड जग्या । ५ ।
जरणा ने जारो ममता ने मारो, माँहिला में राखो धीरप धजा।
गुरु खीवण जस गावे माली लिखमो, अनुभव हुवा ज्यांने आया मजा । ६ ।

(२२) महाधर्म प्रमाण

टेर - गूंथ ल्यारे मालण सेवरा, आपणाँ धण्यां ने बंधावांला ।
आज तो आलम आया म्हारे पावणा ॥
सरवर पाणी ने मैं गई, एक अचरज म्हे देख्या ।
एक कमल दोय फूलड़ा, जिन पर भंवरा बिलूम्या । १ ।
ठमके चाले राणी सुषमणा, पगल्यां रे पायल बाजे ।
समझ समझ पगल्या धरे, जाणे इन्दर गाजे । २ ।
तेल कढ़ायां में आवटे, जिन में चंदा दरशे ।
दरशे पण दाझे नहीं, झीणी-झीणी बिजली भी चमके । ३ ।
थाल भरयो गज मोतियां, सतगुरु जी रा बाचा ।
'शेख' महाधर्म यों भणे, अब म्हारा सिमरण सांचा । ४ ।

卐

(२३) आगम प्रमाण

टेर - पंडित देवायत दाड़ा दाखिया, सुण पुंजलदे नार ।
आपणा गुरुजी आगम भाकिया झूँठी नहीं है लगार ।
लिखिया भाकिया वे दिन आवसी ॥

पिझम धरा सूं पवन फरुकसी, नदियां खलकेला नीर ।
दल पिछम का आवसी, माँही हड़मत बीर । १ ।
नो नो तणियां रा तम्बू ताणसी, सौ सौ गांवां की सीम।
दल रलियावण लागसी, मांही अर्जुन भीम । २ ।
बुगला गोखां बैठसी, हंसा करे वांरी सेव ।
जाती पर जाती ह्वेला, जात का, जागे निकलंग देव । ३ ।
कड़ियां मृदंग बांधसी, वे नर होसी गेहला ।
गलियां गसियां हेलो पाड़सी, कोई होवो म्हारा चेला । ४ ।

लक्ष्मी लूटे लोगां तणी, ज्यांरी बूँम न भार ।
थर हर काँपे मेदणी, लूटे नगर बजार । ५ ।
पहरा पलटसी पाप रा, अगनी मांगेली भोग ।
कई नर खड़ग समावसी, केई मरसी रोग । ६ ।
नागर बेल के फल लागसी, पीपल के फुलमाल ।
असल शाही जादी जुड़लो पहरे, ये कलू रा सहनाण । ७ ।
शूरा सती समापती, सागे माचेला संग्राम ।
कायम कालंगा ने मारसी, निकलंग धरसी नाम । ८ ।
जोशीड़ां री जनेऊ उतारसी, मन में राखो धीर ।
सतयुग थाप कलू उथापसी कह गया 'देवायत' पीर । ९ ।

(२४) निरंजन प्रमाण

टेर - अलख निरंजन पढ़े पुराण, आवागमन बहुरि नहिं आण ।
त्रिबंधन ओमकारा, असंख जुगां पहले धुंधुकारा ॥

जात न कुली माय नहिं बाप, अलख निरंजन आपो आप । १ ।

नाम ठाम नगरी नहिं गांव, वहां अतीत रहते बिन पांव ।

अपरम्पार आप अलेखा, न कोई वांके रूप न रेखा ।२।

ता दिन कोई खाणी न बाणी, उत्पत्ति प्रलय पवन न पाणी ।

उन दिन रात न देवी न देवा, कौन करो अलख जी री सेवा ।३।

ब्रह्मा विष्णु वेद न कुरान, आखिर हिन्दू न कोई मुसलमान ।

ता दिन आदि अनादि बोलिया, निरंजन निरकर बोलिया ।४।

सन्मुख आप भये स्थूला, आप उपाया सृष्टि का मूला ।

आदि अनादि देवी लिया अवतारा, माया रूप किया विस्तारा ।५।

सत्त रूप आकाश थपाया, चन्दा सूरज दो दीप जोपाया ।

कहो सिद्धां कौन कौन आया, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आया ।६।

पार्वती लक्ष्मी सावित्री, रघुवन्ती, भगवन्ती गायत्री ।

जम घाटी नदी वैतरणी, अमी पीवणी अजरा जरणी ।७।

पड़्या पिण्ड को ले उवरणी, गायत्री माता तिरण तारणी ।

अघोर पिण्ड ने पड़तो राख, अनाद तपस्वी भरसी साख ।८।

नमो गायत्री का सादक्या, नमो अलख चरण का पादक्या ।

चार वेद पांचवीं आत्मा, कहो सिद्धां कौन वेद साथ मा ।९।

ऋग्वेद, यजुर्वेद साथ में, सामवेद अथर्ववेद हाथ में ।

सूक्ष्म वेद आप रखाया, चार वेद ब्रह्मा को सूँपाया ।१०।

ब्रह्माजी गुण स्वरूपी भया है, भली करी स्वामी शास्त्र दिया है।

शिव शक्ति री पूजा रचाया, शिव मार्ग सब ही मन भाया ।११।

पेट मारगी पेट भराण, वो क्या जाने गुरु गम जाण ।

मन से ही बने महाराज, पड़े नारगी आवे ना लाज ।१२।

सोल भाण घर पुत्र जन्मिया, कैसी करणी से अकर्म भया ।

अनन्त माया हम घर है, अनन्त माया ही तुम घर है ।१३।

बेगम नगरी चन्दन कटाया, अज्जबेग से ग्वाल बुलाया ।

बारह वर्ष तक दूध भात खाया, जब जागे जब ऋषि जन आया ।१४।

उनके ज्ञान का परिचय पाया, वो ही ज्ञान मछन्दर समाया ।

गोरख मत करे ज्ञान गुमान मछन्दर पायो वहां ब्रह्म ज्ञान ।१५।

इस विध जोगी जोग सती है, लाख ग्वाल आप ही जती है ।
चार पदार्थ ले पावा पड़िया, हम तुम आय मछन्दर भड़िया । १६ ।
बैठत ऊठत सब ही पेला, आप गुरु फिर आपही चेला ।
अरचे परचे कोठा घड़िया, दशो द्वारा इन्द्रियां जड़ियां । १७ ।
दोहा- मस्तक मूंडिया राज का, ऊपर धरिया हाथ ।
तीन लोक में दत्त है, गोरख मछन्दरनाथ । १८ ।
आवण जावण मैं ही समाऊं, लख चौरासी जीव जगाऊं ।
पढ़ पढ़ कथा रहूं ईकन्त, जरणा जारे पूरा सन्त । १९ ।
मैं जती के घट हूँ, मैं सती के घट हूँ ।
मैं जाण के घट हूँ, मैं अजाण के घट हूँ । २० ।
मैं मन्दिर मजिस्द मठ हूँ, मैं आसन दर्शन षट हूँ ।
मैं ज्ञानी, ध्यानी मठ हूँ, मैं नाटक चेटक नट हूँ । २१ ।
आसन सुमिरे योगी ध्यानी, ब्रह्मा विष्णु शंकर ज्ञानी ।
ब्रह्मा विष्णु महेश महाद, चारों मिलकर लाज्ञो वाद । २२ ।

ब्रह्मा कहे संसार मैं उपाई, विष्णु कहे संसार मैं उपाई ।
शिव कहे संसार मैं उपाई, देवी कहे संसार मैं ऊपाई । २३ ।
आवो ब्रह्मा संसार कैसे उपाई, संसार रचने का भेद बताई ।
जले ब्रह्मा थले ब्रह्मा, पहाड़ ब्रह्मा पर्वत ब्रह्मा । २४ ।
घट घट रोम रोम है ब्रह्मा, सर्व जगह ही जाणी ब्रह्मा ।
पाप छोड़ धर्म की ध्याया, यह सब है ब्रह्मा की माया । २५ ।
ब्रह्मा स्वरूप से काया माया, यों सिद्धां संसार उपाया ।
सत्य स्वरूप सांच बताया, बोलो सांच झूंठ नहिं पाया । २६ ।
विष्णु आप संसार कैसे उपाया, सांची कहो सत्य मुख भाया।
जले विष्णु थले विष्णु, पहाड़ विष्णु पर्वत विष्णु । २७ ।
घट घट रोम रोम है विष्णु, सब जगह ही जानो विष्णु ।
पाप छोड़ धर्म को ध्याया, यों सिद्धां संसार उपाया । २८ ।
महादेव संसार कैसे उपाया, सांची बात बतावो भाया ।
जले महेश देवी थले महेश देवी, पर्वत पहाड़ महेश देवी । २९ ।

थान थान में बले देवो, सब देवों में महेश देवो ।
शिव शक्ति जोड़ा सूं आया, यों सिद्धां संसार बनाया । ३० ।
निरंजन रूप शंखासुर आया, चार वेद ब्रह्मा का चुराया ।
ब्रह्मा ढूंढत शरणें आया, आप स्वामी दातार कहाया । ३१ ।
दीन्हा दान अपूठा लेता, जिनका भला कबहु नहिं होता ।
ब्रह्मा मेरु मंडप रचा कैलाश, कहा छोडी वेदों की आस । ३२ ।
मेरु मण्ड तुम्हारा होई, चार मुख सृष्टि के क्यों नहीं भाई ।
सृष्टि का ब्रह्मा तुम लखा न भेव, सृष्टि का कर्ता और ही देव । ३३ ।
विष्णु उपाया मेरु मण्ड कैलास, ब्रह्मा के वेदों की करो तलाश ।
मेरु मण्ड तुम्हारा होई, सहस्त्र भुजा सृष्टि के क्यों नहिं भाई । ३४ ।
विष्णु सृष्टि का लखा न भेव, सृष्टि का कर्त्ता और ही है देव।
महेश देवी उपाया मण्ड कैलाश, ब्रह्मा के वेदों की करो तलाश । ३५ ।
मेरु मण्ड तुम्हारा होई, पांच मुख अष्ट भुजा दीखे न कोई।
आप सृष्टि का लखा न भेव, सृष्टि का कर्ता और ही है देव । ३६ ।

विष्णु ने नाक से लकीर कडावे, दश अवतार का वचन दिरावे।
ब्रह्मा को वेदों का सार बतावे, सात लकीर नाम सूं कडावे । ३७ ।
दश अवतार का बाचा दीन्हा, जल में रूप मच्छ का कीन्हा।
शंखासुर को कियो विनाश, ब्रह्मा का वेद लाया खाश । ३८ ।
चारों वेद ब्रह्मा जी पढ़िया, ब्रह्मा उठ कर पावां पड़िया ।
निरंजन स्वरूपी यों उठ बोले, महेश देवी ध्यान में डोले । ३९ ।
महेश देवी दोनों जावो, अलख चरण की खबर्यां लावो ।
महेश देवी पाताल में जावे, बासक नाग रास्ता में आवे । ४० ।
सहस्त्र फणां से झाट दिरावे, आप बासक शरण बचावे ।
यो कियो नारायण कहावे, जीसूं सात पातालां जावे । ४१ ।
वहां निरंजन का चरण कहावे, वां चरणां की खबर मंगावे।
सुनो महेश देवी सांची बात, जलोबम्ब मिलसी आगे जात । ४२ ।
नो कुलो नाग आगे आवे, आतां जातां वो खा जावे ।
कौन कहसी तुम्हारी बात, रास्ता में होसी अपघात । ४३ ।

जावो पाछा हमारी दुआ, तुम्हारी दुआ गुरु की दुआ ।
सही सही सब सांची कहना, झूठ को छोड़ सांच को लेना । ४४ ।
अनेक योद्धा पच पच गया, अलख चरण का पार नहीं लिया।
पाछा फिर कर आसण आया, उनका कोई पार नहीं पाया । ४५ ।
जैसे तैसे सांच ही बोल्या, अन्तर ऊपर पाप सब खोल्या ।
इक्कीसवें ब्रह्माण्ड ब्रह्मा जावो, अलख मुकुट की खबर्यां लावो । ४६ ।
ब्रह्मा उठ ब्रह्माण्ड में जावे, आगे केतकी यों बतलावे ।
काग रिषी जी यों समझावे, गायत्री पूरो भेद बतावे । ४७ ।
कहो ब्रह्मा जी कहां सिधाओ, होवे जैसी सांची बतावो ।
मैं इक्कीसवे ब्रह्माण्ड जाऊं, अलख मुकुट की खबर्या लाऊं । ४८ ।
सुनो ब्रह्मा जी बात हमारी, आगे बैठा अनन्त अवतारी ।
सात क्रोड़ों शम्भू ध्यान लगावे, नो क्रोड़ दुर्गा आरती गावे । ४९ ।
क्रोड़ों ब्रह्मा, वेद बांचे, कोई न पूगा अलख के ढांचे ।
पाछा जावो साख म्हे देवां, केतकी काग रिषी गायत्री केवां । ५० ।

ब्रह्मा झूंठा मता उपाया, चारों मिलकर पाछा आया ।
दुवा धार दराई आप, भांति भांति का दिया श्राप । ५१ ।
जावो केतकी तू नगद हो जाई, जावो काग जी मैलो खाई।
जावो ब्रह्मा तू होवो कसाई, कपिला गाय का गला कटाई । ५२ ।
आखिर हिन्दू मुसलमानी आई, मक्का में देवी अवतार धराई ।
अल्ला मुहम्मदी तुर्क कहावो, दश पीरां की साख भरावो । ५३ ।
दश निवाला निवलो, दश प्याला प्यालो ।
दश घोड़ा घोड़ो, दश जोड़ा जोड़ो । ५४ ।
दश अरबा अरबो, दश खरबा खरबो
दश रोजा रोजो, दश रोठा रोठो । ५५ ।
जो नर बाँट चूँट कर खावें, वो प्राणी अमरापुर को जावे ।
एतो धरती एता आकाश, अलख पुरुष का एता निवास । ५६ ।
पिण्ड ब्रह्माण्ड एता विस्तार, काया नगर में जाणो सार ।
चार पोल चौरासी चौहटा, काया माया जीव सोहता । ५७ ।

पहले पत्तर मांडो खास, अलख पुरुष को पूर्ण वास ।
खास राखी त्रिभुवन राय, पत्तर राखो रहमान राय । ५८ ।
सब ही नरहरी का महमान, अल्ला अलख एक ही ज्ञान ।
नान्ही नगरी नाद बाजे, साधा के शिर छत्तर छाजे । ५९ ।
नमस्कार है दोय कर जोड़, वो है शिर माथे का मोड़ ।
नमस्कार नहीं तो हे तल्लाक, साध फकीर मिलेगा लाख । ६० ।
अतीत को माल अतीत खाय, दूजो खाय नारगी जाय ।
धरा आमर काया विस्तारा, अलख निरंजन व्यापक [illegible] । ६१ ।
अलख निरंजन पढ़े पुराणा, आवगमन बहुरि नांही आणा ।
अलख निरंजन आपों आप, नरहर जपे कटे सब पाप । ६२ ।
सिद्ध 'रामदेव' सत कर भाषे, अपणा जीवां न शरणे राखे ।
'देवायत पंवार', धारुजी साखी, माता 'देवु' बचन मुख भाखी । ६३ ।

(२५) मूलारम्भ प्रमाण

पंडित हुआ कि पहले पिंड थरपिया, जिण पाछें ब्रह्मा विष्णु महेश हुया ।
आद शक्ति को आलम थरपिया, जिण पाछे संसार किया ।
असंग जुगां निर्बन्धन होता, सुन्न में बैठा सोच किया ।
सुरनर सकल वेद नहिं दानव, आलम आपों आप हुया । १ ।
बिना संसार कैसो विस्तारो, बिन माया निज नाम लिया ।
अनघड़ विधाता घट में निरखो, हरि परमाला जन्म लिया । २ ।
स्वामी सीं [illegible] बांधों, मन में माणक महर किया ।
हुक्मा हाजिर आण प्रकाजी, हरि जतन सूं हेत किया । ३ ।
मन में विचार तार तन तारी, परिहर फिकर दूर किया ।
असंग जुग आगे नहिं होता, अभय रंग आलम आप किया । ४ ।
प्रचंड देही पिंड वे धारी, अण्डा सूं असमान किया ।
आलम मोड़ अपर बली उठिया, खण्ड फोड़ ब्रह्माण्ड किया । ५ ।

धरियो ध्यान मान मन मोटे, मन में मोटा मता थया ।
पाट पीताम्बर धरती थापी आलमजी ओम्कार भया । ६ ।
हुक्में शक्ति कियो हुंकारो, असमाने आवाज हुया ।
धुन्धुकार तार तन देवी, जोजन पहले केम किया । ७ ।
मरूं न जीऊं डरूं न ब्याहूं, सुन्न मंडल में दरश दिया ।
मैं मम्माई जुगरी मांडण, अटल जात विश्राम थया । ८ ।
अन्न न ओषध पवन न पाणी, बिन बासे कहां वास किया ।
तन धारी अनन्त जुग आडा, पारा किण विध जीव रिया । ९ ।
थे ऊंकार कार धरी आडी, थे म्हे सुन्न म [illegible] ।
शंकर बात शक्ति ने पूछे, ठाकर ठीकर ठाय लिया । १० ।
कहे जग जरणी मैं भवभरणी, इण विधि जग में जीव रिया।
तुम धन धारी मैं फल त्यागी, तुम जाग्या हम जाग रिया । ११ ।
तुम सुरत समाली मैं बात विचारी, थां पाछे मंडाण किया ।
अलगी नेडी संडप हेरी, निराकार थाने पार किया । १२ ।

प्रथम पाट स्वामी प्रकाशे, देवी आसण ठाम किया ।
नेड़ी रही नजर से निरमल, रूम रूम में राच लिया । १३ ।
तत् तासीर से सुरता चाली, सहज समाधि में सेव किया ।
पुत्री हुई पिंड सूं पैदा, तुम्हारा हमसे भेद भया । १४ ।
सरवर तरुवर मांड खलक ने, सुंगरी पैदा संसार किया ।
सुमेरु तंत सुत सेवा कर, सात समुन्दर द्वीप थया । १५ ।
गिरी मेसू गोविन्दगढ़ थाप्यो, बिना थंभ असमान थया ।
मैं जाया जग मुझ में आया, मैं हुलराया हेत हिता । १६ ।
थे बलवंता जग बैठो कीन्हों, म्हारा म्हारा में गर्क किया ।
बीड़ो श्याम शक्ति ने दीन्हों, निरन्जन बांध्या नित नया । १७ ।
जुग पैदाश करूं मैं जाऊ, देखूं देवी थे रात किया ।
पुत्री बात पिता ने दाखे, जत मत से जग जणिया इयां । १८ ।
इतरो वचत हमारो राखो, मैं मांगू सो आप दिया ।
देवी चाहे मन शुद्ध मांगो, हमें कोई मत दोष दिया । १९ ।

दया विचार तुम्हारे दिश देखूं, देखूं देवी तेरा तंत् किया ।
तत्कर तीन कर त्रिभण, बगत बगत कर तीन भया । २० ।
ब्रह्मा विष्णु महेश कर तीनों, तीन लोक स्थान थया ।
बिरल जोत में विष्णु उपाया, मस्तक मांही महेश भया । २१ ।
जल परमल ब्रह्मा प्रकाश्या, हरनर निर्मल तीन किया ।
किया पुरुष करणी रा पूरा, धीरज मांही ध्यान थया । २२ ।
माला झाल मुकुट पर बैठा, तुम हमने पैदाश किया ।
अमरापुर सूं अलख भेलिया, मात लोक में मण्डप किया । २३ ।
ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव शामिल, थापण उथापण थम्भ थया ।
पांये लाग पहिला गुरु हरिजन, पूरा हरिजन हुक्म किया । २४ ।
मनां विचार माणकां मूंगा, जोग जुगत थिर थाप लिया ।
आद शक्ति आसण से ऊठी, पाट बिराज्या पण्डित रिया । २५ ।
हासल हुक्म बिलूम्यो आई, सिद्ध साधक ने फिर जग जिया।
प्रवृत्त हुई जग में प्रकाशो, नृपत नैणा निरख लिया । २६ ।

जाप जपंता जोगी दीठा, जिण दिश देवी पांव दिया ।
ब्रह्मा विष्णु विगत बतलावे, मैं बरनी थे वर किया । २७ ।
मो बरियां होसी बैल बधारो, मेले आई अलख मया ।
तुम जग जरणी जोगण माया, पूत तुम्हारा पती हुआ । २८ ।
सेवा थारा चरण शरण बर मांही, तुम हमने पैदास किया ।
बरस्यो तो थाने वर देस्यूं, नहीं बरस्यो तो भस्म भया । २९ ।
कैसे मैं संसार उपावुं, पैदा किया पिंड अलप गया ।
तू मेरी मैया में तेरा जाया, भोग विलास तो नहीं भया । ३० ।
ब्रह्मा विष्णु इसी विध दाखे, जो चाहे सो तंत किया ।
ब्रह्मा विष्णु भस्म कर भागी, सरे देख शंकर नमिया । ३१ ।
सांचा कौल समाया सांई, देवी सूं सत कौल किया ।
बर पैदा कर बाचा दीन्हा, काचा कुलीन ने दूर किया । ३२ ।
सांचा कौल स्वामी बर बांध्या, बाचा ले हर बना लिया ।
और कर काया और कर माया, देह पलट ने देवो दिया । ३३ ।

सुरता पलट और कर शौभा, तो परणीजूं मैं बींद भया ।
परबत फिर पारबती आई, आगे ईश्वर आरम किया । ३४ ।
अमृत छिड़क ओपमा कीन्ही, नृपत कर पैदाश किया ।
लखण बत्तीसां लक्ष्मी जागी, पारवती प्रमाण किया । ३५ ।
शील संतोष सिद्ध सावित्री तीनों शक्तियां तरह किया ।
किया पुरुष करणी रा पूरा, महादेव री अधिक मया । ३६ ।
ब्रह्मा विष्णु महेश हर माया, थापण उथापण थम्भ थया ।
आलस मोड़ निरंतर उठिया, तामस ताता बहुत हिया । ३७ ।
सेजां मांही सुख सूं सूता, जरा पलक जागी सुखिया ।
शक्ति को सिद्ध ने बतलाया, नाकारे ब्रह्मा नसिया । ३८ ।
कर्ता चैन काम उपाया, गले घाल बाथां मिलिया ।
विन विस्तारा परणिया ब्रह्मा सावित्री सूं संग करिया । ३९ ।
उत्पत्ति नृपत अनन्त उपाई, बड़ा पुरुष सूं बेद लिया ।
वर्ण कला विष्णु जी लूंब्या, लक्ष्मी सूं संजोग किया । ४० ।

तोरण तिलक झलमले झमके, ठाकुर थिर कर थाय रिया ।
शिखर सेवरे शिव परणिया, करूणा जरणा दूर किया । ४१ ।
पारवती से हुआ पसारा, खलक उपायो आद मया ।
लाछां लक्ष्मी सूं विष्णु बिलूंम्या, सिद्धा शक्ति सूं ब्रह्मा भया । ४२ ।
झटा शंकर पारवती जीती, दीन विचार्यो देव दिया ।
सात सहेली झूले झूलरे, वर त्रिया ले बर बरिया । ४३ ।
पारबती सूं पाय इशारो, घर हर दुनिया घर करिया ।
अनन्त करोड़ परणिया पाछे, जोग भोग संजोग थया । ४४ ।
खुदियारी औषध अन्न उपजायो, काशब कोरम इण्ड किया।
पहली पावन प्रगटया प्राणी, जरा खान ने जीव किया । ४५ ।
जल सूं जीव पावन री माया, पावन हालिया प्रकट भया ।
अष्ट कुली पर्वत नाग नो कुली, नो लख तारा गवन किया । ४६ ।
सुर तेसीस श्री रंग शामिल, छप्पन क्रोड़ मेघमाल भया ।
बारा मेघ रतन कर चौदह, शब्द रतन झड़ लाग रिया । ४७ ।

चौदह रतन मणी कर मस्तक, आ रचना करतार किया ।
अटल जमीं अटल असमाना, सातों समुन्दर अटल किया । ४८ ।
अटल पावन पाणी की रचना, चन्दा सूरज चमक रिया ।
अनन्त सिद्ध नौ नाथ उपाया, जप तप तपसी तेज किया । ४९ ।
शुकर कर सती साध कर जती, गोरख जोगी अमर किया ।
षट् दर्शन छत्तीसों पाखंड, धीरज धारण ध्यान किया । ५० ।
आप आपरे पंथ पधारे, वानो चढ़ियां बेल बधिया ।
नौ लख जीव उपाया जल में, दश लख पंछी पखेरु हिया । ५१ ।
ग्यारा लाख कीट भृंग उपजाया, बीस लाख स्थावर थया ।
तीस लाख पशु परवार, साहन वाहन धर्म थया । ५२ ।
चार लाख मानुष जन मोटो, लाख चौरासी जीव किया ।
जल थल कंवल कंवल शिर बासक, जिण शिर धवले पांव धरिया । ५३ ।
धवल शिर सींग सींग शिर धरती धर बोझो खांदे हलियां ।
परणी पीहर पेखे परवाना, धन्धा मांही खलक गया । ५४ ।

जीव नींव सब काची माया, नर-नारी मिल आरम किया । ५५ ।
अनन्त सन्ता रे चरणे शरणे, गुरु पीरां रा नाम लिया ।
''हरजी'' नित पत करे निवेड़ा, अलख पुरुष उपदेश किया । ५६ ।

(२६) मूलारम्भ प्रमाण

पारब्रह्म अविनाशी निरंजन, वां गुरां रा कुल भेद करे ।
धर औंकार मांडियो आरम, चित मन आतम पांच सरे । टेर ।
माता पिता धातु बिन उपन्या, जात न पांत न वर्ण धरे ।
अनन्त जुगां पहले परमेश्वर, आंद पुरुष आपों आप सरे । १ ।
धुन कर ध्यान जतन जड़ बांधी, जल थल प्रकट आप करे ।
कोरम होय मगर मछ मथिया, मूलारम्भ की नींव धरे । २ ।
पावन पच्चास इंगला पिंगला, नो खंड पृथ्वी और अनेक ।
नो निधि भंडारे होय बैठा, स्वामी त्रिभुवन जाणो एक । ३ ।

मेखली में मेरु मुकुट में गंगा, चन्दा सूरज लिलाटा टेक।
नो कुल नाग पियालां थाप्या, हेटां धवल शिर राई रेक ।४।
धरती मृगछाला गगन गला कंथा, सात सायर ने लंगोट करे।
केता झड़े ऊपने केता उथल पुथल बाबो आप धरे ।५।
आप अमर दुनिया दल खाली, आप रा आरम होवे अनेक।
ओलख करे आधार राज रे, जस कीरत सूं मारे मेक ।६।
माहिला रा मंत पारबती कीन्हा, जांचूं पुरुष ज्यारे आरम एक।
माता पिता बिना तीनू जाणो, पुरुष उपन्य आप अलेख ।७।
नाथ सुनाथ संपूरण स्वामी, अनन्त जुगां री राखी टेक ।
''जयमल'' मेघ मुक्त रा मारग, नर नारी लाजिया राखो भेक ।८।

-: पुस्तके मिलने अथवा मंगवाने का पता :-
श्री सरस्वती प्रकाशन
सैन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर ✆ 0145-2425505

आदि महाधर्म

सचिया धर्म आद रा मेला, मकर तणा पंथ पछे हुआ ॥ टेर ॥
असंग जुगां पहले आरम रचिया, ओम्कार से रणुकार हुया।
मुख में उठ मम्माई बोली भंवर गुफा भणकार भया ।१।
शक्ति ने एक पंथ उपाया, अभी तणा कुंवारा भया ।
इण्ड फोड़ ब्रह्माण्डरचाया धरा आमर दाता जोड़ लिया ।२।
जागत बैठत सोवत नहिं लागे, कोन पुरुष का नेम लिया ।
हाथां री हथेली रा दाता वचन पालिया, ब्रह्मा विष्णु महेश भया ।३।
पांच सन्त मिल कांकण बांधिया, सही भजन रा नेम लिया ।
अलख निरन्जन घट में बैठा, पहली नेम महादेव लिया ।४।
लिंग भंग दो गोती कहाया, सतबादी साधू साध रिया ।
भंग से भंगवा तुरत उपाया, पहली भेक भगवान लिया ।५।
आद मंडाण मूल से मांडिया, काना सुणे ज्यांरा पाप झड़े ।
मछंदर प्रताण जति गौरख बोले एक मन ध्यावे ज्यांरा काज सरे ।६।

नेतलदे को सपनो

सुणो सपने री बात खांवदां, चरण कमल में ध्यान धरे ।
सन्त रिषीश्वर सन्त महात्मा, डाली आगे सब निवण करे । टेर ।
मूल कमल गनपति बिराजे, रिद्धि सिद्धि चंवर करे ।
पहली पेड़ी आप बिराजे, मस्तक मणि पर छत्र फिरे । १ ।
बीज थावर रा आंरम रचिया, माणक मोत्यां कलश भरे ।
आप अलख जी पाट बिराजे, रतन कटोरां भाव फिरे । २ ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, चारूं कूँटां ध्यान धरे ।
कल्प वृक्ष और कामधेनु, कुबेर जी भंडार भरे । ३ ।
जुड़ी कनातां हीरा मोती, रेशम डोरी मंडप सरे ।
सिंह चढ़ी हिंगलाज पधारो, आप अलख रा नेम धरे । ४ ।
वीणा वजावत नारद आया, सब रागों में राग सरे ।
ढांक डमरू मृदंग बाजे, महाशक्ति अरदाश करे । ५ ।
आप अलख रा नेम हिलाया, निकलंग होकर साख भरे ।
अनुभव बाणीं सुरसत बोले, नेतल नैणा नीर झरे । ६ ।
पचरंग पाग केशरिया जामा, नीला रा असवार फिरे ।
गले फेफ री माला सोहे, माणक मोती प्रकाश करे । ७ ।
पहलाद, हरिचन्द, पांडू, बलिचन्द, रतनां तारां ध्यान धरे ।
कुन्ती, द्रोपदी, संजावत रानी, पल पल हाजिर अरज करे । ८ ।
शंख घढ़ियावल नोबत बाजे, झालरियां झणकार करे ।
मृदंग ताल पखावज बाजे, राग छतीसों राग सरे । ९ ।
उण सत्संग री शोभा भारी, नमो नमो सब साध करे ।
असंग जुगां रा सन्त बिराज्या, सतरी संगत भाव फिरे । १० ।
शिव शक्ति जोड़ा से जूप्या, नर निकलंग री आण फिरे ।
सपन बधावो 'नेतल' गायो, श्री रामदेवजी साख भरे । ११ ।

(२७) शिक्षा प्रमाण

टेर - ए म्हारी सुरता, आया संतां रा लीजे वारणा ।
ज्याने दीजे दीज्ये आदर भाव ।
आज म्हारा भाईड़ा, मिले तो पड़दा खोलणा ॥
ए म्हारी सुरता, नाडा समन्दर री शोभा न करे ।
ज्यां में भरियो अथंग जल नीर । १ ।
ए म्हारी सुरता, ओछी संगत रो कांई बैठणो ।
ज्यामें घटे तुम्हारो मान । २ ।
ए म्हारी सुरता, संगत करणी ये पूरा साध री ।
ज्यां से बढ़े तुम्हारो मान । ३ ।
ए म्हारी सुरता, साधू साधू के घणो आंतरो ।
कोई सन्त कोई थूल । ४ ।

ए म्हारी सुरता, कुवा में बाला आंतरो ।
ज्यां में खारी मीठी सीर । ५ ।
ए म्हारी सुरता, कुवा कुवा की छाया बीच में ।
ज्यां में मोती भरणो नीर । ६ ।
ए म्हारी सुरता, कागा कोयल के बाला आंतरो ।
कोयल बोले अमृत बैण । ७ ।
ए म्हारी सुरता, बाई ''रूपादे'' री बीनती ।
ज्यां रो सत अमरापुर बास । ८ ।

(२८) अलख प्रमाण

टेर - अजमर घर अवतार हालो, किया उत्तम काम रामा ।
देशा देलम पाट मुरधर, धरा पिछम धाम ॥
ज्यां घर बसे राजा राम ।
पहल प्रथम आद पूजा, जोत में प्रकाश हो ।
जाग शक्ति जोग माया, तीनों देव थारी लार हो । १ ।

ग्वालिया संग रम्या गोकुल, मुखां मुरली हाथ हो।
आंगली पर गिरवर धार्यो, कंश मार्या काम हो । २ ।
बाणियो व्योपार हाल्यों, कुटम सारो लार हो ।
हीरा मोती माणक भरिया, भरिया माला माल हो । ३ ।
गगन गरजे नाव फाटी, फाटग्या पिंयाल हो ।
ऊठो बणिया अलख सिमरो, डूबते ह्यायाण हो । ४ ।
नाव रा खेवणिया कूड़ा, रजा कोटि राम हो ।
बोयता री जहाज तारी, डूबते प्रमाण हो । ५ ।
आप कच्छा आप मच्छा, आप पाना फूल हो ।
इन्द्र पूजा वहां चढ़े, सेंत उगिया सुर हो । ६ ।
ऊभी गत थारी बाट जावे, पारख्या प्रमाण हो ।
राणी नेतल नेम झेल्या, अलख रे दरबार हो । ७ ।
चरण धोकूँ पाट पूजूँ, पूजूँ अलख रा पांव हो ।
बोल्या 'हरजी' बड़ा बलवन्त, अलख रे प्रमाण हो । ८ ।

(२९) दश अवतार

आयो म्हारो राम अवतारी, अल्ला निरंजन अभय निरंजन ।
दुख दालिद्र सब भय भंजन, सबका सज्जन, निरंजन बाबो निरधारी । टेर।
कच्छ मच्छ हुआ बराह अवतारी, वेद किताब ले आज्ञाकारी ।
शंखासुर मारा वेद उबारा भला चितार्या इण कारण हुआ आकारी । १ ।
नृसिंहा बंका, भक्तप्रह्लाद लगाया डंका, खंभ फाण हरणाकुश मारा बलकारी ।
हरणाकुश मारा, प्रहलाद उबारा, भक्ति सायब ने है प्यारी । २ ।
परशुराम अवतार धारिया डूँडा राक्षस आप मारिया नक्षत्री करदी सारी
दशरथ घर आया, राम कहाया पाला फिरिया रावण मार्यो बलकारी । ३ ।
गोकुल आया नंद खिलाया कंश मारिया बृज उबारिया गिरवर धार्योगिरधारी
ग्वाल बाल संग गाय चराई, रास रचाई नाग नाथियो थे भारी । ४ ।
बावन रूपी श्याम स्वरुपी, बड़ा अरुपी जांचण चाल्या बलधारी ।
कंसीधर झाड़्या, कंस पछाड़्या, राक्षस मार्या अति भारी । ५ ।

अधर जाड़ी, बकासुर की चोंच फाड़ी खेल खिलैया खिल्लारी।
बल ने जाच्या पाल्या बाचा, पीठ नपाई पण धारी ।६।
अतरी कर अजमल घर आया, रामदे कहाया, भौम बसाई थे भारी।
दुष्ट हटाया, परच्यो पाया रुणीजो बसाया, निवा दीन्हीं दुनिया सारी ।७।
नीवूँ नाथां बारा पंथा चोबीसों कंथा, वेद शास्त्र सारी बातां थे सारी।
जहां देखूँ जहां थे ही थे हो, जश गावे ''देवसी'' माली ।८।

(३०) अवतार महिमा

टेर - खमा खमा महाराज राज ने, घणी खमा तंवरां रा तिलक ने,
पृथ्वी का रामा थाने जोर खमा ॥
दोनों पीर रामा सांजोड़े पोढ़िया, पवन हिंडोले गुरां शील समा।
पिता वचन पहलोड़ा जाणिया, इसड़ा अरथ नहीं आवे हमा ।१।
घर अजमल के करी ओलखाई, ज्यांरे मांहिला में भरम धोका धणा।
घर अजमल जीरे भाण ऊगिया, ऐसी ऐसी रमता राम रमा ।२।

दोनों पीर सांजोड़े खेलिया, माखन लूटे गुरां मार समा ।
आँगणे खेले बालों अमृत बोले, ज्यांरे पगां घूघरा रमा झमा ।३।
बालो भालो खेले अबेलो, भूख न तिरषा तन्त तमा ।
राक्षस मार रामा आया अबेले, खलक बंधावो माजी इष्ट जमा ।४।
पिंगला सा पांव रामा आंगणे ओपे, कूँ कूँ पगल्या मंडत ममा।
कदम चक्र दश केशर टीकी, ऐसी २ रमता राम रमा ।५।
सात सहेली मिल माजी बन हेरे, उत्तर सिंगासण शील समा ।
धूजे म्हारा प्राण धड़के म्हारी छतियां, फिरूं बनी में भवन बमा ।६।
घोड़े चढ़िया दुश्मन दलिया, देब कला मांही अमल जमा ।
पांचू पीर मक्का से आया, अलेख परच्चा खलक खमा ।७।
मगर पच्चीसी में पीर पेगम्बर, धन्य आलम अवतार रमा ।
हरि शरणे भाटी 'हरीनन्द' बोल्या, दुख दारिद्र दूर ममा ।८।

आरती

टेर - सैयां आरती उतारूं गरबा देव निरंजन की ।
पल पल वारूं मेरे प्रान प्रान प्रान प्रान । टेर ।
सैयां अधर सिंहासन धणी म्हारो बिराजिया ।
पल पल दर्शन होय होय होय होय । १ ।
सैयां पांच पचीस मिल बाती करी ।
जोय दिवा की लोय लोय लोय लोय । २ ।
सैयां अधर टकोरा धणी रे घुर रिया ।
राग छत्तीसों होय होय होय होय । ३ ।
सैयां गंगा जमना बहवे सुरसती ।
त्रिवेणी तट न्हाय न्हाय न्हाय न्हाय । ४ ।
सैयां कालू के शरणे 'दुरगो' बोलिया ।
''नगजी'' ब्राह्मण गुण गाय गाय गाय गाय ।५।

आरती

टेर - थोड़ी महर करो तो अरज मेरी दाखां ।
हां ये सैयां म्हारो सतगुरु श्याम मनावां आपां दरसण पावां।
एवा एवा शाह निजारी है, हरष हरष गुण गावां करां आरती।
अजमाल निरंजन आरती तंवरां रा तिलक रामा आरती, अवतार बधावां।
आधु आरोधे श्याम सतगुरु ने असूर करे मोसे बातां । १ ।
खंड खंड चेतो असुर करो सीधा, असुरां का करो निवेड़ा । २ ।
मुंवा ने जिवावो जीवतां ने त्यारो, जहर अमी कर जारो । ३ ।
खाती ''बगसो'' भणे राज रे शरणे, चाकर चरण हजूरा । ४ ।

आरती

टेर - ओम् जै जै श्री गुरुदेव, गुरांजी, थांकी आनन्दी मूरती ।
दया धर्म पर वाण, सांच धर्म पर वाण, दिलभर करूं आरती।

साधो भाई काया को थाल मंजाय, जिसमें पांच पचीसों बाती।
तन दिवलो मन लोय बिना ही तेल बाती । १ ।
साधो भाई पीवो पीवो अमृत छान, स्नान करती मैं तो नितव्रती।
अष्ट कमल के मायं, सुरसत पद रटती । २ ।
साधो भाई घंटा बाजे अनहद नाद, सुरत नुरत दोनों रहवे लपटी।
त्रिवेणी निज धाम, तीनों धारा बहवे उलटी । ३ ।
गिगन मंडल का खुलग्या किवाड़, सत सिमरण की झड़ लगती।
छः सौ इक्कीस हजार, ओहं सोहं रटती । ४ ।
आठ पहर दिन रात, सुमिरण झड़ लाग्यो दिन राती ।
अगर कपूर संजोय, पद्‌माराम करे आरती । ५ ।

आरती

टेर - ओ जय अलेख अविनाशी, प्रभु जय अलेख अविनाशी ।
दीन दयाल दया के सागर, मेटो यम फांसी । टेर ।
अलख निरंजन, भव दुःख भंजन, भक्तन प्रतिपाला ।
सत् चित् आनन्द अगम अगोचर, सब घट उजियारा । १ ।
अलख खलक में खलक अलख में तुम सब जग छाया।
सब में व्यापक सबसे न्यारा है अदभुत माया । २ ।
शेष महेश गनेश रटें सब सुरनर मुनि ध्यावे ।
शिव सनकादिक नारद शारद, महिमा सब गावे । ३ ।
पंथ गरंथ अरु संत पुकारे, पार न कोई पाया ।
वेद पुरान कुरान थके सब भिन्न भिन्न कर गाया । ४ ।
भक्त तुम्हारे अरज गुजारे, विनती सुन लीज्यो ।
अवगुण टारो कष्ट निवारो सुख सम्पत दीज्यो । ५ ।
निशदिन ध्यावे आरती गावे, मन वांछित फल पावे ।
'गोकुलदासा' चरन निवासा, पल पल गुण गावे । ६ ।

प्रार्थना

अजमाल पुत्रं रामदेवं भैरव राक्षस विध्वंष्कं ।
श्री कृष्ण उप अवतारं भव त्राप हरणं, इष्ट देव मम वन्दनम्।
श्री रामदेव कृपालु भज मन, हरण भव भय दारुणं ।
अजमाल घर अवतार आप, संसार सागर सारणं ।
कर्ण कुण्डल अश्व वाहन, पुष्पमाल गल शोभितं ।
कर शेष आयुध पीत जामा, हरजी चंवर ढुलावितं ।
भव कष्ट भंजन भक्त रंजन भैरव दैत्य निकंदनं ।
भज दीन बंधु तंवर भूषण, बारम्बार निवेदनं ।
जगत पाल कृपाल आनन्द, कंद अजमल नन्दनं ।
शक्ति सागर गुण उजागर, अलख आप निरंजनं ।
त्रय ताप टारन करत दर्शन, चरण प्रतिदिन पूजितं ।
मम दिव्य दृष्टि प्रदान करु, रोगादि दुःख दल गंजनं ।

इति श्री चौबीस प्रमाण समाप्त

स्वामी गोकुलदास जी का शास्त्र

बाबा रामदेव पुराण

(लेखक : स्वामी गोकुलदास जी महाराज डूमाड़ा)

इस पुस्तक में बाबा रामदेवजी के मुख से कहे हुये प्रामाणिक असली चौबीस प्रमाण, अलख उपासना, जिसमें कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड, ज्योतिष, सम्बन्धी जानकारी है तथा भजनमाला, भजन विलास जिसमें आरोधी भजन दिये गये है । धारूमाल रूपांदे की बड़ी बेल तथा बाबा रामदेव का ब्यावला, पड़दा प्रमाण जिसमें रामदेव जी व डाली बाई की समाधी लेने की कथा है व रामदेव जी महाराज के उपासकों के लाभार्थ नियम पूर्वक जमा जगाने की सुन्दर विधि, महिना, तिथी, वार, समय आदि सब अच्छी तरह बतलाया है । इसमें समय-समय पर पठन करने योग्य जप-जाप, मन्त्र गायत्री आदि भी दिये है ।

इस पुराण में बाबा रामदेव के सम्पूर्ण लीला व चरित्र आदि का अनूठा वर्णन है अतः यह पुराण बहुत ही पूजनीय है । इसको सभी बाबा के भक्तों को घर पर रखकर प्रतिदिन पूजा-पाठ कर माथा टेकना चाहिये ।

नोट : पुस्तके मंगवाने के लिए पत्र निम्न पते पर भेजे

श्री सरस्वती प्रकाशन

सेन्ट्रल बैंक के पीछे, चूड़ी बाजार, अजमेर © 0145-2425505